B-1

गीता दैनन्दिनी

ाक, दानेज र् ख, रख प्रभुमें मन सयाग ॥
वर्णाश्रम, रखकर मनमें शुचि उत्साह ।
न्ति दानकर सबका हरण करो उर-दाह ॥
करो अहिंसक, छोड़ो सभी जीभके स्वाद ।
प्रतिदिन तुम, मिट जायें सब शोक-विषाद॥
सेवासे सुख पहुँचाओ, दो सम्मान ।
ा-गुरु-सुरको अपने मनमें ईश्वर जान ॥
्त्य हरि-पूजन, करो नित्य सात्त्विक सत्सङ्ग।
-आतुर-सेवा सहज बना लो अपने अङ्ग ॥
ो निरन्तर तुम अनन्य ममता-अनुराग ।
न्य धाममें, बनकर हरि-सेवक बड़भाग ॥

—...कर'

गीतादैनन्दिनी

पूरे वर्षमें सम्पूर्ण गीताका पाठ और मनन करनेकी दैनिक चर्या

[सन् १९८१ ई०]

हिंदी, अंग्रेजी, पंजाबी और नये भारतीय शक-संवत्के दिनाङ्क एवं 'विश्वपञ्चाङ्ग'के अनुसार तिथि, पर्व, ग्रहण, नक्षत्रादिसहित।

[नेपाली दिनाङ्क (गते) भी प्रायः पंजाबीसे मिलता है।]

गीताप्रेस, पो० गीताप्रेस (गोरखपुर)

मुद्रक तथा प्रकाशक—मोतीलाल जालान, गीताप्रेस, गोरखपुर

सन् १९२७ से सन् १९८० तक	३९,९५,०००
सन् १९८१	१,००,०००
	कुल ४०,९५०००

मूल्य एक रुपया पचीस पैसे

गीताप्रेस, गोरखपुरकी निजी दूकानें

फोन-नं०

३४६८९४ } (१) कलकत्ता—गोविन्दभवन-कार्यालय,
३४०२५१ } १५१, महात्मा गांधी रोड

२६९६७८ (२) दिल्ली—गीताप्रेस, पुस्तक-दूकान, २६०९, नई सड़क

—(३) पटना— ,, ,, अशोकराजपथ

६७२८२ (४) कानपुर—" २४ । ५५, बिरहाना रोड

(५) हरिद्वार " सब्जीमंडी, मोतीबाजार

६३०५० (६) वाराणसी—गीताप्रेस, कागज-एजेंसी, ५९/९ नीचीबाग

१२२ (७) स्वर्गाश्रम—गीताभवन, गङ्गापार स्टेशन ऋषिकेश (पौड़ी-गढ़वाल)

अभ्यासकर्ताके नाम-पता आदि

नाम Kirti Kant Shastri

घरका पता Memaron, Jahangirabad (Bulandshahar) U.P. 202394

कार्यालयका पता

तारका पता

फोन-नंबर

कार-नंबर

पासबुक-नंबर 3677/2005

वि॰ संवत २३-१२-२०१५, सन १६-३-१९५९

जन्म-दिवस ५-३-६०

अन्य उल्लेख्य

वन्दना

रामं लक्ष्मणपूर्वजं रघुवरं सीतापतिं सुन्दरं
काकुत्स्थं करुणार्णवं गुणनिधिं विप्रप्रियं धार्मिकम् ।
राजेन्द्रं सत्यसन्धं दशरथतनयं श्यामलं शान्तमूर्तिं
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥
दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥
लोकाभिरामं रणरङ्गधीरं राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरं तं श्रीरामचन्द्रं शरणं प्रपद्ये ॥
आपदामपहर्तारं दातारं सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥
रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे ।
रामेणाभिहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः ॥

—'स्तोत्ररत्नावली'

हृदयमें उत्तम भावोंको बढ़ते हुए देखें

श्रद्धा, प्रेम, दया, क्षमा, शान्ति, समता, संतोष, सरलता, ज्ञान, वैराग्य, निर्भयता, आन्तरिक पवित्रता, निष्कामता आदि—ये सब हृदयके उत्तम भाव हैं। ये सभी आत्माका उद्धार करनेवाले हैं। जिस क्रियाके साथ इनका संयोग हो जाता है, वह क्रिया भी उत्तम-से-उत्तम बन जाती है। मनुष्यको चाहिये कि उपर्युक्त भावोंको ईश्वरकी कृपाके प्रभावसे अपने हृदयमें उत्तरोत्तर बढ़ते हुए देखता रहे। इस प्रकार देखनेवालेकी उत्तरोत्तर उन्नति होती चली जाती है। हृदयके भाव उत्तम होनेपर मनुष्यके आचरण स्वतः ही उत्तम होने लगते हैं। उसे अपने आचरण सुधारनेके लिये कोई अलग प्रयत्न नहीं करना पड़ता। उसके दुर्गुण-दुराचारोंका अपने-आप ही अभाव हो जाता है।

—'परमशान्तिका मार्ग'

मानव-जीवनकी सफलता

अबलौं नसानी, अब न नसैहौं ।
राम-कृपा भव-निसा सिरानी, जागे फिरि न डसैहौं ॥
पायेउँ नाम चारु चिंतामनि, उर कर तें न खसैहौं ।
स्यामरूप सुचि रुचिर कसौटी, चित-कंचनहिं कसैहौं ॥
परबस जानि हँस्यो इन इंद्रिन, निज बस ह्वै न हँसैहौं ।
मन-मधुकर पनकै तुलसी रघुपति-पद-कमल बसैहौं ॥

× × × ×

जानकी-जीवनकी बलि जैहौं ।
चित कहै राम-सीय-पद परिहरि अब न कहूँ चलि जैहौं ॥
उपजी उर प्रतीति सपनेहुँ सुख, प्रभु-पद-बिमुख न पैहौं ।
मन समेत या तनके बासिन्ह इहै सिखावन दैहौं ॥
स्रवननि और कथा नहिं सुनिहौं, रसना और न गैहौं ।
रोकिहौं नयन बिलोकत औरहिं, सीस ईस ही नैहौं ॥
नातौ-नेह नाथसों करि सब नातौ-नेह बहैहौं ।
यह छर भार ताहि तुलसी जग जाको दास कहैहौं ॥

—'विनय-पत्रिका'

अमृत-बिन्दु

संसारमें ईश्वर ही केवल सत्य है और सभी असत्य है। केवल ईश्वर-ज्ञान ही ज्ञान है और सब अज्ञान है। भक्तका हृदय भगवान्‌की बैठक है।

मन और मुखको एक करना ही साधना है। विश्वास तारता है और अहंकार डुबाता है। प्रपञ्चमें मनुष्यका आत्मपतन हो ही जाता है। निःसार है यह संसार। यहाँ सार केवल भगवान् हैं। वैराग्य परमार्थकी नींव है। भगवान्‌का भजन ही जीवनका सुफल है। जैसा भाव वैसा फल। हरि-कथा सुखकी समाधि है। दो ही अक्षरका काम। उचारो श्रीराम-नाम॥

भगवान्‌का नाम ही भवरोगकी दवा है। जिसे संतोष है वह सदा सुखी है। जिसे तृष्णा है वह सदा दुखी है।

—'संतवाणी'

जीवनोपयोगी बातें

१—सादगीसे रहना चाहिये। स्वावलम्बी बनना चाहिये। स्वावलम्बन सुधा है।

२—जीवनको अधिक खर्चीला नहीं बनाना चाहिये। ऋषि-मुनियोंका जीवन खर्चीला नहीं था। अधिक खर्चीला जीवन मनुष्यको रुपयोंका दास बना देता है, जिसके कारण अनेक पाप करने पड़ते हैं।

३—बोलनेके समय बहुत विचारकर सत्य, प्रिय, मित और हितके वचन बोलने चाहिये।

४—मनुष्य-जीवनके समयको अमूल्य और क्षणिक समझकर उत्तम-से-उत्तम काममें व्यतीत करना चाहिये। एक क्षण भी व्यर्थ नहीं बिताना चाहिये।

५—मनसे भगवान्‌का चिन्तन, वाणीसे भगवान्‌के नामका जप, सबको नारायण समझकर शरीरसे जगज्जनार्दनकी निःस्वार्थ सेवा—ये ही उत्तम-से-उत्तम कर्म हैं।

६—द्विजातिमात्रको उचित है कि नित्य सूर्योदय और सूर्यास्तसे पूर्व ही संध्योपासन और गायत्री-जप करे। सूर्योदयास्तके समय सोना निषिद्ध है।

७—संध्या, गायत्री-जप, ध्यान, पूजा, पाठ, स्तुति, प्रार्थना, नमस्कार आदिके अर्थ और भावको समझते हुए ही निष्कामभावसे इन्हें श्रद्धा-भक्तिपूर्वक सदा-सर्वदा करना चाहिये।

८—एकान्तमें मनको सदा यही समझाना चाहिये कि परमात्माके सिवा किसीका भी चिन्तन न करो; क्योंकि व्यर्थ चिन्तनसे बहुत हानि होती है।

९—अपने ऊपर भगवान्‌की अहैतुकी दया और प्रेम समझ-समझकर हर समय प्रसन्न रहना चाहिये। 'हरि ! तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों।'

१०—श्रीभगवान्‌के भोग लगाकर तथा यथाधिकार बलिवैश्वदेव करके ही भोजन करे। भोजनके आदि और अन्तमें आचमन करे।

कुछ जानने योग्य बातें

१–रेलभाड़ा–१ किलोमीटर लगभग ५ फलांगका होता है।

अब एयरकण्डी०, प्रथम एवं द्वितीय—कुल तीन श्रेणियाँ हैं। सभी श्रेणीके परिवर्तित रेलभाड़ाकी जानकारी स्टेशनों एवं नये टाइमटेबुलसे की जा सकती है। पाँच वर्षसे कमके बच्चे बिना टिकट तथा बारह वर्षसे कमके आधी टिकटमें जा सकते हैं।

२–एयरकण्डी० श्रेणीका यात्री ७० कि० ग्रा०, प्रथम श्रेणीका ५० कि० ग्रा०, द्वितीयका ३५ कि० ग्राम सामान बिना किरायेके ले जा सकता है। अधिक हो तो तौलकर महसूल दे देना चाहिये, नहीं तो पकड़े जानेपर यदि एयरकण्डी०का १५ कि० ग्रा० तथा अन्य श्रेणीवालोंका १० कि० ग्रामसे अधिक होगा तो पूरे सामानका महसूल लग जायेगा।

३–रेलपारसल और लगेजका भाड़ा—किलोमीटरकी दूरीके हिसाबसे किलोग्रामके वजनपर लगता है। १ सेर=०.९३ किलोग्राम, १ मन=३७ कि० ग्राम तथा १०० मन=३७ क्विन्टलके लगभग होते हैं।

१०० कि० ग्राम का एक क्विन्टल होता है, जो लगभग २ मन २७ सेरके बराबर है ।

४० किलोग्राम घरेलू मालका १०० किलोमीटर दूरीका भाड़ा रु० ४.५०, ५०० कि० मी० दूरीका रु० १२.०० तथा १०० कि० मी० दूरीका रु० २०.२० लगता है । ४.५० से कमकी बिल्टी (रेलवे रसीद) नहीं बनती तथा ५०० किलोमीटरसे कमकी बिल्टी पेड बनती है । पुस्तकें, दूध तथा खद्दरका रेलभाड़ा कुछ कम दरसे तथा समाचारपत्रोंका एक तिहाईसे कम लगता है ।

४–रेलयात्रामें–कम-से-कम ३२० किलोमीटरके यात्री २४० किलोमीटर यात्रा कर चुकनेपर ही रास्तेमें रुक सकते हैं । वे अपने टिकटके प्रति १६० किलोमीटर या उसके किसी अंशपर एक दिनके हिसाबसे रुक सकते हैं ।

५–रेल-कर्मचारी बिना रसीद दिये कोई रकम नहीं ले सकता । अनुचित ली हुई रकम रसीदके आधारसे लिखा-पढ़ी करके वापस ली जा सकती है । यदि कोई कर्मचारी यात्रीसे असभ्यताका व्यवहार करे तो उसी लाइनके डिविजनल सुपरिंटेंडेंट या चीफ आपरेटिंग सुपरिंटेंडेंटसे शिकायत करनी चाहिये ।

६–रेलवेपर मालसम्बन्धी कोई नालिस करनी हो तो बिल्टीकी तारीखसे छः मासके अंदर जनरल मैनेजरको रजिस्टर्ड नोटिस जरूर दे दें, नहीं तो सुनवायी नहीं होती।

७–यात्रामें कहीं ठहरना हो तो स्टेशनमास्टरसे रसीद लेकर सामान उनके पास छोड़ सकते हैं। एक अददका प्रतिदिन २५ पैसे ४ दिनोंतक, ३० पैसे दूसरे ४ दिनोंतक, ३५ पैसे तीसरे ४ दिनोंतक और ४० पैसे उसके बाद प्रतिदिनके हिसाबसे लगेगा।

नोट–सभी रेल किरायेमें लगभग २०%की वृद्धि हुई है।

डाककी दरोंमें कुछ नये परिवर्तन हुए हैं

१–१० ग्रामतककी चिट्ठीपर ३५ पैसे, इसके बाद प्रति १० ग्राम या उससे कमपर भी १५ पैसेका टिकट लगता है। भारत, भूटान, बंगलादेश और नेपालके लिये एक ही नियम है। अन्तर्देशी (Inland) लिफाफा २५ पैसेमें मिलता है।

२–कार्ड १५ पैसेका और जबाबी कार्ड ३० पैसेका होता है। कार्ड बड़ा-से-बड़ा ७$\frac{७}{८}$''+४$\frac{१}{८}$'',छोटा-से-छोटा ४''+२$\frac{७}{८}$'' हो सकता है।

३–पुस्तक पैकेटके रूपमें दोनों ओर खुली पैक करके भेजनेसे प्रति १०० ग्रामपर १० पैसे और बादके प्रति ५० ग्राम या अंशपर ५ पैसे लगते हैं। पुस्तकके अतिरिक्त अन्य बुकपोस्टपर प्रथम ५० ग्रामपर २५ पैसे, बादमें प्रति २५ ग्राम या अंशपर १५ पैसे लगते हैं। नमूनेका पैकेट २०० ग्रामतकका जा सकता है।

४–रेकार्डेड डिलीवरी–सामान्य डाकखर्चसे १रु० का और टिकट लगानेसे पत्रके यथास्थान पहुँचनेपर उसे रजिस्टर्ड पत्रकी तरह डिलीवर कराया जाता है। वापसी रसीदका ३० पैसे अधिक लगाना होगा।

५–बीमा करानेका नियम–१०० रु० तक १ रुपया, इसके बाद प्रति सैकड़ा या उसके किसी अंशपर ५० पैसे ५००० तक, उसके बाद ३ रु० प्रति हजार लगता है। बिना रजिस्ट्री बीमा और वी० पी० नहीं होते। दो (चपड़ीकी) मोहरोंके बीचमें १ इंचसे अधिक अन्तर नहीं होना चाहिये। बीमामें सील-मोहर आवश्यक है।

६–रजिस्ट्री करानेके २.२५ पैसे अलग लगते हैं।

७—पारसलमें दस हजार ग्रामतक प्रति ५०० ग्राम २ रु० लगते हैं। ४००० ग्रामसे ऊपरके पारसलकी रजिस्ट्री अनिवार्य है।

८—मनी आर्डरकी दर नीचे वी०पी० में दी गयी है।

९—**सर्टिफिकेटका नियम**—बिना रजिस्ट्रीका पारसल, चिट्ठी, पैकेट या कार्ड, डाकघरका सर्टिफिकेट लेकर भेजा जा सकता है। बीस पैसेमें ३ अददतक पारसल, चिट्ठी कार्ड या पैकेटका सर्टिफिकेट मिलता है।

१०—**वी० पी०**—रजिस्ट्री पारसल, पैकेट या चिट्ठी वी० पी० से जा सकते हैं। पोस्ट-आफिस इनका रुपया पानेवालेसे वसूल करके मनी आर्डरसे भेजनेवालेके पास पहुँचा देता है। मनीआर्डरकी दर १० रु० तक २५ पैसे, उसके बाद रु० २० तक ५० पैसे, उसके बाद प्रति २० रुपये या अंशपर ५० पैसेके हिसाबसे मनीआर्डर-खर्च लगता है। वी० पी० १००० रु० तककी भेजी जा सकती है। मनीआर्डर-खर्च वी० पी० पानेवाला देता है। १० रुपयेतककी वी० पी० पर ५० पैसे, २० रुपयेतक १ रुपया, उससे अधिकपर १ रु० ५० पैसे अतिरिक्त लगता है।

१० रु० तककी वी०पी० पैकेटपर रियायती रजिस्ट्री-चार्ज सहित केवल १.१५ पैसे ही लगते हैं। २० रु० तक वी० पी० पर ३.२५ पैसे, २० रु० से अधिक वी० पी० पर ३.७५ पैसे लगेंगे। वी० पी० ७ दिनोंतक मुफ्तमें, इसके बाद ७ दिनोंतक २९ पैसे प्रतिदिनके हिसाबसे देकर पारसल तथा १५ पैसे देकर लेटर रोके जा सकते हैं।

११–तार–८ शब्दोंतक साधारण तारके २.२५ पैसे, जल्दी जानेवालेके ४.५० पैसे लगते हैं, अधिक शब्दोंके लिये साधारणके ३० पैसे और शीघ्रगामीके ६० पैसे प्रतिशब्द और लगते हैं। जवाबी तारके लिये साधारणके २.२५ पैसे तथा शीघ्रगामीके ४.५० पैसे और अधिक लगते हैं। जवाबी फार्म काममें न लाया जाय तो ४५ दिन (१½ माह) तक (टेलीग्राफ चेक आफिस कलकत्तासे) दाम वापस मँगा सकते हैं।

१२–प्रेसके लिये ५० शब्दोंके साधारण तारका रु० १.००, जल्दी जानेवालेके रु० २.०० लगते हैं।

१३–डाककी शिकायतें प्रादेशिक पोस्टमास्टर जनरलको और तारकी जनरल मैनेजर टेलीकम्युनिकेशनको करनी चाहिये।

इन्कम-टैक्स—व्यक्तिगत एवं संयुक्त हिंदूपरिवार अन-रजिस्टर्ड फर्मके लिये आयकर, वर्ष १९८१-८२ के लिये—

१—दर हर व्यक्तिके लिये	संयुक्त हिंदूपरिवारके लिये।
८००० तक कुछ नहीं।	८००० तक कुछ नहीं।
उसके बादके—	उसके बादके—
७०००) पर १५%	७०००) पर २२%
५०००) पर १८%	५०००) पर २७%
५०००) पर २५%	५०००) पर ३५%
५०००) पर ३०%	५०००) पर ४०%
२०,०००) पर ४०%	२०,०००) पर ५०%
२०,०००) पर ५०%	
३०,०००) पर ५५%	
इसके बाद बाकीपर ६०%	इसके बाद बाकीपर ६०%

संयुक्त हिंदूपरिवारमें यदि १ व्यक्तिकी भी आय ८०००)से अधिक स्वतन्त्र आय होगी तो उपर्युक्त दर लगेगी, वरना व्यक्तिकी दर लगेगी।

२—रजिस्टर्ड फर्मके पहिले १०,०००) तक कुछ नहीं।

१०,०००) के बाद १५,०००) तक ५% प्रतिशत
उसके बाद २५,०००) तक ७% ,,
,, ,, ,, ५०,००० तक १५% ,,
उसके बादकी कुल आमदनीपर २४%। ,,

विशेष—उपर्युक्त टैक्सोंपर १०% सर चार्ज अलग लगेगा।

नोट—हर व्यक्तिके लिये १२,००० तक कुछ नहीं।

दैनिक वेतन और मकानभाड़ा चुकानेका नक्शा

मासिक रुपये	२८का म० १ दिनका रु० पै०	२९का म० १ दिनका रु० पै०	३०का म० १ दिनका रु० पै०	३१का म० १ दिनका रु० पै०
१	०.०४	०.०३	०.०३	०.०३
२	०.०७	०.०७	०.०७	०.०६
३	०.११	०.१०	०.१०	०.१०
४	०.१४	०.१४	०.१३	०.१३
५	०.१८	०.१७	०.१७	०.१६
६	०.२१	०.२१	०.२०	०.१९
७	०.२५	०.२४	०.२३	०.२३
८	०.२९	०.२८	०.२७	०.२६
९	०.३२	०.३१	०.३०	०.२९
१०	०.३६	०.३४	०.३३	०.३२
२०	०.७१	०.६९	०.६७	०.६५
३०	१.०७	१.०३	१.००	०.९७
४०	१.४३	१.३८	१.३३	१.२९
५०	१.७९	१.७२	१.६७	१.६१
१००	३.५७	३.४५	३.३३	३.२३
५००	१७.८६	१७.२४	१६.६७	१६.१३
१०००	३५.१७	३४.४८	३३.३३	३२.२६

माप-तौलकी नयी दाशमिक प्रणाली

तौल

१० मिलीग्राम=१ सेन्टीग्राम
१० सेन्टीग्राम=१ डेसीग्राम
१० डेसीग्राम=१ ग्राम
१० ग्राम =१ डेकाग्राम
१० डेकाग्राम=१ हेक्टोग्राम
१० हेक्टोग्राम=१ किलोग्राम
=२.२ पौंड
१०० किलोग्राम=१ क्विन्टल

माप

१० मिलीमीटर=१ सेन्टीमीटर
=.३९ इंच
१० सेन्टीमीटर=१डेसीमीटर
=३.९४ इंच
१०डेसीमीटर=१ मीटर
=३९.३७ इंच
१० मीटर =१ डेकामीटर
१० डेकामीटर=१ हेक्टोमीटर
१० हेक्टोमीटर=१ किलोमीटर
=करीब ५ फलांग

तुलनात्मक परिवर्तन

१—बाट

१ तोला=११.६६ ग्राम
१० ,, =११६.६४ ,,
१ पौंड=.४५ किलोग्राम
१० ,, =४.४५ ,,
१ सेर=.९३ किलोग्राम
१० ,, =९.९३ ,,
१ मन=०.३७ क्विन्टल
१० ,, =३.७३ ,,
१ टन=१.०२ मेट्रिकटन
१० ,, =१०.१६ ,,

२—लम्बाई

१ इंच=२५.४० मिलीमीटर
१२ ,, =३०४.८० ,,
१ गज=०.९१ मीटर
१० ,, =९.१४ ,,
१ मील=१.६१ किलोमीटर
१० ,, =१६.९ ,,

३–क्षेत्रफल	४–तरल पदार्थ
१ एकड़=०.४० हेक्टेयर	१ गेलन (इम्पीरियल)
१० ,, =४.०५ ,,	= ४.५५ लिटर
१ वर्गगज=०.८४ वर्गमीटर	
१० ,, =८.३६ ,,	१०,, = ४५.४६ ,,

कागजका माप

इंच	सेंटीमीटर		
८×१३	=२०॥×३३	२०×२६	=५१×६६
८×१३॥	=२१॥×३४॥	२०×३०	=५१×७६
१०×१५	=२५॥×३८	२२×२९	=५६×७३॥
१५×२०	=३८×५१	२२×३०	=५६×७६
१७×२७	=४३×६९	२२×३६	=५६×९१
१८×२२	=४५॥×५६	२६×४०	=६६×१०२
१८×२३	=४५॥×५८॥	२७×३४	=६९×८६
		३०×४०	=७६×१०२

* स्वास्थ्यरक्षाके सप्त सूत्र *

१–सूर्योदयसे पहले नित्य-शौच जाना, दाँत साफ करना, नहाना, संध्या, सूर्यनमस्कार आदि और शुद्ध हवामें टहलना, कुछ शारीरिक परिश्रम करना—ये जरूरी हैं।

२–भोजन–ताजा, साफ, हल्का, शुद्ध, सात्त्विक और सादा हो, हाथ-चक्कीका मोटा आटा, ढेकीका चावल, गुड़, फल, शाक और दूध—ये विशेष लाभदायक हैं। कभी-कभी केवल फलाहार करना या उपवास करना जरूरी है।

३–पीनेका पानी–साफ, शुद्ध, गन्धहीन हो। दो किलो प्रतिदिन तो पीना ही चाहिये। जहाँ पानी गंदा हो या बीमारी फैली हो, वहाँ उबालकर ठंडा कर पिये।

४–घर–साफ-सुथरा, धूप और हवादार हो। जाड़ेमें भी हवा आनेकी खिड़की रातमें भी खुली रक्खें।

५–मुँह ढककर या एक बिस्तरपर दोका सोना, जहाँ-तहाँ थूकना, कूड़ा-गंदगी फैलाना बुरा है।

६–कपड़ा–हल्का, थोड़ा (कामभर), ढीला, पसीनासोख, सफेद और स्वच्छ हो।

७–सोना, उठना, आहार-व्यवहार और परिश्रम नित्य नियमित हो।

अनुभूत घरेलू प्रयोग

रोग होनेपर संयम और आवश्यक परहेज रखना सबसे उत्तम है।

सर्दीका बुखार—तुलसीके पत्ते १०, काली मिरच १०, खूबकला १० ग्राम, पोदीना ५ ग्राम, धनिया १० ग्राम, ४०० ग्राम पानीमें चढ़ाकर, १०० ग्राम रह जानेपर १० ग्राम मिश्री मिलाकर पीना चाहिये।

बुखारमें जलन—पेटमें जलन हो तो सफेद चन्दन घिसकर २० ग्राम अंदाज, नाभिमें डाल दे। सारे शरीरमें जलन हो तो नाभिपर काँसेकी कटोरी रखकर एक हाथ ऊँचेसे उसमें पानीकी धार छोड़े, दस मिनटमें जलन मिट सकती है।

मलेरिया ज्वर—(श्यामा) तुलसीके पत्ते ११ और काली मिरच ११ का काढ़ा बुखार चढ़े रहने और उतरनेपर भी पीता रहे। अपामार्गकी जड़ लाल रेशमसे भुजापर बाँधनी चाहिये। १० पत्ते तुलसीके, १० काली मिरचके साथ रोज चबाने चाहिये।

पेट फूलना—नमक एक ग्राम और अजवायन ५ ग्राम मिलाकर खाय ।

मन्दाग्नि—एक-एक ग्राम सैन्धव नमक और भूँजा हुआ हींग प्रतिदिन भोजनके पहले ग्रासके साथ खाय, भोजनके कुछ पहले नमकके साथ थोड़ा-सा कच्चा अदरक सेवन करे ।

आँवके दस्त—सूखा बेल, पुराना गुड़, काली मिरच पीसकर बराबर मात्रा १० ग्राम पी ले । अथवा १०-१० ग्राम इसबगोल और मिश्री मिलाकर फाँक ले । खून आता हो तो दूबका रस २० ग्राम पिये ।

कृमि—विडंगचूर्ण ५ ग्राम शहदके साथ ले या नीमकी पत्तीका रस ५ ग्राम पी ले ।

बवासीर—खून आता हो तो दूबका रस ५० ग्राम चीनी मिलाकर या नागकेसर १० ग्राम चीनी मिलाकर पीसकर ले। दर्दमें भाँगकी धुईं दे । खून न आता हो तो हर्रें २० ग्राम गोमूत्रमें पीसकर

गुड़के साथ सात दिनतक ले। खून आता हो तो शौचके समय फिटकिरीके जलसे अङ्ग धोना चाहिये।

सर्दी—थोड़ा-सा कपूर खाना और सूँघना चाहिये।

खाँसी-श्वास—१०० ग्राम तीसीको भूनकर उसमें ५ ग्राम पीसा हुआ गोंद डालकर शहदमें आगपर पका ले। दिनमें चार-पाँच वार ५-५ ग्राम खाये। अनुभूत है। आलू बिल्कुल न खाये।

श्वास—पीपलकी छालका चूर्ण या खैरकी लकड़ीका चूर्ण ३ ग्राम अथवा मोरपंखकी भस्म एक ग्राम शहदके साथ सेवन करे। संयम और परहेजसे रहे।

खुजली—$\frac{1}{3}$ ग्राम शुद्ध गन्धक केलेमें दबाकर या शहदके साथ प्रतिदिन खाये। चावलमोगरेका तेल या कपूर मिलाया हुआ नारियलका तेल लगाकर धूपमें बैठे। नीमपत्तोंके जलसे धोवे।

दाद—माजूफलका चूर्ण ८० ग्राम, इमलीकी

छालकी भस्म १० ग्राम, कपूर ५ ग्राम नारियलके तेलमें मिलाकर लगाये।

फोड़ा—अनन्तमूलकी जड़ पीसकर उसका चारों ओर लेप करे। (अनन्तमूल जड़ी है।)

हिचकी और मूर्च्छा—पाँच-सात काली मिरच सूईकी नोकमें पिरोकर रोगीकी नाकमें उसका धुआँ दे।

सर्पविष—अड़हुल (जवापुष्प, अजापुष्प) का मूल पीसकर पिला देनेसे विषैले सर्पका विष दूर हो सकता है। दुग्धके साथ पीनेसे खूनके विकारको दूर करता है।

मृगी—अपामार्गकी जड़ या पत्तोंको पीसकर उसमें गोल मिरच तथा सौंफ मिलाकर पीनेसे अपस्मार (मृगी) का रोग दूर होता है।

सिर दुखना—पुराने गुड़के साथ सोंठका चूर्ण मिलाकर सूँघे। सोंठ, बादाम, अफीम, कपूर, सफेद चन्दनके साथ पीसकर जरा-सा गरम करके लेप करे। अफीम बहुत थोड़ा डाले। कपूर, पीपरामेंट

और अजवाइनके फूल बराबर मिलाकर अमृतधारा बना ले, उसका लेप करे।

वात–२५ ग्राम धतूरेके बीज कूटकर ६०० ग्राम खालिस सरसोंके तेलमें सात दिन भिगो-छानकर उस तेलकी मालिश करे।

प्रदर–मुलेठी २० ग्राम, चीनी २० ग्राम चावल धोये हुए जलमें पीसकर दिनमें दो बार सेवन करे। इससे रक्तप्रदर भी मिट सकता है। अशोकछालके क्वाथसे प्रदर आराम होता है।

रक्तस्राव–रज बहुत पड़ता हो तो नागकेसर-की फाँकी या दूबका रस पीना चाहिये। पेटपर ठंडे पानीकी पट्टी रखनी चाहिये।

बहुमूत्र–पुराने गुड़के साथ काले तिल भूँजकर लड्डू बना ले, रोज दो लड्डू खाय।

आधासीसी–सबेरे ४ बजे ५ ग्राम भूना हुआ सोहागा पीसकर १० ग्राम घी और १० ग्राम चीनीके साथ खाना चाहिये।

ग्रहण-विवरण

संवत् २०३८, शक १९०३, श्रावण कृष्ण ३०, शुक्र ३१ जुलाई, १९८१, पुष्य नक्षत्रमें काशीमें खण्डग्रास सूर्यग्रहण होगा।

	घ० प०	घं० मि०	स्टै० घं० मि०
स्पर्श	३ । ३५	६ । ५०	६ । ५४
मध्य	५ । २३	७ । ३३	७ । ३७
मोक्ष	७ । ०८	८ । १९	८ । २३

ग्रहण-फल

राशि	फल	राशि	फल
मेष	व्यथा	तुला	सुख
वृष	श्री	वृश्चिक	मान-नाश
मिथुन	क्षति	धन	मृत्यु
कर्क	घात	मकर	स्त्री-पीड़ा
सिंह	हानि	कुम्भ	सौख्य
कन्या	लाभ	मीन	चिन्ता

सब कुछ भगवदर्थ ही करें

जैसे पतिव्रता घरका काम, शरीरकी क्रिया, पूजा-पाठादि सब कुछ पतिके लिये ही करती है, वैसे ही साधकको भी सब कुछ केवल भगवदर्थ ही करना चाहिये। सुगमतापूर्वक भगवदर्थ कर्म करनेके लिये पाँच बातें—(पञ्चामृत) सदैव याद रखनी चाहिये—(१) मैं भगवान्‌का हूँ, (२) भगवान्‌के घर (दरबार)-में रहता हूँ, (३) भगवान्‌के घरका काम करता हूँ, (४) भगवान्‌का दिया हुआ प्रसाद पाता हूँ और (५) भगवान्‌के जनों (परिवार) की सेवा करता हूँ। इस प्रकार शास्त्रविहित कर्म करनेपर सदाचार स्वतः पुष्ट होगा। श्रीमद्भगवद्गीतामें श्रीभगवान् आज्ञा देते हैं—

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम्॥
(९।२७)

'हे अर्जुन! तू जो कर्म करता है, जो खाता है, जो हवन करता है, जो दान देता है और जो तप करता है, वह सब मेरे अर्पण कर।'

यहाँ यज्ञ, दान और तपके अतिरिक्त 'यत्करोषि' और 'यदश्नासि'—ये दो क्रियाएँ और आयी हैं। तात्पर्य यह है कि यज्ञ, दान और तपके अतिरिक्त हम जो कुछ भी शास्त्रविहित कर्म करते हैं और शरीर-निर्वाहके लिये खाना, पीना, सोना आदि जो भी क्रियाएँ करते हैं, वे सब श्रीभगवान्‌के अर्पण करनेसे 'सत्' हो जाती हैं। साधारण-से-साधारण स्वाभाविक-व्यावहारिक कर्म भी यदि श्रीभगवान्‌के लिये किया जाय तो वह भी 'सत्' (आचार) हो जाता है। श्रीभगवान् कहते हैं—

स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः॥

(गीता १८। ४६)

'अपने स्वाभाविक कर्मोंके द्वारा उस परमात्माकी पूजा करके मनुष्य परम सिद्धिको प्राप्त हो जाता है।'

—'कल्याण'—'सदाचार-अङ्क' (पृष्ठ ४४-४५)

आरती

जय भगवद्गीते, जय भगवद्गीते ।
हरि-हिय-कमल-विहारिणि, सुन्दर सुपुनीते ॥
कर्म-सुमर्म-प्रकाशिनि, कामासक्तिहरा ।
तत्त्वज्ञान-विकाशिनि, विद्या ब्रह्म परा ॥ जय०
निश्चल-भक्ति-विधायिनि, निर्मल, मलहारी ।
शरण-रहस्य-प्रदायिनि, सब विधि सुखकारी ॥ जय०
राग-द्वेष-विदारिणि, कारिणि मोद सदा ।
भव-भय-हारिणि, तारिणि, परमानन्दप्रदा ॥ जय०
आसुर-भाव-विनाशिनि, नाशिनि तम-रजनी ।
दैवी सद्गुणदायिनि, हरि-रसिका सजनी ॥ जय०
समता-त्याग सिखावनि, हरि-मुखकी बानी ।
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी ॥ जय०
दया-सुधा बरसावनि मातु ! कृपा कीजै ।
हरिपद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ॥ जय०

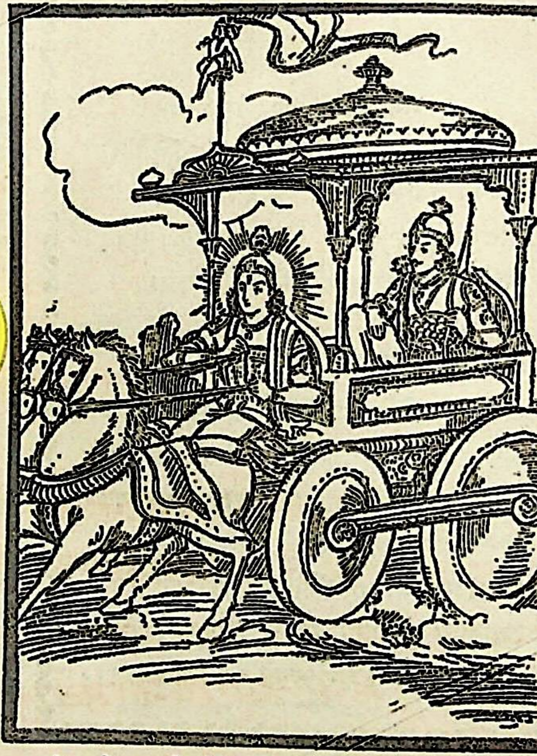

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ।

ॐ

अथ श्रीमद्भगवद्गीता

प्रथमोऽध्यायः

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा।
आचार्यमुपसङ्गम्य राजा वचनमब्रवीत्॥ २ ॥

१ जनवरी १९८१] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १४
पं० १७ पौष सं० २०३७][भा० पौष ११ शक-सं० १९०२

पौष कृष्ण ११ गुरु वि० सं० २०३७
1 January 1981, श्रीकृष्ण-संवत् ५२०६

१—आधुनिक नववर्षो मंगलमयोऽस्तु
आधुनिकानां कृते। अद्य मया एकादश्-
योपलक्षे विद्यालयीय तण्डुलभोजनं
न कृतम्॥ अद्य तश्चतुर्दिनात्मकोऽव
काशोऽभूत्।

सनीवि[illegible]पस्याम

पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥
अत्र शूरा महेष्वासा भीमार्जुनसमा युधि ।
युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथः ॥४॥

२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १४
पं० १८ पौष] 2 January [भा० पौष १२

* एकादशीव्रत

अद्यभारतीयराज्याधिकोषात्पञ्चाशत् ५०.००
गृहीतम् ।
शुक्लयजुः उव्वटमहीधरभाष्य — ४०.००
जम्बीरं = ०।३०
दन्तधावन - ००।१०

रात्रिविश्रामोवाराणस्याम्

कीर्तिकान्त शर्मा

धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्यवान्।
पुरुजित्कुन्तिभोजश्च शैब्यश्च नरपुङ्गवः ॥५॥
युधामन्युश्च विक्रान्त उत्तमौजाश्च वीर्यवान्।
सौभद्रो द्रौपदेयाश्च सर्व एव महारथाः ॥६॥

२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १४
पं० १९ पौष] 3 January [भा० पौष १३

शनिप्रदोष

भोजप्रबन्ध— ७१-८०

रात्रि विश्रामो नारायणस्याम

कीर्तिकान्तशर्मा

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम।
नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते॥ ७॥
भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः।
अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च॥ ८॥

४ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १४
पं० २० पौष] 4 January [भा० पौष १४

जम्बीरं -००।२०
दन्तधावन -००।१०

रात्रि विश्रामो वाराणस्याम्
कीर्तिकान्तशर्मा

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः।
नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः॥ ९॥
अपर्याप्तं तदस्माकं बलं भीष्माभिरक्षितम्।
पर्याप्तं त्विदमेतेषां बलं भीमाभिरक्षितम्॥१०॥

५ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १७
पं० २१ पौष] 5 January [शा० पौष १५

रात्रि-विश्रामः काश्याम्
कीर्तिकान्त शर्मा

अयनेषु च सर्वेषु यथाभागमवस्थिताः ।
भीष्ममेवाभिरक्षन्तु भवन्तः सर्व एव हि ॥११॥
तस्य संजनयन्हर्षं कुरुवृद्धः पितामहः ।
सिंहनादं विनद्योच्चैः शङ्खं दध्मौ प्रतापवान् ॥१२॥

---

६ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १७
पं० २२ पौष] 6 January [भा० पौष १६

अथ काञ्चनपुरतो ब्रह्मपुराणम्-१-२; स्मृतिसन्दर्भ-१-३-४-५, नामकं ग्रन्थं सम्प्राप्तो मया। आभारप्रदर्शनार्थं प्रत्युत्तर पत्रमपि विसर्जितम्।

रात्रिविश्रामः काश्याम्

कीर्तिकान्तशर्मा

गुरु पत्र प्रेषितम्

अ० १] पौष शुक्ल १ बुध [दिन ७

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।
सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत्॥१३॥
ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।
माधवःपाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः॥१४॥

७ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १८

पं० २३ पौष] 7 January [भा० पौष १७

अथ उवाद्य न तन तुमलोगतः
"रात्रि विजयाय वसन्तपरिकादत्तः।

रात्रिविश्रामः कारयाम

कीर्तिकान्तशर्मा

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः।
पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः ॥१५॥
अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥

---

८ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । १९
पं० २४ पौष] 8 January [भा० पौष १८

अथ संहितायाः चत्वारिंशदध्यायः।
अद्य श्राद्धप्रवृत्तिः द्विवेदी मठ शर्मा:
सम्प्राप्तोऽध्याय — 1/००/

रात्रौ विश्रामः काश्याम्
कीर्तिकान्तशर्मा

काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः॥१७॥
द्रुपदो द्रौपदेयाश्च सर्वशः पृथिवीपते।
सौभद्रश्च महाबाहुःशङ्खान्दध्मुः पृथक्पृथक्॥१८॥

९ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । २०
पं० २५ पौष] 9 January [भा० पौष १९

गणेशचतुर्थीव्रत

रात्रि विश्राम : काश्यपा

कीर्तिकान्तशर्मा

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्।
नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥
अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान् कपिध्वजः।
प्रवृत्ते शस्त्रसंपाते धनुरुद्यम्य पाण्डवः ॥२०॥

१० जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । २०
पं० २६ पौष] 10 January [भा० पौष २०

३१·८०रु॰ महेशयोगिनोऽभिषेकस्य प्राप्तः त्रिदि
वसा[illegible] स्य। अद्याभिषेकसमाप्तिः।
स्लीपटिकट- ~१२०

रात्रिविश्रामो नारायणस्याम
कीर्तिकान्तशर्मा

अ० १] पौष शुक्ल ५ रवि [दिन ११

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते।

अर्जुन उवाच

सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥
यावदेतान्निरीक्षेऽहं योद्धुकामानवस्थितान्।
कैर्मया सह योद्धव्यमस्मिन्रणसमुद्यमे ॥२२॥

---

११ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । २१
पं० २७ पौष] 11 January [भा० पौष २१

अद्य भागवतपाठारम्भः। अद्य समस्त संस्कृतमहाविद्यालयछात्रैः संस्कृतरक्षणार्थमान्दोलनं कृतम्, अतो विद्यालयानां अवकाशोऽपि एभिः कारितः।

रात्रिविश्रामो वाराणस्याम्
कीर्तिकान्तशर्मा

१२ दिन] पौष शुक्ल ७ सोम [गीता

योत्स्यमानानवेक्षेऽहं य एतेऽत्र समागताः।
धार्तराष्ट्रस्य दुर्बुद्धेर्युद्धे प्रियचिकीर्षवः ॥२३॥

संजय उवाच

एवमुक्तो हृषीकेशो गुडाकेशेन भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये स्थापयित्वा रथोत्तमम् ॥२४॥

---

१२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । २१

पं० २८ पौष] 12 January [भा० पौष २२

गुरोरादेशान्नचाध्योऽस्त श्रीमद्भागवतस्य

रात्रिविश्रामो वाराणस्याम्

कीर्तिकान्तशर्मा

कीर्तिकान्त नारायणशुक्लं प्रति बम्बई-पत्रं प्रेषितम्
दुर्गाशंकरस्य पत्रं प्राप्तं तथा बिलानि

अ० १] पौष शुक्ल ८ मंगल [दिन १३

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम्।
उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥
तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान्।
आचार्यान्मातुलान्भ्रातॄन्पुत्रान्पौत्रान्सखींस्तथा॥

१३ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । २२
पं० २९ पौष] 13 Jnuary [भा० पौष २३

मकरसंक्रान्ति

२०)रु. पं० श्री लक्ष्मीनारायणशास्त्रिणो दत्ताः पुरस्कारं काञ्चनपुरेत:।
तिलम्-००।८०
दन्तधावनं-००।१०

रात्रि विश्रामो वाराणस्याम्
कीर्तिकान्तशर्मा

श्वसुरान्सुहृदश्चैव सेनयोरुभयोरपि।
तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् ॥
कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत्।
अर्जुन उवाच
दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥

---

१४ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । २२
पं० १ माघ सं० २०३७] 14 January [भा० पौष २४

मकरसंक्रान्तिजन्य पुण्यकाल

तैलिक (साबुन) - ०।५०
पाईट (सर्फ) - ०।८५
अद्य फारसिसिन्धदेशीय गृहे भोजनं कृतम्। बहुसमयः प्रतीक्षायां अतीतो भोजनस्यापि रुचिकरो नासीत्।

रात्रिविश्राम: काश्याम्

कीर्तिकान्तशर्मा

सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥३०॥

१५ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । २३
पं० २ माघ] 15 January [भा० पौष २५

रात्रिविश्राम: काश्याम्
कीर्तिकान्तशर्मा

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे॥३१॥
न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च।
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा।३२।

१६ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । २४
पं० ३ माघ] 16 January [भा० पौष २६

एकादशीव्रत

सर्षपतैलम् - 00120
गुडम् - 00120

रात्रि विश्रामः काश्याम्
कीर्तिकान्त शर्मा

येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ।
त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥
आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा

१७ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४७ सूर्यास्त ५ । २५
पं० ४ माघ] 17 January [भा० पौष २७

क्रम-००१३० शनिप्रदोष

रात्रिविश्रामो वाराणस्यां

कीर्तिकान्तशर्मा

एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥३५॥
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन।
पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥

शृङ्गजम् - ०५।२०
ठेसकर्म - ०५।२०
निमज्जनं - ०५।२०
दन्तधावनं - ०५।१०

रात्रौ विश्रामः काश्याम्

कीर्तिकान्त शर्मा

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान्।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥३७॥
यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः।
कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥३८॥

१९ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । २७
पं० ६ माघ] 19 January [भा० पौष २९

शु-जन-०.।२५ पूर्णिमाव्रत
लंधांक प्रैलीवि-०.।२०
प्रमाणपत्र ,,—२।००

रात्रिविश्राम-काश्याम
कीर्तिकान्तशर्मा

२० दिन] पौष शुक्ल १५ मंगल [गीता

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम्।
कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥
कुलक्षये प्रणश्यन्ति कुलधर्माः सनातनाः।
धर्मे नष्टे कुलं कृत्स्नमधर्मोऽभिभवत्युत ॥४०॥

---

२० जनवरी] सूर्योदय ६ । ४६ सूर्यास्त ५ । २८

पं० ७ माघ] 20 January [भा० पौष ३०

नेत्रबुक - ०.।२८ माघस्नानारम्भ

पेस्क - ०।३५

रात्रे विश्रामः काश्याम्

कीर्तिकान्तशर्मा

माघ कृष्ण १ बुध वि० सं० २०३७ श्रीकृष्ण-सं० ५२०६

अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदुष्यन्ति कुलस्त्रियः।
स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः ॥४१॥
संकरो नरकायैव कुलघ्नानां कुलस्य च।
पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिण्डोदकक्रियाः ॥४२॥

२१ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । २८

पं० ८ माघ] 21 January [भा० माघ १ शक १९०२

रात्रिविश्राम: काश्याम्

कीर्तिकान्त शर्मा

दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माःकुलधर्माश्च शाश्वताः।४३।
उत्सन्नकुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन।
नरकेऽनियतं वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥४४॥

---

२२ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । २९
पं० ९ माघ] 22 January [भा० माघ २

अजनामूली - ००।६५
बोलकेगुरा - ००।३०
शकहालीपो - ००।२५
नींबुर - ००।२०
दन्तधावन - ००।०५

रात्रिविश्राम: कारपाल

कीर्ति कान्त शर्मा

अ० १] माघ कृष्ण ३ शुक्र [दिन २३

अहो बत महत्पापं कर्तुं व्यवसिता वयम्।
यद्राज्यसुखलोभेन हन्तुं स्वजनमुद्यताः॥४५॥
यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः।
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत्॥४६॥

२३ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । ३०
पं० १० माघ] 23 January [भा० माघ ३

संकष्टगणेश-चतुर्थीव्रत

अद्य 9 कृष्णकाणि अभिषेकेण प्राप्तम्
मनी – १.००

रात्रिविश्रामो वाराणस्याम्
कीर्तिकान्तशर्मा

संजय उवाच

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादेऽर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

रात्रिविश्राम: काश्याम्
कीर्तिकान्त शर्मा

ॐ

द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम् ।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥

---

२५ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । ३२
पं० १२ माघ] 25 January [भा० माघ ५

माघ कृष्ण ५ रवि

दन्तधावन — ५।१०
तिल कुटं [illegible] — ५।२०
निम्बुक — ५।।५
शष्कुली [illegible] — ६।२५
दीप — १।२०
रामगुण — २।५०

अद्य भगिनीपादे
रागतः सप्तवादने

[illegible]

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

अर्जुन उवाच

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।
इषुभिः प्रति योत्स्यामि पूजार्हावरिसूदन ॥ ४ ॥

२६ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । ३२
पं० १२ माघ] 26 January [भा० माघ ६

आपाक् ३।६५ गणतन्त्र-दिवस अद्य भगिनीपत्या
काशीपं-६।२५ सह काशी। वि० वि०। विश्वनाथ
पादल्लं-२।३० प्राचीन विश्वनाथ भगवान्
दि०। देरात्रां दर्शनं कृतम्

बुलन्दशहर निवासिना अनेक पी०डी० कौशिक
सह सहसा सम्मेलनं संजातम् तैर्निमंत्रितं

रात्रि विश्राम: मुगलसराये

कीर्तिकान्त शर्मा

गुरूनहत्वा हि महानुभावान्
श्रेयो भोक्तुं भैक्ष्यमपीह लोके।
हत्वार्थकामांस्तु गुरूनिहैव
भुञ्जीय भोगान्रुधिरप्रदिग्धान्॥ ५ ॥

२७ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४४ सूर्यास्त ५ । ३३
पं० १४ माघ] 27 January [भा० माघ ७

अमृ — १।८०
[illegible] —.५०
रिजर्व [illegible] —.६०
[illegible]योग — १।५०
[illegible] — ।५०
[illegible] — १।५०

न चैतद्विद्मः कतरन्नो गरीयो
यद्वा जयेम यदि वा नो जयेयुः ।
यानेव हत्वा न जिजीविषाम-
स्तेऽवस्थिताः प्रमुखे धार्तराष्ट्राः ॥ ६॥

तिलकुट -0·25
लक्ष्मीनारायणशास्त्रिणो दत्तं धनं
प्राप्तम् ।

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः ।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम् ७

२९ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४४ सूर्यास्त ५ । ३५
पं० १६ माघ] 29 January [भा० माघ ९

पालीवालगुरुवः आगताः
आलूके - ३५
इस्कांग - १०
कापळ्ण - ५०
चोयं - ३५

१० दिन] माघ कृष्ण १० शुक्र [गीता

न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्॥ ८ ॥

---

३० जनवरी] सूर्योदय ६ । ४४ सूर्यास्त ५ । ३६

पं० १७ माघ] 30 January [भा० माघ १०

-चयन - ७।३६

सूती - ७।२५

गृहपत्रप्राप्तम्

संजय उवाच

एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह ।९।
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ॥ १० ॥

---

३१ जनवरी] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । ३७
पं० १८ माघ] 31 January [भा० माघ ११ . .

एकादशीव्रत

द्विशतरूप्यकाणां चैकपत्रं गृहादागतः।
पूर्वकृताभिषकान्य एकोनविंशदुत्तरशतत्र-
-यम् रूप्यकाणि सत्प्राप्तानि।
रसीदी--।२०। लक्ष्मीनारायणशर्मा-श्री भगत:।

श्रीभगवानुवाच

अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः॥११॥
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः ।
न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ॥१२॥

---

१ फरवरी १९८१] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । ३७
पं० १९ माघ] 1 February 1981 [भा० माघ १२

चायं - ००।३५
यज्ञोपवीतं - ००।४०
.. ।। - ००।२०
फिटकरी - ००।२५
आलूं - ०१।००
कलोपं - ००।३०
मूंगफलं - ००।२५
दन्तधावनं - ००।१०

श्री गुरुकुलात् पत्रं प्राप्तम्।

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ॥१३॥
मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत १४

२ फरवरी] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । ३८
पं० २० माघ] 2 February [भा० माघ १३

चाय- ०।३५ सोमप्रदोष

२— अद्य गुरोः १४०/- रू. केनहृतः।
ड्राफ्टपत्रं भारतीयराज्याधिकोषस्योपरि

यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ ।
समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ॥१५॥
नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।
उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥१६॥

---

२ फरवरी] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । ३९
पं० २१ माघ] 3 February [भा० माघ १४

अद्य ११.१५ वादनात्परं कैन्टस्थानं प्राप्य
अतःपरं ३।०० वादने इयर्टिकलयानेन प्रयागं
प्राप। तत्पश्चात् ज्योतिष्पीठाधीश्वराश्रमे
स्थापमेवयम्। टिकटं प्रयागस्य — ८।३०
आलूकं — ०।३५ रिक्शा — १।५०
रसगोलं — ०।२० चायं — ०।३०
चानकं — ०।०५

शत्रिनि शर्मा ज्योतिष्पीठ प्रयाग
१४.१.६५ ———

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम्।
विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥१७॥
अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः।
अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥१८॥

---

४ फरवरी] सूर्योदय ६।४१ सूर्यास्त ५।३९
पं० २२ माघ] 4 February [भा० माघ १५

मकर-(मौनी) अमावास्या

अद्य प्रातः संगमस्नानं कृत्वा। अतःपरं नित्यक्रिया सम्पाद्य भोजनादिकं अकुर्वम्। तदनन्तरं भ्रमणं कृत्वा कुरुपात्रमहाभागानां प्रवचनमश्रौषम्।

चायं — ०५ ३०
गत्यं — ००। [illegible]०

रात्रिविश्रामो ज्योतिष्पीठशिविरे प्रयागे।

कीर्तिकान्त शर्मा

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम् ।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥१९॥
न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः ।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥

---

५ फरवरी] सूर्योदय ६ । ४० सूर्यास्त ५ । ४०

पं० २३ माघ] 5 February [भा० माघ १६

प्रातरुत्थाय नित्यक्रियां विधाय जलं पीत्वा
...रनन् दारागंडो सम्प्राप्य, तत्पश्चात् [illegible]
सिन्धोः समीपे भुक्त्वा अल्प विरम्य भ्रमणार्थं गतः
तदनन्तरं सनदकुमरौ गतः। तत्पश्चात् म...
...दूर मठे भ्रमित्वा प्राप्ते नौ एम् ६।२० वादने
त्रिवेणी श्रीभगवतं मन्दिरे स्तेन निर्गतः। सनते गा...
टिकेट - ६।४०
२ कांसियरिभास्ति... [illegible]
लेमन - ०।२०
मुङ्गफली - ०।२०

स्पेशल सेला
रात्रि विश्राम: काशीप्रकास प्रसरेलयाने
[illegible]

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् ।
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥२१॥

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥

---

६ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३९ सूर्यास्त ५ । ४१
पं० २४ माघ] 6 February [भा० माघ १७

अद्य प्रातः ६.१० वादने वाराणसी स्टेशने प्राप्तः । अतःपरं
रिक्शायानेन कक्षे आगतम् । नित्यक्रियां विधाय श्रा-
व तर्पणं कृतम् । तत्पश्चात् भोजनादिकं कार्यं
च कृत्वा सर्वे संस्कृत संरक्षणाय आन्दोलनार्थं ग-
अभ्यागत्य कक्षे स्वपामि स्म । तत्पश्चात् ८.००
वादने उत्थाय विद्यालये गत्वा स्तुतिपाठं कु-
पठित्वा भोजनादिकं कृत्वा कन्यौडी बीथ्यां कुम्
पानं विधाय विश्वनाथादिकं दर्शनं संजातम् ।
रिक्शा-०.१६० - दुग्ध-०.१६.

रात्रि विश्रामः ०.३० बजे
K.K.Sh—

[illegible]

३८ दिन] माघ शुक्ल ३ शनि [गीता

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥२३॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥२४॥

---

७ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३९ सूर्यास्त ५ । ४२

पं० २५ माघ] 7 February [भा० माघ १८

अद्य प्रातः अष्टवादने उत्थाय शौचस्नानादिकं
नित्यक्रियां विधाय विद्यालयमगच्छम्।
भागवताध्ययनं न कृतं मया। रजकस्य शालं
नार्यं वस्त्रौ दत्ता।
र्जरसंयाव-७०।-६०
र्यप्रकाशकुञ्जिलं-१।६५
दुग्धकूर्चम्- १।००

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते ।
तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ॥२५॥
अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।
तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ॥२६॥

---

८ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३८ सूर्यास्त ५ । ४२
पं० २६ माघ] 8 February [भा० माघ १९

प्रातः ६।१५ वादने गणेशचतुर्थीव्रत उत्थाय नित्यक्रि-
यां सम्पाद्य आगन्तुं अधीत्य विद्यालयमगच्छम्
विद्यालये द्य अरूपाधि विषयस्य पाठो नाभवत् ।
अतोऽहं पी. डी. कौशिक गृहे सुन्दरपुरं गतवान्
किन्तु कौशिक महाभागाः न प्राप्ताऽऽसन्
अतः प्रत्यागतोऽहम् ।

रिक्शा - ०।७५
अंगूलता - १।००
मालेश - ।३०
ज्ञान — ।३०
ड्डी - ०।६०
चं - ०१।८०

४० दिन] माघ शुक्ल ५ सोम [गीता गुरुणां

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च ।
तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ॥२७॥
अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥२८॥

पत्रद्वयं प्राप्तम्

९ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३८ सूर्यास्त ५ । ४३

पं० २७ माघ] 9 February [भा० माघ २०

श्रीवसन्तपञ्चमी

षड्वादने उत्थाय नित्यक्रियां समाप्य विश्वेश्वरं दर्शयित्वा सरस्वती पूजने सम्मिलतोऽभूवम् । भुक्त्वा पुस्तकानि क्रयार्थं आपणं गतोऽहम् । तत्पश्चात् शास्त्रीयकं श्रुत्वा अस्सीं व्रजित्वा वाग्देवीं दृष्ट्वा प्रसादं भुक्त्य तथा स्व प्रकाश यन्त्रपाङ्गे गृहीत्वा विद्यालये संगीतकार्यक्रमं श्रुत्वा भोजनादिकं कृत्वा १०वादने सुस्वाप ।

वीरागनार्थ—०।१०
मधुशाल्दे पुकला—३।२०
” ” प्रकाश(२ माह)—०।५०

कुन्दं— ०।०८

आश्चर्यवत्पश्यति कश्चिदेन-
माश्चर्यवद्वदति तथैव चान्यः ।
आश्चर्यवच्चैनमन्यः शृणोति
श्रुत्वाप्येनं वेद न चैव कश्चित् ॥२९॥

---

१० फरवरी] सूर्योदय ६ । ३७ सूर्यास्त ५ । ४४
पं० २८ माघ] 10 February [भा० माघ २१

पूर्ववत् प्रातः समुत्थाय नित्यक्रियां विधाय च
विश्वेशं दृष्ट्वा आगमनम् कृतम् । तत्पश्चात् प्रवि-
श्य लघु भुक्त्वा अवशिष्ट प्रतियोगित कार्यक्र-
मे अगच्छत् । चतुर्वादने कार्यक्रमं समाप्य
पुरस्कारादिकं वितरणं सम्पादितम् । तदनन्त-
रम् किञ्चिद्विश्रम्य पुनः संगीत कार्यक्रमे । श्री-
शंकर महोदयानां समक्षे ऽ आवेदयत् । अतः
पर भोजनादिकं कृत्वा स्वस्थाने विश्रामः

४२ दिन] माघ शुक्ल ७ बुध [गीता

देही नित्यमवध्योऽयं देहे सर्वस्य भारत ।
तस्मात्सर्वाणि भूतानि न त्वं शोचितुमर्हसि॥३०॥
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि ।
धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥

---

११ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३६ सूर्यास्त ५ । ४५

पं० २९ माघ] 11 February [भा० माघ २२

अद्य प्रातः अचलासप्तमीव्रत, रथसप्त..। वादने शय्यां
त्यक्त्वा नित्यक्रियां विधाय विद्यालयं
अगमम्। विलम्बाद् भागवत पठनार्पनगत।
तत्पश्चात् भोजनादिकं कृत्वा उत्तर प्रश्नं
विधाय विसर्जनम् संजातम्। तदनन्तरं
प्रदीप सनत्कुमारस्य च सरस्वती प्रश्नसौन्दूर्य
(टैप कृतम्) अतः परं मूर्ति प्रवाहं कृत्वा आने
येत पुस्तकानि क्रीतानि। अल्पपरं संभीत [illegible]
कृत्वा भोजनादिकं सम्पाद्य स्वस्थाने विश्राम [illegible]

आनन्दरामायण - 40.00	सुधाशतकोमर्थ - 2.00
कादम्बरी - 10.00	ज्ञानयोगस्य - 1.00
विवादपद्धति - 2.25	कर्मयोगस्य - 1.00
पतञ्जलिसूत्र - 0.60	मानसशास्त्र[illegible] - 0.[illegible]
[illegible]जीवनालाख्य - 3.00	भक्तिपंचरत्न 0.60

[illegible]

यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्॥३२॥
अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि।
ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि॥३३॥

प्रातः ६।४५ वादने उत्थाय । नित्य क्रियासम्पाद्य
१०।– वादने विद्यालयं गत्वा भोजनादिकं भक्ष्य
पुस्तकानि ग्रहीतुं हट्टे गतोऽहम् तत्रतः हि
पुस्तकानि ग्रहीतानि । [illegible] पुस्तकानि
[illegible] मिथिलेशायापि [illegible] तत्पश्चात् पी.डी. [illegible]
शेफगृहे भ्रमित्वा विद्यालये [illegible] आशीर्वाद [illegible]
आगतोऽहम्।

धर्मसिन्धु - ४०।०
अमरकोष - २।५०
[illegible] - ०।५०
गीता - ०।३०
[illegible] - ०।०५

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥
भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्॥३५॥

१३ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३५ सूर्यास्त ५ । ४६
पं० १ फाल्गुन २०३७] 13 February [भा० माघ २४

अद्य प्रातरुत्थाय नित्यक्रियां सम्पाद्य भागवतमधीतं तत्पश्चात् कियान्ति पुस्तकानि क्रीतानि। विद्यालये अध्याप्य पाठित्वा च असीं गतोऽहम्, परन्तु कार्यं नाभूत अतःपरं स्वस्थानमागत्य ...शकर्तुं गीतं आरितम्। स्नानादिकं कृत्वा भोजनादिकं कृत्वा सुष्वाप।

गीता श्रीधरी - ३।००-३०
ईशउपनिषद् - ४।००-४०
दानचन्द्रिका २।००-२०

आफ्रस्कर त: पत्र प्राप्तम् पुणे

अ० २] माघ शुक्ल १० शनि [दिन ४५

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्॥३६
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः॥३७॥

१४ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३४ सूर्यास्त ५ । ४७

पं० २ फाल्गुन] 14 February [भा० माघ २५

एकादशीव्रत (स्मार्त)

अद्य ५।१८ वादने समुत्थाय। तैलं सम्मर्दं विध
लास्नानादिकं कृत्वा अभावहमपठम्।
पश्चात् विद्यालये भोजनादिकं अशीत्वा
उपस्थितिं च दत्वा वि. विद्यालये गतौ। तत्रतो
लेखधांकं प्राप्तम्। आवेदने नपूरितम्।

[illegible]

४६ दिन] माघ शुक्ल १२ रवि [गीता

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ।
ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥३८॥
एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु।
बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि।३९।

---

१५ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३३ सूर्यास्त ५ । ४७
पं॰ ३ फाल्गुन] 15 February [भा॰ माघ २६

एकादशीव्रत (वैष्णव)

अद्य श्रीऽयं वि॰ विद्यालयं गतौ। तत्र तः केवलं
आवेदनं पत्रं गृहीत्वा आगतौ अन्यात् किमपि
कार्यं नाभवत । शुक्लाचित्रायां २४+१=२५
रु॰ मिथिलेशाय प्रदत्तः।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥४०॥
व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन।
बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम्॥४१॥

१६ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३३ सूर्यास्त ५ । ४८
पं० ४ फाल्गुन] 16 February [भा० माघ २७

सोमप्रदोष

१२.०) रु. धनादेश कार्यालयतः प्राप्तम् मार्गव्ययार्थं
अपराह्ने ४ वादने प्रस्थानं कृतम्।

४८ [दिन] माघ शुक्ल १४ मंगल [गीता

यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः ।
वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥४२॥
कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम् ।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥

---

१७ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३२ सूर्यास्त ५ । ४८
पं० ५ फाल्गुन] 17 February [भा० माघ २८

कर्णवासे एरवादेन सम्प्राप्तम् ।

रात्रिविश्रामो दिल्ली मोटरस्टैण्डे

E.K. Sharma

भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
व्यवसायात्मिका बुद्धिः समाधौ न विधीयते॥४४॥
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।
निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्॥

माघस्नान समाप्त

रात्रि विश्रामो दिल्ली मेलयाने अहमदाबाद
कीर्तिभानु शर्मा

फाल्गुन कृष्ण १ गुरु वि० सं० २०३७ श्रीकृष्ण-सं० ५२०६

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥४७॥

१९ फरवरी] सूर्योदय ६ । ३१ सूर्यास्त ५ । ५०
पं० ७ फाल्गुन] 19 February [भा० माघ ३०

K.K Sharma

योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते
दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय।
बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः॥४९॥

---

२० फरवरी] सूर्योदय ६ । ३० सूर्यास्त ५ । ५०
पं० ८ फा०] 20 February [भा० फा० १ शक १९०२

रात्रिविश्रामो मोरवी नगरे राजकोटे

K. K. Sharma

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते।
तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम् ५०
कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः।
जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ५१

२१ फरवरी] सूर्योदय ६।२९ सूर्यास्त ५।५१

पं० ९ फाल्गुन] 21 February [भा० फाल्गुन २

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥५२॥
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला।
समाधावचला बुद्धिस्तदा योगमवाप्स्यसि॥५३॥

२२ फरवरी] सूर्योदय ६ । २८ सूर्यास्त ५ । ५२
पं० १० फाल्गुन] 22 February [भा० फाल्गुन ३

गणेशचतुर्थीव्रत

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ५४

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान् पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते॥५५॥

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५७॥

---

२४ फरवरी] सूर्योदय ६ । २६ सूर्यास्त ५ । ५३
पं० १२ फाल्गुन] 24 February [भा० फाल्गुन ५

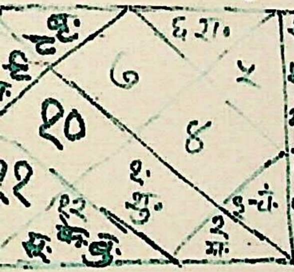

सं. २०१५ फाल्गुन शुक्ला ८ अंक
२०।।५० मृग.ध. ५३।।२४ आयुष्मान
योगे ५४।।१२ विष्टी करणे २६।।१३
दिनमान २८।।४० मीनार्क गतांश
०३ इष्ट ३८।।२०।।३० तुल लग्न
मृगशिर के ४ पादे जन्म

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥५८॥
विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते॥५९॥

---

२५ फरवरी] सूर्योदय ६ । २५ सूर्यास्त ५ । ५४
पं० १२ फाल्गुन] 25 February [भा० फाल्गुन ६

यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥६०॥
तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥६१॥

५८ दिन] फाल्गुन कृष्ण ८ शुक्र [गीता

ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥
क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥

---

२७ फरवरी] सूर्योदय ६ । २३ सूर्यास्त ५ । ५५
पं० १५ फाल्गुन] 27 February [भा० फाल्गुन ८

जानकीजयन्ती

रात्रीविश्रामो मोरवीनगरे
K K Sharma

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥६४॥
प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते॥६५॥

---

२८ फरवरी] सूर्योदय ६ । २२ सूर्यास्त ५ । ५६
पं० १६ फाल्गुन] 28 February [भा० फाल्गुन ९

२५०/रु. दक्षिणा रूपेण प्राप्तम् । सायं
प्रस्थानं कृतम्

रात्रौ विश्रामो मोरवी अहमदाबाद रेलयाने

KGS

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम्॥
इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥६७॥

१ मार्च १९८१] सूर्योदय ६ । २२ सूर्यास्त ५ । ५६
पं० १७ फाल्गुन] 1 March 1981 [भा० फा० १०

नई दिल्ली अहमदाबाद दिल्ली रेल यात्रा
KKSh

तस्माद्यस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता। ६८।
या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥

२ मार्च] सूर्योदय ६।१९ सूर्यास्त ५।५७
पं० १८ फाल्गुन] 2 March [भा० फाल्गुन ११

एकादशीव्रत

एकादश ११ कृ. दण्ड ५ पल ० ॥ द च : रेलाधिकारी
बस- ८।४५ रात्रौ १२बादके कक्षसम्पन्नाः

रात्रीविश्राम : कपखाना

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं
समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिमाप्नोति न कामकामी॥७०॥

---

३ मार्च] सूर्योदय ६।१६ सूर्यास्त ५।५८

पं० १९ फाल्गुन] 3 March [भा० फाल्गुन १२

अमोघशिवकवच - ०।६०
महात्माविदुर - ०।१२५
भक्तध्रुव - ०।१२५
" सौरभ - ०।४०
" चन्द्रिका - ०।४०
" नारी - ०।४०
मंजूषाप्रकाश - २।००
टिकिट - ०।१२५

मंजूषाप्रकाश एक मैं जमाय
हिताय आशै प्रेषितम्।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति॥७१॥
एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे सांख्ययोगो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

---

४ मार्च] सूर्योदय ६ । १६ सूर्यास्त ५ । ५९
पं० २० फाल्गुन] 4 March [भा० फाल्गुन १३

— २१२५ महाशिवरात्रिव्रत, प्रदोष

२३) रु० अभिषेके संप्राप्तम्

अनुक्रमाङ्क - ५०७

तृतीयोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ज्यायसी चेत्कर्मणस्ते मता बुद्धिर्जनार्दन।
तत्किं कर्मणि घोरे मां नियोजयसि केशव॥ १॥
व्यामिश्रेणेव वाक्येन बुद्धिं मोहयसीव मे।
तदेकं वद निश्चित्य येन श्रेयोऽहमाप्नुयाम्॥ २॥

---

५ मार्च] सूर्योदय ६ । १६ सूर्यास्त ५ । ५९
पं० २१ फाल्गुन] 5 March [भा० फाल्गुन १४

लेखनी - ४।०० फाल्गुन कृष्ण १४ गुरु .
मंजूषारहस्य - १।६०
परिभा॰दीपिका - २।००

श्रीभगवानुवाच

लोकेऽस्मिन्द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ।
ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥३॥
न कर्मणामनारम्भान्नैष्कर्म्यं पुरुषोऽश्नुते।
न च संन्यसनादेव सिद्धिं समधिगच्छति ॥४॥

---

६ मार्च] सूर्योदय ६ । १५ सूर्यास्त ५ । ५९
पं० २२ फाल्गुन] 6 March [भा० फाल्गुन १५

अमावास्या

प्रेममञ्जरी २-९६-२०
विष्णुसहस्रनामावली -१.२५
प्रेमदर्शन — ०.५०
तत्त्वचिन्तामणि -१.००
स्त्रीधर्मप्रश्नोत्तरी -०.२५
परिभाषेन्दुशेखरपञ्जिका -३.२०
द्राक्षा — १.००
इक्षुरस — ०.५०
टिकिट — ०.२५

भारतीय राज्याधिकोषे चतुश्शतानि रूप्यकाणि सञ्चितानि सन्ति । तेषां मध्ये आरक्षणम् एकस्मै जनाय दत्तं भ्रात्रे प्रेषितम् । पूर्वप्रदत्तं एक बार्ट रूप्यकाणि सम्प्राप्तानि ।

न हि कश्चित्क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत् ।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः ॥५॥
कर्मेन्द्रियाणि संयम्य य आस्ते मनसा स्मरन् ।
इन्द्रियार्थान्विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्यते॥

७ मार्च] सूर्योदय ६ । १४ सूर्यास्त ६ । ०
पं० २३ फाल्गुन] 7 March [भा० फाल्गुन १६

यस्त्विन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन।
कर्मेन्द्रियैः कर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते ॥७॥
नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥८॥

८ मार्च] सूर्योदय ६ । १४ सूर्यास्त ६ । ०
पं० २४ फाल्गुन] 8 March [भा० फाल्गुन १७

संस्कृतगानमाला - १·००
दुग्धम् — ०·६०
दधि —— ०·३०
अद्य परीक्षार्थं सर्वे छात्राः गताः परन्तु राज्य-
पालादेशात् सर्वं परीक्षा निरस्ता कृता।
अतः परीक्षार्थिनां महती हानिरभूत। अतस्तै
आन्दोलनं नारे बाजी इत्यादिकं, कुलपतेश्च
गृहं आवृतं नियोजितम्। अतः कुलप
लक्ष्मणपुरं गतः।

यज्ञार्थात्कर्मणोऽन्यत्र लोकोऽयं कर्मबन्धनः।
तदर्थं कर्म कौन्तेय मुक्तसङ्गः समाचर॥९॥
सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेषवोऽस्त्विष्टकामधुक्॥१०॥

९ मार्च] सूर्योदय ६ । १३ सूर्यास्त ६ । १
पं० २५ फाल्गुन] 9 March [भा० फाल्गुन १८

गणेशचतुर्थीव्रतं

अद्य काले नमिष्ठान्नं भक्षायितं १०।४० रु. ...

मुगलसराय पत्रं प्रेषितम्

अ० ३] फाल्गुन शुक्ल ४ मंगल [दिन ६९

देवान्भावयतानेन ते देवा भावयन्तु वः।
परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ ॥११॥
इष्टान्भोगान्हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः।
तैर्दत्तानप्रदायैभ्यो यो भुङ्क्ते स्तेन एव सः॥१२॥

१० मार्च] सूर्योदय ६ । ११ सूर्यास्त ६ । १
पं० २६ फाल्गुन] 10 March [भा० फाल्गुन १९

रिक्शा - १.५०
दन्त धावन - ०।१०

पत्रंद्राम

यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः।
भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्॥१३॥
अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसंभवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥१४॥

ईक्षुरस - १।००

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् ॥१५॥
एवं प्रवर्तितं चक्रं नानुवर्तयतीह यः।
अघायुरिन्द्रियारामो मोघं पार्थ स जीवति ॥१६॥

किशा-१।००
सन्तरा -०।२५
द्राक्ष -१।००
दुग्ध- १।२५

यस्त्वात्मरतिरेव स्यादात्मतृप्तश्च मानवः।
आत्मन्येव च संतुष्टस्तस्य कार्यं न विद्यते ॥१७॥
नैव तस्य कृतेनार्थो नाकृतेनेह कश्चन।
न चास्य सर्वभूतेषु कश्चिदर्थव्यपाश्रयः ॥१८॥

१३ मार्च] सूर्योदय ६ । ८ सूर्यास्त ६ । ४

बालशिक्षा-0122

तस्मादसक्तः सततं कार्यं कर्म समाचर।
असक्तो ह्याचरन्कर्म परमाप्नोति पूरुषः॥१९॥
कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापि संपश्यन्कर्तुमर्हसि॥२०॥

---

१४ मार्च] सूर्योदय ६ । ७ सूर्यास्त ६ । ४
पं० २० फाल्गुन] 14 March [भा० फाल्गुन २३

बस - ०।३०
गोधूम - दी।२५
पेट्रोल - ०।७५
आलूके - ०।६०
रत्नागं - ०।२५
धान्यक - ०।१०
जीरक - ०।२५
कर्शोधन ०।५०

७४ दिन] फाल्गुन शुक्ल १० रवि [गीता

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः ।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते ॥२१॥
न मे पार्थास्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किंचन ।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त एव च कर्मणि ॥२२॥

---

१५ मार्च] सूर्योदय ६ । ६ सूर्यास्त ६ । ४
पं० १ चैत्र सं० २०३७] 15 March [भा० फाल्गुन २४

रजमाये - ११००
पदयावन - ०११५

यदि ह्यहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्द्रितः ।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥२३॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्यां कर्म चेदहम् ।
संकरस्य च कर्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ॥२४॥

१६ मार्च] सूर्योदय ६ । ५ सूर्यास्त ६ । ५
पं० २ चैत्र] 16 March [भा० फाल्गुन २५

आलूकं - १।००
रस्कागे - ०।३७
सार्वपर्तन - १।४०
श्रीकृष्णगीतावली - ०।४०
भजनसंग्रह (२भाग) - ०।२५
नारीधर्म - ०।१५
स्वास्थ्यसम्मानऔरसुख - ०।१५
बृहद्अनित्यकर्मसमुच्चय १।६।००
रपान हौ चप्पल - १।५।००
कौरोमी - १।७०

एकादशीव्रत
स्पोतकान्य १२ रु० व्यासाप
दत्तम् ।

७६ दिन] फाल्गुन शुक्ल १२ मंगल [गीता

सक्ताःकर्मण्यविद्वांसो यथा कुर्वन्ति भारत।
कुर्याद्विद्वांस्तथासक्तश्चिकीर्षुर्लोकसंग्रहम्॥२५॥
न बुद्धिभेदं जनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम्।
जोषयेत्सर्वकर्माणि विद्वान्युक्तःसमाचरन् ॥२६॥

१७ मार्च] सूर्योदय ६ । ४ सूर्यास्त ६ । ५

पं० ३ चैत्र] 17 March [भा० फाल्गुन २६

भौमप्रदोष

ईक्षुरस - १।००
रक्तांगं - ०।२५
गुंजन - ०।२०
जम्बीरे - ०।३०
पुष्प - ०।२५

प्रकृतेः क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।
अहंकारविमूढात्मा कर्ताहमिति मन्यते ॥२७॥
तत्त्ववित्तु महाबाहो गुणकर्मविभागयोः।
गुणा गुणेषु वर्तन्त इति मत्वा न सज्जते ॥२८॥

निम्बुक — ००।२५
आर्क फेनिल — २।००
एरण्ड — ०।६७

७८ दिन] फाल्गुन शुक्ल १४ गुरु [गीता

प्रकृतेर्गुणसंमूढाः सज्जन्ते गुणकर्मसु ।
तानकृत्स्नविदो मन्दान्कृत्स्नविन्न विचालयेत् ।२९।
मयि सर्वाणि कर्माणि संन्यस्याध्यात्मचेतसा ।
निराशीर्निर्ममो भूत्वा युध्यस्व विगतज्वरः ॥३०॥

१९ मार्च] सूर्योदय ६ । २ सूर्यास्त ६ । ६
पं० ५ चैत्र] 19 March [भा० फाल्गुन २८

कार्यक्रम - [illegible]

रात्रि विश्राम: [illegible]

ये मे मतमिदं नित्यमनुतिष्ठन्ति मानवाः।
श्रद्धावन्तोऽनसूयन्तो मुच्यन्ते तेऽपि कर्मभिः ॥
ये त्वेतदभ्यसूयन्तो नानुतिष्ठन्ति मे मतम्।
सर्वज्ञानविमूढांस्तान्विद्धि नष्टानचेतसः ॥३२॥

२० मार्च] सूर्योदय ६ । १ सूर्यास्त ६ । ७
पं० ६ चैत्र] 20 March [भा० फाल्गुन २९

अबीर — १।०० पूर्णिमा, होलिकादाह
...टे — १।००
...त्तरा — २।००

रात्रि विश्राम मुगलसराय

चैत्र कृष्ण १ शनि वि० सं० २०३७ श्रीकृष्ण-सं० ५२०६

सदृशं चेष्टते स्वस्याः प्रकृतेर्ज्ञानवानपि ।
प्रकृतिं यान्ति भूतानि निग्रहः किं करिष्यति ॥३३॥
इन्द्रियस्येन्द्रियस्यार्थे रागद्वेषौ व्यवस्थितौ ।
तयोर्न वशमागच्छेत्तौ ह्यस्य परिपन्थिनौ ॥३४॥

२१ मार्च] सूर्योदय ५ । ५९ सूर्यास्त ६ । ८
पं० ७ चैत्र] 21 March [भा० फाल्गुन ३०

वसन्तोत्सव

[illegible] - ०.१६०
दूध - २.१६८ [illegible]
[illegible]

[illegible]

गौरी तोश्रात्नुः पत्रं प्राप्तम्

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः ॥३५॥

अर्जुन उवाच

अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पुरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः ॥३६॥

२२ मार्च] सूर्योदय ५। ५८ सूर्यास्त ६। ८
पं० ८ चैत्र] 22 March [भा० चैत्र १ शक १९०२

माजशाळली — १।५०
दुग्धं — १।८०
,, — ०।७५

श्रीभगवानुवाच

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।३७।
धूमेनाव्रियते वह्निर्यथादर्शो मलेन च।
यथोल्बेनावृतो गर्भस्तथा तेनेदमावृतम् ॥३८॥

अमरकोष- २।०० ब्रह्मचारी सर्वेश्वरानन्देन
सप्तरा —०।५० [illegible]
आध्यात्मिक [illegible] ००।६०

आवृतं ज्ञानमेतेन ज्ञानिनो नित्यवैरिणा।
कामरूपेण कौन्तेय दुष्पूरेणानलेन च ॥३९॥
इन्द्रियाणि मनो बुद्धिरस्याधिष्ठानमुच्यते।
एतैर्विमोहयत्येष ज्ञानमावृत्य देहिनम् ॥४०॥

२४ मार्च] सूर्योदय ५ । ५६ सूर्यास्त ६ । ९
पं० १० चैत्र] 24 March [भा० चैत्र ३

गणेशचतुर्थीव्रत

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम् ॥४१॥
इन्द्रियाणि पराण्याहुरिन्द्रियेभ्यःपरं मनः।
मनसस्तु परा बुद्धिर्यो बुद्धेः परतस्तु सः ॥४२॥

---

२५ मार्च] सूर्योदय ५ । ५५ सूर्यास्त ६ । ९
पं० ११ चैत्र] 25 March [भा० चैत्र ४

मुद्गल हिंदा -।६५
अलाबू —०।७५
शालिभाय —०।३०
पंत्री —।४०

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा संस्तभ्यात्मानमात्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो कामरूपं दुरासदम् ॥४३॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मयोगो
नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

ॐ

चतुर्थोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम् ।
विवस्वान्मनवे प्राह मनुरिक्ष्वाकवेऽब्रवीत् ॥ १ ॥
एवं परम्पराप्राप्तमिमं राजर्षयो विदुः ।
स कालेनेह महता योगो नष्टः परंतप ॥ २ ॥

२७ मार्च] सूर्योदय ५ । ५३ सूर्यास्त ६ । १०
पं० १२ चैत्र] 27 March [भा० चैत्र ६

चैत्र कृष्ण ६ शुक्र

ञात्रि विश्राम: कर्देमेश्वरे ।

अ० ४] चैत्र कृष्ण ७ शनि [दिन ८७

स एवायं मया तेऽद्य योगः प्रोक्तः पुरातनः ।
भक्तोऽसि मे सखा चेति रहस्यं ह्येतदुत्तमम् ॥ ३ ॥

अर्जुन उवाच

अपरं भवतो जन्म परं जन्म विवस्वतः ।
कथमेतद्विजानीयां त्वमादौ प्रोक्तवानिति ॥ ४ ॥

---

२८ मार्च] सूर्योदय ५ । ५२ सूर्यास्त ६ । ११

पं० १४ चैत्र] 28 March [भा० चैत्र ७

रा.डी-विश्रान्ती भीम चव्हाण

श्रीभगवानुवाच

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप ॥ ५ ॥
अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय संभवाम्यात्ममायया ॥ ६ ॥

२९ मार्च] सूर्योदय ५ । ५० सूर्यास्त ६ । १२
पं० १५ चैत्र] 29 March [भा० चैत्र ८

शीतलाष्टमी

गणि विष्णो रामेश्वरे

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ ७ ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ ८ ॥

३० मार्च] सूर्योदय ५ । ४९ सूर्यास्त ६ । १२
पं० १६ चैत्र] 30 March [भा० चैत्र ९

रा. ब्रि. विष्णु शिवपुरे

जन्म कर्म च मे दिव्यमेवं यो वेत्ति तत्त्वतः।
त्यक्त्वा देहं पुनर्जन्म नैति मामेति सोऽर्जुन॥९॥
वीतरागभयक्रोधा मन्मया मामुपाश्रिताः।
बहवो ज्ञानतपसा पूता मद्भावमागताः॥१०॥

रात्रि-विश्राम: कपिलधारा में

ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्।
मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः ॥११॥
काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा॥१२॥

१ अप्रैल १९८१] सूर्योदय ५।४७ सूर्यास्त ६।१२
पं० १८ चैत्र] 1 April 1931 [भा० चैत्र ११

एकादशीव्रत

रात्रि विश्राम:- फारबिस

९२ दिन] चैत्र कृष्ण १२ गुरु [गीता

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।
तस्य कर्तारमपि मां विद्ध्यकर्तारमव्ययम् ॥१३॥
न मां कर्माणि लिम्पन्ति न मे कर्मफले स्पृहा।
इति मां योऽभिजानाति कर्मभिर्न स बध्यते॥१४॥

२ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४६ सूर्यास्त ६ । १२
पं० १९ चैत्र] 2 April [भा० चैत्र १२

वारुणीपर्व, प्रदोष

यहपत्र २ - ८० १०० रु.

राज्याधिकोषात् २००) रु. निकासीत:

१४०) रु. लालचन्द्रते दत्तम्

१०) रु. छात्रोपि प्रदत्तम्

५०) रु. [illegible]

एवं ज्ञात्वा कृतं कर्म पूर्वैरपि मुमुक्षुभिः ।
कुरु कर्मैव तस्मात्त्वं पूर्वैः पूर्वतरं कृतम् ॥१५॥
किं कर्म किमकर्मेति कवयोऽप्यत्र मोहिताः ।
तत्ते कर्म प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥

अद्य मध्याह्न १२ वादने प्रस्थितोऽस्मि ।

रात्रिविश्रामः काशीविश्वनाथपरें [illegible]

कर्मणो ह्यपि बोद्धव्यं बोद्धव्यं च विकर्मणः ।
अकर्मणश्च बोद्धव्यं गहना कर्मणो गतिः ॥१७॥
कर्मण्यकर्म यः पश्येदकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान्मनुष्येषु स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥१८॥

४ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४४ सूर्यास्त ६ । १४
पं० २१ चैत्र] 4 April [भा० चैत्र १४

अमावास्या

रात्रि मे आगे गोरखपुरे (ट्रेनमें)

चैत्र शुक्ल १ रवि वि० सं० २०३८ श्रीकृष्ण-सं० ५२०७

यस्य सर्वे समारम्भाः कामसंकल्पवर्जिताः ।
ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं तमाहुः पण्डितं बुधाः ॥१९॥
त्यक्त्वा कर्मफलासङ्गं नित्यतृप्तो निराश्रयः ।
कर्मण्यभिप्रवृत्तोऽपि नैव किंचित्करोति सः ॥२०॥

---

५ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४२ सूर्यास्त ६ । १५
पं० २२ चैत्र] 5 April [भा० चैत्र १५

निराशीर्यतचित्तात्मा त्यक्तसर्वपरिग्रहः।
शारीरं केवलं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्॥२१॥
यदृच्छालाभसंतुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः।
समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते॥२२॥

६ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४२ सूर्यास्त ६ । १६
पं० २३ चैत्र] 6 April [भा० चैत्र १६

गतसङ्गस्य मुक्तस्य ज्ञानावस्थितचेतसः।
यज्ञायाचरतः कर्म समग्रं प्रविलीयते ॥२३॥
ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम्।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥२४॥

७ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ४१ सूर्यास्त ६ । १६
पं० २४ चैत्र] 7 April [भा० चैत्र १७

दैवमेवापरे यज्ञं योगिनः पर्युपासते।
ब्रह्माग्नावपरे यज्ञं यज्ञेनैवोपजुह्वति ॥२५॥
श्रोत्रादीनीन्द्रियाण्यन्ये संयमाग्निषु जुह्वति।
शब्दादीन्विषयानन्य इन्द्रियाग्निषु जुह्वति॥२६॥

८ अप्रैल] सूर्योदय ५।३९ सूर्यास्त ६।१७
पं० २५ चैत्र] 8 April [भा० चैत्र १८

*

सर्वाणीन्द्रियकर्माणि प्राणकर्माणि चापरे।
आत्मसंयमयोगाग्नौ जुह्वति ज्ञानदीपिते ॥२७॥
द्रव्ययज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथापरे।
स्वाध्यायज्ञानयज्ञाश्च यतयः संशितव्रताः ॥२८॥

अपाने जुह्वति प्राणं प्राणेऽपानं तथापरे ।
प्राणापानगती रुद्ध्वा प्राणायामपरायणाः॥२९॥
अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति ।
सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः ॥३०॥

१० अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३७ सूर्यास्त ६ । १८
पं० २७ चैत्र] 10 April [भा० चैत्र २०

यज्ञशिष्टामृतभुजो यान्ति ब्रह्म सनातनम्।
नायं लोकोऽस्त्ययज्ञस्य कुतोऽन्यः कुरुसत्तम ३१
एवं बहुविधा यज्ञा वितता ब्रह्मणो मुखे।
कर्मजान्विद्धि तान्सर्वानेवं ज्ञात्वा विमोक्ष्यसे।३२।

---

१०२ दिन] चैत्र शुक्ल ८ रवि [गीता

श्रेयान्द्रव्यमयाद्यज्ञाज्ज्ञानयज्ञः परंतप ।
सर्वं कर्माखिलं पार्थ ज्ञाने परिसमाप्यते ॥३३॥
तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया ।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्त्वदर्शिनः ॥३४॥

१२ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३५ सूर्यास्त ६ । १८

पं० २९ चैत्र] 12 April [भा० चैत्र २२

श्रीरामनवमीव्रत

यज्ज्ञात्वा न पुनर्मोहमेवं यास्यसि पाण्डव।
येन भूतान्यशेषेण द्रक्ष्यस्यात्मन्यथो मयि ॥३५॥
अपि चेदसि पापेभ्यः सर्वेभ्यः पापकृत्तमः ।
सर्वं ज्ञानप्लवेनैव वृजिनं संतरिष्यसि ॥३६॥

१३ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३४ सूर्यास्त ६ । १९
पं० ३० चैत्र] 13 April [भा० चैत्र २३

मेषसंक्रान्ति

१०४ दिन] चैत्र शुक्ल १० मंगल [गीता

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरुते तथा ॥ ३७ ॥
न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥ ३८ ॥

---

१४ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३३ सूर्यास्त ६ । १९
पं० १ वैशाख सं० २०३८] 14 April [भा० चैत्र २४

रात्रिविश्रामः इन्द्रप्रस्थे

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः ।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ३९
अज्ञश्चाश्रद्दधानश्च संशयात्मा विनश्यति ।
नायं लोकोऽस्ति न परो न सुखं संशयात्मनः ४०

१५ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३२ सूर्यास्त ६ । १९
पं० २ वैशाख] 15 April [भा० चैत्र २५

एकादशीव्रत

योगसंन्यस्तकर्माणं ज्ञानसंछिन्नसंशयम् ।
आत्मवन्तं न कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ॥४१॥
तस्मादज्ञानसंभूतं हृत्स्थं ज्ञानासिनात्मनः ।
छित्त्वैनं संशयं योगमातिष्ठोत्तिष्ठ भारत ॥४२॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानकर्मसंन्यास-योगो नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

---

१६ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३१ सूर्यास्त ६ । २०
पं० ३ वैशाख] 16 April [भा० चैत्र २६

प्रदोष

ॐ

पञ्चमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासं कर्मणां कृष्ण पुनर्योगं च शंससि ।
यच्छ्रेय एतयोरेकं तन्मे ब्रूहि सुनिश्चितम् ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

संन्यासः कर्मयोगश्च निःश्रेयसकरावुभौ ।
तयोस्तु कर्मसंन्यासात्कर्मयोगो विशिष्यते ॥ २ ॥

१७ अप्रैल] सूर्योदय ५ । ३० सूर्यास्त ६ । २०
पं० ४ वैशाख] 17 April [भा० चैत्र २७

चैत्र शुक्ल १२ शुक्र

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति ।
निर्द्वन्द्वो हि महाबाहो सुखं बन्धात्प्रमुच्यते ॥३॥
सांख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः ।
एकमप्यास्थितःसम्यगुभयोर्विन्दते फलम् ॥ ४ ॥

---

१८ अप्रैल] सूर्योदय ५ । २९ सूर्यास्त ६ । २१
पं० ५ वैशाख] 18 April [भा० चैत्र २८

यत्सांख्यैः प्राप्यते स्थानं तद्योगैरपि गम्यते ।
एकं सांख्यं च योगं च यः पश्यति स पश्यति ॥५॥
संन्यासस्तु महाबाहो दुःखमाप्तुमयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर्ब्रह्म नचिरेणाधिगच्छति ॥ ६ ॥

१९ अप्रैल] सूर्योदय ५ । २९ सूर्यास्त ६ । २१
पं० ६ वैशाख] 19 April [भा० चैत्र २९

हनुमज्जयन्ती, वैशाखस्नानारम्भ

योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः ।
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ॥७॥
नैव किंचित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित् ।
पश्यञ्शृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वपञ्श्वसन्॥

२० अप्रैल] सूर्योदय ५ । २८ सूर्यास्त ६ । २२
पं० ७ वैशाख] 20 April [भा० चैत्र ३०

पादुका - ७१००

रात्रि विश्राम भोजन कुम्हाराना
की तिकोना

प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ ९ ॥
ब्रह्मण्याधाय कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन पद्मपत्रमिवाम्भसा ॥१०॥

कायेन मनसा बुद्ध्या केवलैरिन्द्रियैरपि ।
योगिनः कर्म कुर्वन्ति सङ्गं त्यक्त्वात्मशुद्धये ।११।
युक्तः कर्मफलं त्यक्त्वा शान्तिमाप्नोति नैष्ठिकीम् ।
अयुक्तः कामकारेण फले सक्तो निबध्यते ॥१२॥

२२ अप्रैल] सूर्योदय ५ । २६ सूर्यास्त ६ । २३
पं० ९ वैशाख] 22 April [भा० वैशाख २

गणेशचतुर्थीव्रत

रात्रौ विश्राम: कर्णवासे

K. K. Sharma

सर्वकर्माणि मनसा संन्यस्यास्ते सुखं वशी।
नवद्वारे पुरे देही नैव कुर्वन्न कारयन् ॥१३॥
न कर्तृत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः।
न कर्मफलसंयोगं स्वभावस्तु प्रवर्तते ॥१४॥

२३ अप्रैल] सूर्योदय ५ । २५ सूर्यास्त ६ । २४
पं० १० वैशाख] 23 April [भा० वैशाख ३

आर्सीता गुरवः आगता:

नादत्ते कस्यचित्पापं न चैव सुकृतं विभुः।
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन मुह्यन्ति जन्तवः ॥१५॥
ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः।
तेषामादित्यवज्ज्ञानं प्रकाशयति तत्परम् ॥१६॥

---

२४ अप्रैल] सूर्योदय ५ । २३ सूर्यास्त ६ । २४
पं० ११ वैशाख] 24 April [भा० वैशाख ४

गुरवो मद्गुरु अलङ्कृतः /
केशकर्तनम् - ।। ८०

रात्रि । वैश्रमांजनं श्रीरामकं

तद्बुद्धयस्तदात्मानस्तन्निष्ठास्तत्परायणाः।
गच्छन्त्यपुनरावृत्तिं ज्ञाननिर्धूतकल्मषाः ॥१७॥
विद्याविनयसंपन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि।
शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः ॥१८॥

अद्य: ड्रातीना एतन्मन्त्रजपप्रारम्भः १०००

११६ दिन] वैशाख कृष्ण ७ रवि [गीता

इहैव तैर्जितः सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः ।
निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः ॥१९॥
न प्रहृष्येत्प्रियं प्राप्य नोद्विजेत्प्राप्य चाप्रियम् ।
स्थिरबुद्धिरसंमूढो ब्रह्मविद् ब्रह्मणि स्थितः ॥२०॥

---

२६ अप्रैल] सूर्योदय ५ । २२ सूर्यास्त ६ । २६

पं० १३ वैशाख] 26 April [भा० वैशाख ६

अर्थ (५०००)

बाह्यस्पर्शेष्वसक्तात्मा विन्दत्यात्मनि यत्सुखम्।
स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा सुखमक्षयमश्नुते ॥२१॥
ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः ॥२२॥

११८ दिन] वैशाख कृष्ण ९ मंगल [गीता

शक्नोतीहैव यः सोढुं प्राक्शरीरविमोक्षणात् ।
कामक्रोधोद्भवं वेगं स युक्तः स सुखी नरः ॥२३॥
योन्तःसुखोऽन्तरारामस्तथान्तर्ज्योतिरेव यः ।
स योगी ब्रह्मनिर्वाणं ब्रह्मभूतोऽधिगच्छति ॥२४॥

---

२८ अप्रैल] सूर्योदय ५ । २० सूर्यास्त ६ । २७
पं० १५ वैशाख] 28 April [भा० वैशाख ८

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः॥२५॥
कामक्रोधवियुक्तानां यतीनां यतचेतसाम्।
अभितो ब्रह्मनिर्वाणं वर्तते विदितात्मनाम्॥२६॥

ई ७००

स्पर्शान्कृत्वा बहिर्बाह्यांश्चक्षुश्चैवान्तरे भ्रुवोः ॥
प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ ॥
यतेन्द्रियमनोबुद्धिर्मुनिर्मोक्षपरायणः ।
विगतेच्छाभयक्रोधो यः सदा मुक्त एव सः ।२८।

३० अप्रैल] सूर्योदय ५ । १९ सूर्यास्त ६ । २८
पं० १७ वैशाख] 30 April [भा० वैशाख १०

2000

एकादशीव्रत

अद्य 2500 पितृ...न ...

वेदपारायण

भोक्तारं यज्ञतपसां सर्वलोकमहेश्वरम्।
सुहृदं सर्वभूतानां ज्ञात्वा मां शान्तिमृच्छति॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे कर्मसंन्यास-योगो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

---

१ मई १९८१] सूर्योदय ५ । १८ सूर्यास्त ६ । २८
पं० १८ वैशाख] 1 May 1981 [भा० वैशाख ११

ॐ

षष्ठोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः॥ १॥
यं संन्यासमिति प्राहुर्योगं तं विद्धि पाण्डव।
न ह्यसंन्यस्तसंकल्पो योगी भवति कश्चन॥ २॥

२ मई] सूर्योदय ५ । १७ सूर्यास्त ६ । ३९
पं० १९ वैशाख] 2 May [भा० वैशाख १२

२५०० वैशाख कृष्ण १३ शनि, शनिप्रदोष

२५००

सनदे कुमार पत्रं ग्रीवान

अ० ६] वैशाख कृष्ण १४ रवि [दिन १२३

आरुरुक्षोर्मुनेर्योगं कर्म कारणमुच्यते।
योगारूढस्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥ ३ ॥
यदा हि नेन्द्रियार्थेषु न कर्मस्वनुषज्जते।
सर्वसंकल्पसंन्यासी योगारूढस्तदोच्यते ॥ ४ ॥

---

३ मई] सूर्योदय ५ । १७ सूर्यास्त ६ । २९
पं० २० वैशाख] 3 May [भा० वैशाख १३

2000

उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥ ५ ॥
बन्धुरात्मात्मनस्तस्य येनात्मैवात्मना जितः।
अनात्मनस्तु शत्रुत्वे वर्तेतात्मैव शत्रुवत्॥ ६॥

४ मई] सूर्योदय ५। १६ सूर्यास्त ६। ३०
पं० २१ वैशाख] 4 May [भा० वैशाख १४

३५००

जितात्मनःप्रशान्तस्य परमात्मासमाहितः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु तथा मानापमानयोः ॥ ७ ॥
ज्ञानविज्ञान तृप्तात्मा कूटस्थो विजितेन्द्रियः।
युक्त इत्युच्यते योगी समलोष्टाश्मकाञ्चनः ॥८॥

५ मई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ३१
पं० २२ वैशाख] 5 May [भा० वैशाख १५

२००

सुहृन्मित्रार्युदासीनमध्यस्थद्वेष्यबन्धुषु ।
साधुष्वपि च पापेषु समबुद्धिर्विशिष्यते ॥९॥
योगी युञ्जीत सततमात्मानं रहसि स्थितः ।
एकाकी यतचित्तात्मा निराशीरपरिग्रहः ॥१०॥

६ मई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ३२
पं० २३ वैशाख] 6 May [भा० वैशाख १६

अक्षयतृतीया

3500

शुचौ देशे प्रतिष्ठाप्य स्थिरमासनमात्मनः।
नात्युच्छ्रितं नातिनीचं चैलाजिनकुशोत्तरम्।११।
तत्रैकाग्रं मनः कृत्वा यतचित्तेन्द्रियक्रियः।
उपविश्यासने युञ्ज्याद्योगमात्मविशुद्धये॥१२॥

७ मई] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ३२
पं० २४ वैशाख] 7 May [भा० वैशाख १७

8 200

गणेशचतुर्थीव्रत

समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलं स्थिरः।
संप्रेक्ष्य नासिकाग्रं स्वं दिशश्चानवलोकयन्॥१३॥
प्रशान्तात्मा विगतभीर्ब्रह्मचारिव्रते स्थितः।
मनः संयम्य मच्चित्तो युक्त आसीत मत्परः॥१४॥

८ मई] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ३३
पं० २५ वैशाख] 8 May [भा० वैशाख १८

युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी नियतमानसः।
शान्तिं निर्वाणपरमां मत्संस्थामधिगच्छति।१५।
नात्यश्नतस्तु योगोऽस्ति न चैकान्तमनश्नतः।
न चाति स्वप्नशीलस्य जाग्रतो नैव चार्जुन॥१६॥

९ मई] सूर्योदय ५ । १२ सूर्यास्त ६ । ३४
पं० २६ वैशाख] 9 May [भा० वैशाख १९

५—

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु ।
युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दुःखहा ॥१७॥
यदा विनियतं चित्तमात्मन्येवावतिष्ठते ।
निःस्पृहः सर्वकामेभ्यो युक्त इत्युच्यते तदा॥१८॥

---

१० मई] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ३४
पं० २७ वैशाख] 10 May [भा० वैशाख २०

प्र* ३ ८४) कि [illegible]

यथा दीपो निवातस्थो नेङ्गते सोपमा स्मृता।
योगिनो यतचित्तस्य युञ्जतो योगमात्मनः॥१९॥
यत्रोपरमते चित्तं निरुद्धं योगसेवया।
यत्र चैवात्मनात्मानं पश्यन्नात्मनि तुष्यति॥२०॥

११ मई] सूर्योदय ५ । १० [सूर्यास्त ६ । ३५
पं० २८ वैशाख] 11 May [भा० वैशाख २१

सुखमात्यन्तिकं यत्तद्बुद्धिग्राह्यमतीन्द्रियम्।
वेत्ति यत्र न चैवायं स्थितश्चलति तत्त्वतः ॥२१॥
यं लब्ध्वा चापरं लाभं मन्यते नाधिकं ततः।
यस्मिन्स्थितो न दुःखेन गुरुणापि विचाल्यते॥२२॥

१२ मई] सूर्योदय ५ । १० सूर्यास्त ६ । ३५
पं० २९ वैशाख] 12 May [भा० वैशाख २२

श्रीसीतानवमी

तं विद्याद् दुःखसंयोगवियोगं योगसंज्ञितम्।
स निश्चयेन योक्तव्यो योगोऽनिर्विण्ण चेतसा॥२३॥
संकल्पप्रभवान्कामांस्त्यक्त्वा सर्वानशेषतः।
मनसैवेन्द्रियग्रामं विनियम्य समन्ततः॥२४॥

१३ मई] सूर्योदय ५ । ९ सूर्यास्त ६ । ३६
पं० ३० वैशाख] 13 May [मा० वैशाख २३

शनैः शनैरुपरमेद्बुद्ध्या धृतिगृहीतया।
आत्मसंस्थं मनः कृत्वा न किञ्चिदपि चिन्तयेत्॥२५
यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम्।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ॥२६॥

१४ मई] सूर्योदय ५ । ९ सूर्यास्त ६ । ३६
पं० ३१ वैशाख] 14 May [भा० वैशाख २४

एकादशीव्रत

रात्रि विश्रामो बुलन्दशहरे
म. र. ...

प्रशान्तमनसं ह्येनं योगिनं सुखमुत्तमम्।
उपैति शान्तरजसं ब्रह्मभूतमकल्मषम् ॥२७॥
युञ्जन्नेवं सदात्मानं योगी विगतकल्मषः।
सुखेन ब्रह्मसंस्पर्शमत्यन्तं सुखमश्नुते ॥२८॥

१५ मई] सूर्योदय ५ । ८ सूर्यास्त ६ । ३७
पं० १ ज्येष्ठ २०३८] 15 May [भा० वैशाख २५

सर्वभूतस्थमात्मानं सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः ॥२९॥
यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति।
तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥३०॥

१६ मई] सूर्योदय ५ । ८ सूर्यास्त ६ । ३७
पं० २ ज्येष्ठ] 16 May [भा० वैशाख २६

शनिप्रदोष

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः।
सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥
आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।
सुखं वा यदि वा दुःखं स योगी परमो मतः ॥३२॥

---

१७ मई] सूर्योदय ५ । ७ सूर्यास्त ६ । ३८
पं० ३ ज्येष्ठ] 17 May [भा० वैशाख २७

श्रीनृसिंह-जयन्ती

अर्जुन उवाच

योऽयं योगस्त्वया प्रोक्तः साम्येन मधुसूदन।
एतस्याहं न पश्यामि चञ्चलत्वात्स्थितिं स्थिराम्॥
चञ्चलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि बलवद्दृढम्।
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्॥३४॥

---

१८ मई] सूर्योदय ५ । ७ सूर्यास्त ६ । ३८
पं० ४ ज्येष्ठ] 18 May [भा० वैशाख २८

पूर्णिमा, वैशाखस्नानसमाप्त

ज्येष्ठ कृष्ण १ मंगल वि० सं० २०३८ श्रीकृष्ण-सं० ५२०७

श्रीभगवानुवाच

असंशयं महाबाहो मनो दुर्निग्रहं चलम्।
अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते॥३५॥
असंयतात्मना योगो दुष्प्राप इति मे मतिः।
वश्यात्मना तु यतता शक्योऽवाप्तुमुपायतः॥३६॥

१९ मई] सूर्योदय ५ । ६ सूर्यास्त ६ । ३९
पं० ५ ज्येष्ठ] 19 May [भा० वैशाख २९

आज एक जन्मपत्री पूर्ण कि...

अर्जुन उवाच

अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः।
अप्राप्य योगसंसिद्धिं कां गतिं कृष्ण गच्छति ३७
कच्चिन्नोभयविभ्रष्टश्छिन्नाभ्रमिव नश्यति।
अप्रतिष्ठो महाबाहो विमूढो ब्रह्मणः पथि ॥३८॥

२० मई] सूर्योदय ५ । ६ सूर्यास्त ६ । ३९
पं० ६ ज्येष्ठ] 20 May [भा० वैशाख ३०

एतन्मे संशयं कृष्ण छेत्तुमर्हस्यशेषतः।
त्वदन्यः संशयस्यास्य छेत्ता न ह्युपपद्यते ॥३९॥

श्रीभगवानुवाच

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति।४०।

प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः ।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते॥४१॥
अथवा योगिनामेव कुले भवति धीमताम् ।
एतद्धि दुर्लभतरं लोके जन्म यदीदृशम् ॥४२॥

२२ मई] सूर्योदय ५ । ५ सूर्यास्त ६ । ४०
पं० ८ ज्येष्ठ] 22 May [भा० ज्येष्ठ १ शक १९०३

गणेशचतुर्थीव्रत

तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।
यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥४३॥
पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्रियते ह्यवशोऽपि सः।
जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मातिवर्तते ॥४४॥

प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः ।
अनेकजन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम्॥४५॥
तपस्विभ्योऽधिको योगी ज्ञानिभ्योऽपि मतोऽधिकः
कर्मिभ्यश्चाधिको योगी तस्माद्योगी भवार्जुन।४६।

२४ मई] सूर्योदय ५ । ४ सूर्यास्त ६ । ४१
पं० १० ज्येष्ठ] 24 May] भा० ज्येष्ठ ३.

योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना ।
श्रद्धावान्भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥४७॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे आत्मसंयमयोगो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

ॐ

सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥ १ ॥
ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते॥२॥

२६ मई] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ४२
पं० १२ ज्येष्ठ] 26 May [भा० ज्येष्ठ ५

ज्येष्ठ कृष्ण ७ मंगल

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः॥ ३॥
भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा॥ ४॥

१४८ दिन] ज्येष्ठ कृष्ण ९ गुरु [गीता

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् ।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥ ५ ॥
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय ।
अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥ ६ ॥

---

२८ मई] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ४३

पं० १४ ज्येष्ठ] 28 May [भा० ज्येष्ठ ७

अ० ७] ज्येष्ठ कृष्ण १० शुक्र [दिन १४९

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥ ७॥
रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः।
प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥ ८॥

---

२९ मई] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ४३

पं० १५ ज्येष्ठ] 29 May [भा० ज्येष्ठ ८

एकादशीव्रत (स्मार्त)

१५० दिन] ज्येष्ठ कृष्ण १२ शनि [गीता

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ ।
जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥ ९ ॥
बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥ १० ॥

३० मई] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ४४
पं० १६ ज्येष्ठ] 30 May [भा० ज्येष्ठ ९

एकादशीव्रत (वैष्णव)

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥११॥
ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये ।
मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥१२॥

३१ मई] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० १७ ज्येष्ठ] 31 May [भा० ज्येष्ठ १०

प्रदोष

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत्।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम्॥१३॥
दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥१४॥

---

१ जून १९८१] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० १८ ज्येष्ठ] 1 June 1981 [आ० ज्येष्ठ ११

न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः।
माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥१५॥
चतुर्विधा भजन्ते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन।
आर्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥१६॥

२ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० १९ ज्येष्ठ] 2 June [भा० ज्येष्ठ १२

वटसावित्रीव्रत

तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त एकभक्तिर्विशिष्यते ।
प्रियो हि ज्ञानिनोऽत्यर्थमहं स च मम प्रियः॥१७॥
उदाराः सर्व एवैते ज्ञानी त्वात्मैव मे मतम् ।
आस्थितः स हि युक्तात्मा मामेवानुत्तमां गतिम् १८

३ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० २० ज्येष्ठ] 3 June [भा० ज्येष्ठ १३

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥१९॥
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥२०॥

योयो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्॥२१॥
स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान्॥२२॥

५ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० २२ ज्येष्ठ] 5 June [भा० ज्येष्ठ १५

गणेशचतुर्थीव्रत

अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि॥२३॥
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

---

६ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० २३ ज्येष्ठ] 6 June [भा० ज्येष्ठ १६

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।
मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् २५
वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।
भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥२६॥

७ जून] सूर्योदय ५ । १ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० २४ ज्येष्ठ] 7 June [भा० ज्येष्ठ १७

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत।
सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥२७॥
येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम्।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥२८॥

---

८ जून] सूर्योदय ५ । १ सूर्यास्त ६ । ४९
पं० २५ ज्येष्ठ] 8 June [भा० ज्येष्ठ १८

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥२९॥
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ज्ञानविज्ञान-
योगो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

ॐ

अष्टमोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

किं तद्ब्रह्म किमध्यात्मं किं कर्म पुरुषोत्तम।
अधिभूतं च किं प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते ॥ १ ॥
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥२॥

१० जून] सूर्योदय ५ । १ सूर्यास्त ६ । ४९
पं० २७ ज्येष्ठ] 10 June [भा० ज्येष्ठ २०

ज्येष्ठ शुक्ल ८ बुध

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः॥ ३॥
अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम्।
अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर॥ ४॥

---

११ जून] सूर्योदय ५ । १ सूर्यास्त ६ । ५०
पं० २८ ज्येष्ठ] 11 June [भा० ज्येष्ठ २१

*

अन्तकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः॥५॥
यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम्।
तं तमेवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः॥ ६ ॥

१२ जून] सूर्योदय ५ । १ सूर्यास्त ६ । ५१
पं० २९ ज्येष्ठ] 12 June [भा० ज्येष्ठ २२

गङ्गादशहरा

तस्मात्सर्वेषु कालेषु मामनुस्मर युध्य च।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्मामेवैष्यस्यसंशयम् ॥७॥
अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥८॥

१३ जून] सूर्योदय ५ । १ सूर्यास्त ६ । ५१
पं० ३० ज्येष्ठ] 13 June [भा० ज्येष्ठ २३

निर्जला-एकादशीव्रत (भीमसेनी)

कविं पुराणमनुशासितार-
मणोरणीयांसमनुस्मरेद्यः ।
सर्वस्य धातारमचिन्त्यरूप-
मादित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥ ९ ॥

---

१४ जून] सूर्योदय ५ । १ सूर्यास्त ६ । ५१
पं० ३१ ज्येष्ठ] 14 June [भा० ज्येष्ठ २४

प्रदोषव्रत

रात्रि विश्राम जोरावा (कौशाम्बी

प्रयाणकाले मनसाचलेन
भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव।
भ्रुवोर्मध्ये प्राणमावेश्य सम्यक्
स तं परं पुरुषमुपैति दिव्यम्॥१०॥

यदक्षरं वेदविदो वदन्ति
विशन्ति यद्यतयो वीतरागाः।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति
तत्ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥ ११ ॥

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च ।
मूर्ध्न्याधायात्मनः प्राणमास्थितो योगधारणाम् ॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन्देहं स याति परमां गतिम् ॥१३॥

१७ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ५२
पं० ३ आषाढ़] 17 June [भा० ज्येष्ठ २७

पूर्णिमा

आषाढ़ कृष्ण १ गुरु वि० सं० २०३८ श्रीकृष्ण-संवत् ५२०७

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः ।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥१४॥
मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम् ।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥१५॥

---

१८ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० ४ आषाढ़] 18 June [भा० ज्येष्ठ २८

आब्रह्मभुवनाल्लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन।
मामुपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते॥१६॥
सहस्रयुगपर्यन्तमहर्यद्ब्रह्मणो विदुः।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः॥१७॥

---

१९ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० ५ आषाढ़] 19 June [भा० ज्येष्ठ २९

अव्यक्ताद्व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्यहरागमे।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥
भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्यहरागमे ॥१९॥

२० जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० ६ आषाढ़] 20 June [भा० ज्येष्ठ ३०

१७२ दिन] आषाढ़ कृष्ण ४ रवि [गीता

परस्तस्मात्तु भावोऽन्योऽव्यक्तोऽव्यक्तात्सनातनः
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥२०॥
अव्यक्तोऽक्षर इत्युक्तस्तमाहुः परमां गतिम्।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥२१॥

२१ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ५२
पं० ७ आषाढ़] 21 June [भा० ज्येष्ठ ३१

गणेशचतुर्थीव्रत

रात्रि विश्राम: फीरोजाबाद

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस्त्वनन्यया ।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वमिदं ततम् ।२२।
यत्र काले त्वनावृत्तिमावृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥२३॥

रात्रि विश्राम: आगरा बरेली रेलयाने

अग्निर्ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥२४॥
धूमो रात्रिस्तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम्।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर्योगी प्राप्य निवर्तते॥२५॥

२३ जून] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० ९ आषाढ़] 23 June [भा० आषाढ़ २

शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते।
एकया यात्यनावृत्तिमन्ययावर्तते पुनः॥२६॥
नैते सृती पार्थ जानन्योगी मुह्यति कश्चन।
तस्मात्सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन॥२७॥

---

२४ जून] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० १० आषाढ] 24 June [भा० आषाढ ३

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव
दानेषु यत्पुण्यफलं प्रदिष्टम्।
अत्येति तत्सर्वमिदं विदित्वा
योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् ॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नामाष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥

रात्रि तीर्थ गंगेश्वर महादेव चिपिरे

ॐ

नवमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे ।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात् ॥
राजविद्या राजगुह्यं पवित्रमिदमुत्तमम् ।
प्रत्यक्षावगमं धर्म्यं सुसुखं कर्तुमव्ययम् ॥ २ ॥

---

२६ जून] सूर्योदय ५ । २ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० १२ आषाढ] 26 June [भा० आषाढ ५

आषाढ कृष्ण ९ शुक्र

रात्रि वि॰ श्रीमां भारशाह ईक्‍यावे

अश्रद्दधानाः पुरुषा धर्मस्यास्य परंतप ।
अप्राप्य मां निवर्तन्ते मृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ ३ ॥
मया ततमिदं सर्वं जगदव्यक्तमूर्तिना ।
मत्स्थानि सर्वभूतानि न चाहं तेष्ववस्थितः॥ ४ ॥

---

२७ जून] सूर्योदय ५ । ३ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० १३ आषाढ] 27 June [भा० आषाढ ६

रात्रि विश्रामो भरवाड़क इकपाने

अ० ९] आषाढ़ कृष्ण ११ रवि [दिन १७९

न च मत्स्थानि भूतानि पश्य मे योगमैश्वरम् ।
भूतभृन्न च भूतस्थो ममात्मा भूतभावनः ॥ ५ ॥
यथाकाशस्थितो नित्यं वायुः सर्वत्रगो महान् ।
तथा सर्वाणि भूतानि मत्स्थानीत्युपधारय ॥ ६ ॥

---

२८ जून] सूर्योदय ५ । ४ सूर्यास्त ६ । ५४

पं० १४ आषाढ़] 28 June [मा० आषाढ़ ७

एकादशीव्रत

रात्रि विश्राम: प्रयागे

१८० दिन] आषाढ़ कृष्ण १२ सोम [गीता

सर्वभूतानि कौन्तेय प्रकृतिं यान्ति मामिकाम् ।
कल्पक्षये पुनस्तानि कल्पादौ विसृजाम्यहम्॥७॥
प्रकृतिं स्वामवष्टभ्य विसृजामि पुनः पुनः ।
भूतग्राममिमं कृत्स्नमवशं प्रकृतेर्वशात् ॥८॥

२९ जून] सूर्योदय ५ । ४ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० १५ आषाढ़] 29 June [भा० आषाढ़ ८

सोमप्रदोष

रात्रि विश्राम: सेमाई पाड़ा

न च मां तानि कर्माणि निबध्नन्ति धनंजय ।
उदासीनवदासीनमसक्तं तेषु कर्मसु ॥ ९ ॥
मयाध्यक्षेण प्रकृतिः सूयते सचराचरम् ।
हेतुनानेन कौन्तेय जगद्विपरिवर्तते ॥१०॥

३० जून] सूर्योदय ५ । ५ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० १६ आषाढ़] 30 Jnue [भा० आषाढ़ ९

मासशिवरात्रि

रात्रि विश्रुत; समरिका गणं

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ॥११॥
मोघाशा मोघकर्माणो मोघज्ञाना विचेतसः।
राक्षसीमासुरीं चैव प्रकृतिं मोहिनीं श्रिताः॥१२॥

---

१ जुलाई १९८१] सूर्योदय ५।५ सूर्यास्त ६।५४
पं० १७ आषाढ़] 1 July 1981 [भा० आषाढ़ १०

अमावास्या

रात्रि । वि श्रुभो लटियार ग्रा

महात्मानस्तु मां पार्थ दैवीं प्रकृतिमाश्रिताः ।
भजन्त्यनन्यमनसो ज्ञात्वा भूतादिमव्ययम्॥१३॥
सततं कीर्तयन्तो मां यतन्तश्च दृढव्रताः ।
नमस्यन्तश्च मां भक्त्या नित्ययुक्ता उपासते॥१४॥

२ जुलाई] सूर्योदय ५ । ६ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० १८ आषाढ़] 2 July [मा० आषाढ़ ११

रात्रिविश्रामो बम्बई हानड़ारे लपाने

१८४ दिन] आषाढ़ शुक्ल २ शुक्र [गीता

ज्ञानयज्ञेन चाप्यन्ये यजन्तो मामुपासते ।
एकत्वेन पृथक्त्वेन बहुधा विश्वतोमुखम् ॥१५॥
अहं क्रतुरहं यज्ञः स्वधाहमहमौषधम् ।
मन्त्रोऽहमहमेवाज्यमहमग्निरहं हुतम् ॥१६॥

२ जुलाई] सूर्योदय ५ । ६ सूर्यास्त ६ । ५४
पं० १९ आषाढ़] 3 July [मा० आषाढ़ १२

श्रीजगदीशरथयात्रा

अमाकू -०।८०
अंगूर -०।२०

रात्रि नि श्रमो वाराणस्याम्

पिताहमस्य जगतो माता धाता पितामहः।
वेद्यं पवित्रमोंकार ऋक्साम यजुरेव च ॥१७॥
गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी निवासः शरणं सुहृत्।
प्रभवः प्रलयः स्थानं निधानं बीजमव्ययम् ॥१८॥

---

४ जुलाई] सूर्योदय ५ । ७ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० २० आषाढ़] 4 July [भा० आषाढ़ १३

डा०मुकं -०।८५

तपाम्यहमहं वर्षं निगृह्णाम्युत्सृजामि च।
अमृतं चैव मृत्युश्च सदसच्चाहमर्जुन ॥१९॥
त्रैविद्या मां सोमपाः पूतपापा
यज्ञैरिष्ट्वा स्वर्गतिं प्रार्थयन्ते।
ते पुण्यमासाद्य सुरेन्द्रलोक-
मश्नन्ति दिव्यान्दिवि देवभोगान्॥२०

५ जुलाई] सूर्योदय ५ । ७ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० २१ आषाढ़] 5 July [भा० आषाढ़ १४

गणेशचतुर्थीव्रत

अनाज — ०८०

[illegible]

अ० ९] आषाढ़ शुक्ल ५ सोम [दिन १८७

ते तं भुक्त्वा स्वर्गलोकं विशालं
क्षीणे पुण्ये मर्त्यलोकं विशन्ति ।
एवं त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना
गतागतं कामकामा लभन्ते ॥२१॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥२२॥

६ जुलाई] सूर्योदय ५ । ८ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० २२ आषाढ़] 6 July [भा० आषाढ़ १५

शब्देन्दुसुधा - १.६७
ईशुरम — 0.165.
दन्तधावन — 0.10
निम्बुकं — 0.120
जामुनं — 0.180

येऽप्यन्यदेवता भक्ता यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेऽपि मामेव कौन्तेय यजन्त्यविधिपूर्वकम् ॥२३॥
अहं हि सर्वयज्ञानां भोक्ता च प्रभुरेव च ।
न तु मामभिजानन्ति तत्त्वेनातश्च्यवन्ति ते ॥२४॥

७ जुलाई] सूर्योदय ५ । ८ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० २२ आषाढ़] 7 July [भा० आषाढ़ १६

महाभाष्य कुञ्जिका - १.६७
निब्रुकेम — ०।२०
प्रसाधनिकं (कंघा) — ०।२५
बटर : — ०।80

यान्ति देवव्रता देवान्पितृन्यान्ति पितृव्रताः।
भूतानि यान्ति भूतेज्या यान्ति मद्याजिनोऽपि माम्
पत्रं पुष्पं फलं तोयं यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तदहं भक्त्युपहृतमश्नामि प्रयतात्मनः ॥२६॥

आम - ४४/८९

१९० दिन] आषाढ़ शुक्ल ८ गुरु [गीता

यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोषि ददासि यत्।
यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥२७॥
शुभाशुभफलैरेवं मोक्ष्यसे कर्मबन्धनैः।
संन्यासयोगयुक्तात्मा विमुक्तो मामुपैष्यसि॥२८॥

---

९ जुलाई] सूर्योदय ५ । ९ सूर्यास्त ६ । ५३

पं० २५ आषाढ़] 9 July [भा० आषाढ़ १८

निम्बकु – ००/२०
आम्रं – ००/६५

समोऽहं सर्वभूतेषु न मे द्वेष्योऽस्ति न प्रियः।
ये भजन्ति तु मां भक्त्या मयि ते तेषु चाप्यहम्॥२९
अपि चेत्सुदुराचारो भजते मामनन्यभाक्।
साधुरेव स मन्तव्यः सम्यग्व्यवसितो हि सः॥३०॥

१० जुलाई] सूर्योदय ५ । ९ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० २६ आषाढ़] 10 July [भा० आषाढ़ १९

१९२ दिन] आषाढ़ शुक्ल १० शनि [गीता

क्षिप्रं भवति धर्मात्मा शश्वच्छान्तिं निगच्छति ।
कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति॥३१॥
मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम्

११ जुलाई] सूर्योदय ५ । ९ सूर्यास्त ६ । ५३
पं० २७ आषाढ़] 11 July [भा० आषाढ़ २०

अथ सायं पाल्लीवालगुरुवोऽगत:
जालौनी - ०४-८०
आब्रूके - ०।६०
वृद्धोके - ०।३०
भैरुके - ०।२०

जमुनाप्रसादस्य पत्र प्राप्तम्

किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम्॥३३॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु ।
मामेवैष्यसि युक्त्वैवमात्मानं मत्परायणः ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे राजविद्याराजगुह्ययोगो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥

१२ जुलाई] सूर्योदय ५ । १० सूर्यास्त ६ । ५२
पं० २८ आषाढ़] 12 July [भा० आषाढ़ २१

हरिशयनी एकादशीव्रत (स्मार्त)

अद्य गुरु[illegible] [illegible].

[illegible] — ०।१०
[illegible] — ०।३०+१०=४०
[illegible] — ०।३०

ॐ

दशमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया॥ १ ॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥ २ ॥

१२ जुलाई] सूर्योदय ५ । १० सूर्यास्त ६ । ५२
पं० २९ आषाढ] 13 July1 [भा० आषाढ २२

आषाढ शुक्ल १२ सोम

*

यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ ३॥
बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः ।
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥ ४॥

१४ जुलाई] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ५१
पं० ३० आषाढ़] 14 July [भा० आषाढ़ २३

एकादशीव्रत (वैष्णव), भौमप्रदोष

१९६ दिन] आषाढ़ शुक्ल १३ बुध [गीता

अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः ।
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥ ५ ॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥ ६ ॥

---

१५ जुलाई] सूर्योदय ५ । ११ सूर्यास्त ६ । ५१

पं० २१ आषाढ़] 15 July [भा० आषाढ़ २४

प्रेरी आगता :

अ० १०] आषाढ़ शुक्ल १४ गुरु [दिन १९७

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥ ७॥
अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।
इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥ ८॥

१६ जुलाई] सूर्योदय ५। १२ सूर्यास्त ६। ५१

पं० २२ आषाढ़] 16 July [भा० आषाढ़ २५

१९८ दिन] आषाढ़ शुक्ल १५ शुक्र [गीता

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् ।
कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥९॥
तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।
ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥

---

१७ जुलाई] सूर्योदय ५ । १२ सूर्यास्त ६ । ५१

पं० १ श्रावण सं० २०३८] 17 July [भा० आषाढ़ २६

गुरुपूर्णिमा, व्यासपूजा

श्रावण कृष्ण १ शनि वि० सं० २०३८ श्रीकृष्ण-सं० ५२०७

तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः।
नाशयाम्यात्मभावस्थो ज्ञानदीपेन भास्वता॥११॥

अर्जुन उवाच

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्॥१२॥

१८ जुलाई] सूर्योदय ५ । १३ सूर्यास्त ६ । ५१
पं० २ श्रावण] 18 July [शा० आषाढ़ २७

आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा ।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे ॥१३॥
सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव ।
न हि ते भगवन्व्यक्तिं विदुर्देवा न दानवाः॥१४॥

ज्ञानी प्रथम पत्र

अ० १०] श्रावण कृष्ण ३ सोम [दिन २०१

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम ।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते ॥१५॥
वक्तुमर्हस्यशेषेण दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
याभिर्विभूतिभिर्लोकानिमांस्त्वं व्याप्य तिष्ठसि ॥

---

२० जुलाई] सूर्योदय ५ । १४ सूर्यास्त ६ । ५०

पं० ४ श्रावण] 20 July [भा० आषाढ़ २९

गणेशचतुर्थीव्रत

[illegible] द्वितीय पत्र

कथं विद्यामहं योगिंस्त्वां सदा परिचिन्तयन् ।
केषु केषु च भावेषु चिन्त्योऽसि भगवन्मया ॥१७॥
विस्तरेणात्मनो योगं विभूतिं च जनार्दन ।
भूयः कथय तृप्तिर्हि शृण्वतो नास्ति मेऽमृतम् ।१८।

तृतीय पत्र

अ० १०] श्रावण कृष्ण ५ बुध [दिन २०३

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे॥१९॥
अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च॥२०॥

२२ जुलाई] सूर्योदय ५।१५ सूर्यास्त ६।४९
पं० ६ श्रावण] 22 July [भा० आषाढ़ ३१

चतुर्थ पत्र

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥
वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः।
इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना॥२२॥

२३ जुलाई] सूर्योदय ५ । १५ सूर्यास्त ६ । ४९
पं० ७ श्रावण] 23 July [भा० श्रावण १ शक १९०२

रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।
वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम्॥२३॥
पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्।
सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः।२४।

२४ जुलाई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४८
पं० ८ श्रावण] 24 July [भा० श्रावण २

२०६ दिन] श्रावण कृष्ण ९ शनि [गीता

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।
यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः॥२५॥
अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।
गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः॥२६॥

२५ जुलाई] सूर्योदय ५ । १६ सूर्यास्त ६ । ४८

पं० ९ श्रावण] 25 July [भा० श्रावण ३

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् ।
ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥२७॥
आयुधानामहं वज्रं धेनूनामस्मि कामधुक् ।
प्रजनश्चास्मि कन्दर्पः सर्पाणामस्मि वासुकिः ॥२८॥

२६ जुलाई] सूर्योदय ५ । १७ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० १० श्रावण] 26 July [भा० श्रावण ४

[illegible] — ५।००
[illegible] — १।२०
[illegible] — ०।६५

अनन्तश्चास्मि नागानां वरुणो यादसामहम्।
पितॄणामर्यमा चास्मि यमः संयमतामहम् ॥२९॥
प्रह्लादश्चास्मि दैत्यानां कालः कलयतामहम्।
मृगाणां च मृगेन्द्रोऽहं वैनतेयश्च पक्षिणाम् ।३०।

---

२७ जुलाई] सूर्योदय ५ । १७ सूर्यास्त ६ । ४७
पं० ११ श्रावण] 27 July [भा० श्रावण ५

एकादशीव्रत

अथ २००८ कि. भारतीयराज्याचे [illegible]:

मानसागरी – २०।००
प्रश्नमार्गप्रदीपिका ५।६
लग्न चन्द्रिका
विवाह पद्धती [illegible] -५।०
पञ्चांग -७।००
[illegible] –
[illegible] ६।..
[illegible] / ३।५०
ऋतुगीत - ०।३५
[illegible] रामायण ०।
रघुवंश ५।७

पवनः पवतामस्मि रामः शस्त्रभृतामहम् ।
झषाणां मकरश्चास्मि स्रोतसामस्मि जाह्नवी ॥ ३१ ॥
सर्गाणामादिरन्तश्च मध्यं चैवाहमर्जुन ।
अध्यात्मविद्या विद्यानां वादः प्रवदतामहम् ॥ ३२ ॥

---

२८ जुलाई] सूर्योदय ५ । १८ सूर्यास्त ६ । ४६
पं० १२ श्रावण] 28 July [भा० श्रावण ६

लघुसिद्धान्त - २२।०० भौमप्रदोष
सारावली - ३०।७०
भारतीय ज्योतिष - ३९।००
सामुद्रिकदीपिका - ३०।००
कल्याणकुञ्ज (३) - ०।६०
बालकों के आचरण - ०।१५
आदर्श धर्म - ०।६०
कल्याणकुंज (२) भाग - ०।५०
[illegible] - ०।२०
पुष्प — - २।५०
श्री आख्यान — ०।६०

२१० दिन] श्रावण कृष्ण १३ बुध [गीता

अक्षराणामकारोऽस्मि द्वन्द्वः सामासिकस्य च ॥
अहमेवाक्षयः कालो धाताहं विश्वतोमुखः॥३३॥
मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा॥

२९ जुलाई] सूर्योदय ५ । १८ सूर्यास्त ६ । ४६

पं० १३ श्रावण] 29 July [भा० श्रावण ७

मासशिवरात्रिव्रत

बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्॥

३० जुलाई] सूर्योदय ५ । १९ सूर्यास्त ६ । ४५
पं० १४ श्रावण] 30 July [भा० श्रावण ८

२१२ दिन] श्रावण कृष्ण ३० शुक्र [गीता

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः॥३७॥
दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम्।
मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम्॥३८॥

---

३१ जुलाई] सूर्योदय ५।१९ सूर्यास्त ६।४५
पं० १५ श्रावण] 31 July [भा० श्रावण ९

अमावास्या, सूर्यग्रहण

यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन।
न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम्॥३९॥
नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परंतप।
एष तूद्देशतः प्रोक्तो विभूतेर्विस्तरो मया॥४०॥

---

१ अगस्त १९८१] सूर्योदय ५ । २० सूर्यास्त ६ । ४५
पं० १६ श्रावण] । August 1981 [भा० श्रावण १०

यद्यद्विभूतिमत्सत्त्वं श्रीमदूर्जितमेव वा।
तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसंभवम्॥४१॥
अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन तवार्जुन।
विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत्॥४२॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विभूतियोगो नाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥

---

२ अगस्त] सूर्योदय ५ । २० सूर्यास्त ६ । ४४
पं० १७ श्रावण] 2 August [भा० श्रावण ११

ॐ

एकादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम् ।
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥ १ ॥
भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया ।
त्वत्तः कमलपत्राक्ष माहात्म्यमपि चाव्ययम् ।२।

---

३ अगस्त] सूर्योदय ५ । २१ सूर्यास्त ६ । ४३
पं० १८ श्रावण] 3 August [भा० श्रावण १२

श्रावण शुक्ल ३ सोम, गणेशचतुर्थीव्रत

२१६ दिन] श्रावण शुक्ल ४ मंगल [गीता

एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर।
द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥ ३ ॥
मन्यसे यदि तच्छक्यं मया द्रष्टुमिति प्रभो ।
योगेश्वर ततो मे त्वं दर्शयात्मानमव्ययम् ॥ ४ ॥

४ अगस्त] सूर्योदय ५ । २१ सूर्यास्त ६ । ४२
पं० १९ श्रावण] 4 August [भा० श्रावण १३

श्रीभगवानुवाच

पश्य मे पार्थ रूपाणि शतशोऽथ सहस्रशः।
नानाविधानि दिव्यानि नानावर्णाकृतीनि च॥५॥
पश्यादित्यान्वसून्रुद्रानश्विनौ मरुतस्तथा।
बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याश्चर्याणि भारत॥६॥

---

५ अगस्त] सूर्योदय ५। २२ [सूर्यास्त ६। ४१
पं० २० श्रावण] 5 August [भा० श्रावण १४

नागपञ्चमी

२१८ दिन] श्रावण शुक्ल ६ गुरु [गीता

इहैकस्थं जगत्कृत्स्नं पश्याद्य सचराचरम्।
मम देहे गुडाकेश यच्चान्यद् द्रष्टुमिच्छसि॥ ७ ॥
न तु मां शक्यसे द्रष्टुमनेनैव स्वचक्षुषा।
दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम्॥ ८ ॥

६ अगस्त] सूर्योदय ५ । २२ सूर्यास्त ६ । ४०
पं० २१ श्रावण] 6 August [भा० श्रावण १५

संजय उवाच

एवमुक्त्वा ततो राजन्महायोगेश्वरो हरिः।
दर्शयामास पार्थाय परमं रूपमैश्वरम् ॥ ९ ॥
अनेकवक्त्रनयनमनेकाद्भुतदर्शनम् ।
अनेकदिव्याभरणं दिव्यानेकोद्यतायुधम् ॥१०॥

२२० दिन] श्रावण शुक्ल ८ शनि [गीता

दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्।
सर्वाश्चर्यमयं देवमनन्तं विश्वतोमुखम् ॥११॥
दिवि सूर्यसहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता।
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य महात्मनः १२

८ अगस्त] सूर्योदय ५ । २३ सूर्यास्त ६ । ३८

पं० २३ श्रावण] 8 August [भा० श्रावण १७

कृष्णार्पणमस्तु

तत्रैकस्थं जगत्कृत्स्नं प्रविभक्तमनेकधा ।
अपश्यद्देवदेवस्य शरीरे पाण्डवस्तदा ॥१३॥
ततः स विस्मयाविष्टो हृष्टरोमा धनंजयः ।
प्रणम्य शिरसा देवं कृताञ्जलिरभाषत ॥१४॥

अर्जुन उवाच

पश्यामि देवांस्तव देव देहे
सर्वांस्तथा भूतविशेषसंघान्।
ब्रह्माणमीशं कमलासनस्थ-
मृषींश्च सर्वानुरगांश्च दिव्यान्॥१५॥

१० अगस्त] सूर्योदय ५ । २४ सूर्यास्त ६ । ३७

पं० २५ श्रावण] 10 August [भा० श्रावण १९

अनेकबाहूदरवक्त्रनेत्रं
पश्यामि त्वां सर्वतोऽनन्तरूपम्।
नान्तं न मध्यं न पुनस्तवादिं
पश्यामि विश्वेश्वर विश्वरूप ॥१६॥

एकादशीव्रत

किरीटिनं गदिनं चक्रिणं च
तेजोराशिं सर्वतो दीप्तिमन्तम् ।
पश्यामि त्वां दुर्निरीक्ष्यं समन्ता-
द्दीप्तानलार्कद्युतिमप्रमेयम् ॥१७॥

त्वमक्षरं परमं वेदितव्यं
त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
त्वमव्ययः शाश्वतधर्मगोप्ता
सनातनस्त्वं पुरुषो मतो मे ॥१८॥

---

१३ अगस्त] सूर्योदय ५।२६ सूर्यास्त ६।३५
पं० २८ श्रावण] 13 August [भा० श्रावण २२

प्रदोष

८—

अनादिमध्यान्तमनन्तवीर्य-
मनन्तबाहुं शशिसूर्यनेत्रम् ।
पश्यामि त्वां दीप्तहुताशवक्त्रं
स्वतेजसा विश्वमिदं तपन्तम् ॥१९॥

❋

द्यावापृथिव्योरिदमन्तरं हि
व्याप्तं त्वयैकेन दिशश्च सर्वाः।
दृष्ट्वाद्भुतं रूपमुग्रं तवेदं
लोकत्रयं प्रव्यथितं महात्मन् ॥२०॥

---

१५ अगस्त] सूर्योदय ५। २७ सूर्यास्त ६। ३३
पं० ३० श्रावण] 15 August [भा० श्रावण २४

श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन] [स्वतन्त्रतादिवस

अमी हि त्वां सुरसंघा विशन्ति
केचिद्भीताः प्राञ्जलयो गृणन्ति ।
स्वस्तीत्युक्त्वा महर्षिसिद्धसंघाः
स्तुवन्ति त्वां स्तुतिभिः पुष्कलाभिः २१

१६ अगस्त] सूर्योदय ५ । २७ सूर्यास्त ६ । ३२
पं० ३१ श्रावण] 16August [भा० श्रावण २५

अ० ११] भाद्रपद कृष्ण २ सोम [दिन २२९

रुद्रादित्या वसवो ये च साध्या
विश्वेऽश्विनौ मरुतश्चोष्मपाश्च।
गन्धर्वयक्षासुरसिद्धसंघा
वीक्षन्ते त्वां विस्मिताश्चैव सर्वे ॥२२॥

१७ अगस्त] सूर्योदय ५ । २८ सूर्यास्त ६ । ३०
पं० ३२ श्रावण] 17 August [भा० श्रावण २६

रूपं महत्ते बहुवक्त्रनेत्रं
महाबाहो बहुबाहूरुपादम् ।
बहूदरं बहुदंष्ट्राकरालं
दृष्ट्वा लोकाः प्रव्यथितास्तथाहम् ॥२३॥

---

१८ अगस्त] सूर्योदय ५ । २८ सूर्यास्त ६ । ३०
पं० १ भाद्रपद २०३८] 18 August [भा० श्रावण २७

गणेशचतुर्थीव्रत (बहुला)

अ० ११] भाद्रपद कृष्ण ४ बुध [दिन २३१

नभःस्पृशं दीप्तमनेकवर्णं
व्यात्ताननं दीप्तविशालनेत्रम् ।
दृष्ट्वा हि त्वां प्रव्यथितान्तरात्मा
धृतिं न विन्दामि शमं च विष्णो ॥२४

---

१९ अगस्त] सूर्योदय ५ । २९ सूर्यास्त ६ । २९
पं० २ भाद्रपद] 19 August [भा० श्रावण २८

दंष्ट्राकरालानि च ते मुखानि
दृष्ट्वैव कालानलसन्निभानि ।
दिशो न जाने न लभे च शर्म
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥२५॥

अमी च त्वां धृतराष्ट्रस्य पुत्राः
सर्वे सहैवावनिपालसंघैः ।
भीष्मो द्रोणः सूतपुत्रस्तथासौ
सहास्मदीयैरपि योधमुख्यैः ॥२६॥

२१ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३० सूर्यास्त ६ । २७
पं० ४ भाद्रपद] 21 August [भा० श्रावण ३०

हलषष्ठीव्रत

वक्त्राणि ते त्वरमाणा विशन्ति
दंष्ट्राकरालानि भयानकानि ।
केचिद्विलग्ना दशनान्तरेषु
संदृश्यन्ते चूर्णितैरुत्तमाङ्गैः ॥२७॥

२२ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३० सूर्यास्त ६ । २७
पं० ५ भाद्रपद] 22 August [भा० श्रावण ३१

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतं (स्मार्त)

यथा नदीनां बहवोऽम्बुवेगाः
समुद्रमेवाभिमुखा द्रवन्ति ।
तथा तवामी नरलोकवीरा
विशन्ति वक्त्राण्यभिविज्वलन्ति ॥२८॥

२३ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३१ सूर्यास्त ६ । २६
पं० ६ भाद्रपद] 23 August [भा० भाद्रपद १ शक १९०३

श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रत (वैष्णव)

२३६ दिन] भाद्रपद कृष्ण १० सोम [गीता

यथा प्रदीप्तं ज्वलनं पतङ्गा
विशन्ति नाशाय समृद्धवेगाः ।
तथैव नाशाय विशन्ति लोका-
स्तवापि वक्त्राणि समृद्धवेगाः ॥२९॥

---

२४ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३१ सूर्यास्त ६ । २५
पं० ७ भाद्रपद] 24 August [भा० भाद्रपद २

लेलिह्यसे ग्रसमानः समन्ता-
ल्लोकान्समग्रान्वदनैर्ज्वलद्भिः ।
तेजोभिरापूर्य जगत्समग्रं
भासस्तवोग्राः प्रतपन्ति विष्णो ॥३०॥

२५ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३२ सूर्यास्त ६ । २४
पं० ८ भाद्रपद] 25 August [आ० भाद्रपद ३

एकादशीव्रत

आख्याहि मे को भवानुग्ररूपो
नमोऽस्तु ते देववर प्रसीद ।
विज्ञातुमिच्छामि भवन्तमाद्यं
न हि प्रजानामि तव प्रवृत्तिम् ॥३१॥

श्रीभगवानुवाच

कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो
लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः ।
ऋतेऽपि त्वां न भविष्यन्ति सर्वे
येऽवस्थिताः प्रत्यनीकेषु योधाः ॥३२॥

---

२७ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३३ सूर्यास्त ६ । २१
पं० १० भाद्रपद] 27 August [भा० भाद्रपद ५

प्रदोष

तस्मात्त्वमुत्तिष्ठ यशो लभस्व
जित्वा शत्रून्भुङ्क्ष्व राज्यं समृद्धम् ।
मयैवैते निहताः पूर्वमेव
निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन् ॥३३॥

---

२८ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३३ सूर्यास्त ६ । २०
पं० ११ भाद्रपद] 28 August [भा० भाद्रपद ६

द्रोणं च भीष्मं च जयद्रथं च
कर्णं तथान्यानपि योधवीरान्।
मया हतांस्त्वंजहि मा व्यथिष्ठा
युध्यस्व जेतासि रणे सपत्नान्॥३४॥

२९ अगस्त] सूर्योदय ५ । ३४ सूर्यास्त ६ । १९
पं० १२ भाद्रपद] 29 August [भा० भाद्रपद ७

कुशोत्पाटनी अमावास्या

[illegible]

संजय उवाच

एतच्छ्रुत्वा वचनं केशवस्य
कृताञ्जलिर्वेपमानः किरीटी।
नमस्कृत्वा भूय एवाह कृष्णं
सगद्गदं भीतभीतः प्रणम्य ॥३५॥

३० अगस्त] सूर्योदय ५ । ३५ सूर्यास्त ६ । १८
पं० १३ भाद्रपद] 30 August [भा० भाद्रपद ८

त्रिवेदी शर्मा वाराणसी केदारघाट

अर्जुन उवाच

स्थाने हृषीकेश तव प्रकीर्त्या
जगत्प्रहृष्यत्यनुरज्यते च।
रक्षांसि भीतानि दिशो द्रवन्ति
सर्वे नमस्यन्ति च सिद्धसंघाः ॥३६॥

शास्त्रीजी शर्मा वाराणसी २८

कस्माच्च ते न नमेरन्महात्मन्
गरीयसे ब्रह्मणोऽप्यादिकर्त्रे।
अनन्त देवेश जगन्निवास
त्वमक्षरं सदसत्तत्परं यत्॥३७॥

१ सितम्बर १९८१] सूर्योदय ५।३५ सूर्यास्त ६।१६
पं० १५भाद्रपद] | September 1981 [भा० भाद्र० १०

हरतालिकाव्रत (तीज)

त्वमादिदेवः पुरुषः पुराण-
स्त्वमस्य विश्वस्य परं निधानम्।
वेत्तासि वेद्यं च परं च धाम
त्वया ततं विश्वमनन्तरूप ॥३८॥

---

२ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ३५ सूर्यास्त ६ । १५

पं० १६ भाद्रपद] 2 September [भा० भाद्रपद ११

गणेशचतुर्थीव्रत

वायुर्यमोऽग्निर्वरुणः शशाङ्कः
प्रजापतिस्त्वं प्रपितामहश्च ।
नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः
पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते ॥३९॥

३ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ३५ सूर्यास्त ६ । १४
पं० १७ भाद्रपद] 3 September [भा० भाद्रपद १२

ऋषिपञ्चमीव्रत

नमः पुरस्तादथ पृष्ठतस्ते
नमोऽस्तु ते सर्वत एव सर्व।
अनन्तवीर्यामितविक्रमस्त्वं
सर्वं समाप्नोषि ततोऽसि सर्वः॥४०॥

४ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ३६ सूर्यास्त ६ । १२
पं० १८ भाद्रपद] 4 September [भा० भाद्रपद १३

लोलार्कषष्ठीव्रत

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं
हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं
मया प्रमादात्प्रणयेन वापि ॥४१॥

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि
विहारशय्यासनभोजनेषु ।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं
तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ॥४२॥

६ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ३७ सूर्यास्त ६ । ११
पं० २० भाद्रपद] 6 September [भा० भाद्रपद १५

महारविवारव्रत, श्रीराधाष्टमी

२५० दिन] भाद्रपद शुक्ल ९ सोम [गीता

पितासि लोकस्य चराचरस्य
त्वमस्य पूज्यश्च गुरुर्गरीयान्।
न त्वत्समोऽस्त्यभ्यधिकः कुतोऽन्यो
लोकत्रयेऽप्यप्रतिमप्रभाव ॥४३॥

---

७ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ३८ सूर्यास्त ६ । ९

पं० २१ भाद्रपद] 7 September [भा० भाद्रपद १६

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्॥४४॥

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देव रूपं
प्रसीद देवेश जगन्निवास ॥४५॥

किरीटिनं गदिनं चक्रहस्त-
मिच्छामि त्वां द्रष्टुमहं तथैव।
तेनैव रूपेण चतुर्भुजेन
सहस्रबाहो भव विश्वमूर्ते॥४६॥

---

१० सितम्बर] सूर्योदय ५ । ३९ सूर्यास्त ६ । ६
पं० २४ भाद्रपद]10 September[भा० भाद्रपद १९

एकादशीव्रत

श्रीभगवानुवाच

मया प्रसन्नेन तवार्जुनेदं
रूपं परं दर्शितमात्मयोगात्।
तेजोमयं विश्वमनन्तमाद्यं
यन्मे त्वदन्येन न दृष्टपूर्वम् ॥४७॥

११ सितम्बर] सूर्योदय ५।३९ सूर्यास्त ६।५

पं० २५भाद्रपद]11 September[भा० भाद्रपद२०

वामनद्वादशीव्रत, प्रदोष

न वेदयज्ञाध्ययनैर्न दानै-
र्न च क्रियाभिर्न तपोभिरुग्रैः।
एवंरूपः शक्य अहं नृलोके
द्रष्टुं त्वदन्येन कुरुप्रवीर ॥४८॥

मा ते व्यथा मा च विमूढभावो
दृष्ट्वा रूपं घोरमीदृङ्ममेदम् ।
व्यपेतभीः प्रीतमनाः पुनस्त्वं
तदेव मे रूपमिदं प्रपश्य ॥४९॥

१३ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४० सूर्यास्त ६ । २
पं० २७ भाद्रपद] 13 September [भा० भाद्रपद २२

श्रीअनन्तचतुर्दशीव्रत

संजय उवाच

इत्यर्जुनं वासुदेवस्तथोक्त्वा
स्वकं रूपं दर्शयामास भूयः।
आश्वासयामास च भीतमेनं
भूत्वा पुनः सौम्यवपुर्महात्मा ॥५०॥

१४ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४१ सूर्यास्त ६ । १
पं० २८ भाद्रपद] 14 September [भा० भाद्रपद २३

पूर्णिमा, महालयारम्भ

९—

अर्जुन उवाच

दृष्ट्वेदं मानुषं रूपं तव सौम्यं जनार्दन ।
इदानीमस्मि संवृत्तः सचेताः प्रकृतिं गतः ॥५१॥

श्रीभगवानुवाच

सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम ।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकाङ्क्षिणः ॥५२॥

१५ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४१ सूर्यास्त ६ । ०
पं० २९ भाद्रपद] 15 September [भा० भाद्रपद २४

*

नाहं वेदैर्न तपसा न दानेन न चेज्यया ।
शक्य एवंविधो द्रष्टुं दृष्टवानसि मां यथा ॥५३॥
भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन ।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप ॥५४॥

मत्कर्मकृन्मत्परमो मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु यः स मामेति पाण्डव ॥५५॥
ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे विश्वरूपदर्शनयोगो नामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥

---

१७ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४२ सूर्यास्त ५ । ५८
पं० ३१ भाद्रपद] 17 September [भा० भा० २६

गणेशचतुर्थीव्रत

ॐ

द्वादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

एवं सततयुक्ता ये भक्तास्त्वां पर्युपासते ।
ये चाप्यक्षरमव्यक्तं तेषां के योगवित्तमाः ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

मय्यावेश्य मनो ये मां नित्ययुक्ता उपासते ।
श्रद्धया परयोपेतास्ते मे युक्ततमा मताः ॥ २ ॥

ये त्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते ।
सर्वत्रगमचिन्त्यं च कूटस्थमचलं ध्रुवम् ॥ ३ ॥
संनियम्येन्द्रियग्रामं सर्वत्र समबुद्धयः ।
ते प्राप्नुवन्ति मामेव सर्वभूतहिते रताः ॥ ४ ॥

क्लेशोऽधिकतरस्तेषामव्यक्तासक्तचेतसाम् ।
अव्यक्ता हि गतिर्दुःखं देहवद्भिरवाप्यते ॥ ५॥
ये तु सर्वाणि कर्माणि मयि संन्यस्य मत्पराः ।
अनन्येनैव योगेन मां ध्यायन्त उपासते ॥ ६॥

---

२० सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४२ सूर्यास्त ५ । ५५
पं० ३ आश्विन]20 September[भा० भाद्रपद २९

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम् ॥ ७॥
मय्येव मन आधत्स्व मयि बुद्धिं निवेशय।
निवसिष्यसि मय्येव अत ऊर्ध्वं न संशयः॥ ८॥

२१ सितम्बर] सूर्योदय ५।४३ सूर्यास्त ५।५३
पं० ४ आश्विन] 21 September [भा० भाद्रपद ३०

जीवत्पुत्रिकाव्रत

अथ चित्तं समाधातुं न शक्नोषि मयि स्थिरम्।
अभ्यासयोगेन ततो मामिच्छाप्तुं धनंजय ॥ ९ ॥
अभ्यासेऽप्यसमर्थोऽसि मत्कर्मपरमो भव।
मदर्थमपि कर्माणि कुर्वन्सिद्धिमवाप्स्यसि ॥१०॥

२२ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४४ सूर्यास्त ५ । ५२
पं० ५ आश्विन] 22 September [भा०भाद्रपद ३१

मातृनवमी

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान् ॥११॥
श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाद्ध्यानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम् १२

२३ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४४ सूर्यास्त ५ । ५१
पं०६ आ०] 23 September [भा० आ० १ शक १९०३

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः समदुःखसुखः क्षमी ॥१३॥
संतुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढनिश्चयः ।
मय्यर्पितमनोबुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४॥

२४ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४५ सूर्यास्त ५ । ५०
पं० ७ आश्विन] 24 September [भा० आश्विन २

एकादशीव्रत

२६८ दिन] आश्विन कृष्ण १२ शुक्र [गीता

यस्मान्नोद्विजते लोको लोकान्नोद्विजते च यः ।
हर्षामर्षभयोद्वेगैर्मुक्तो यः स च मे प्रियः ॥१५॥
अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः ।
सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः॥१६॥

---

२५ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४५ सूर्यास्त ५ । ४९
पं० ८ आश्विन] 25 September [भा० आश्विन ३

प्रदोष

ब्रह्मवैवर्त - 100।00
[illegible] - 1.91।50
रुद्राक्ष 6मुखी - 10।00
" 3मुखी - 2।00
[illegible]ली — 0।80

[illegible]त्रि ति श्रा[illegible] [illegible]

योन हृष्यति न द्वेष्टि न शोचति न काङ्क्षति।
शुभाशुभपरित्यागी भक्तिमान्यः स मे प्रियः ॥१७॥
समः शत्रौ च मित्रे च तथा मानापमानयोः।
शीतोष्णसुखदुःखेषु समः सङ्गविवर्जितः ॥१८॥

२६ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४६ सूर्यास्त ५ । ४८
पं० ९ आश्विन] 26 September [भा० आश्विन ४

पादुका – ३० मासशिवरात्रि

रात्रिविश्राम: अपर इण्डिया रेलयान

तुल्यनिन्दास्तुतिर्मौनी संतुष्टो येन केनचित्।
अनिकेतः स्थिरमतिर्भक्तिमान्मे प्रियो नरः ॥१९॥
ये तु धर्म्यामृतमिदं यथोक्तं पर्युपासते।
श्रद्दधाना मत्परमा भक्तास्तेऽतीव मे प्रियाः ॥२०॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे भक्तियोगो नाम द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥

---

२७ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४६ सूर्यास्त ५ । ४७
पं० १० आश्विन] 27 September [भा० आश्विन ५

पितृविसर्जन

रात्रि नि॰ श्रमोल जहाँगीराबाद

त्रयोदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रमित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः॥ १॥
क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि सर्वक्षेत्रेषु भारत।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम॥ २॥

२८ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४७ सूर्यास्त ५ । ४६
पं० ११ आश्विन] 28 September [भा० आश्विन ६

आश्विन कृष्ण ३० सोम] [सोमवती अमावास्या

तत्क्षेत्रं यच्च यादृक्च यद्विकारि यतश्च यत् ।
स च यो यत्प्रभावश्च तत्समासेन मे शृणु ॥ ३ ॥
ऋषिभिर्बहुधा गीतं छन्दोभिर्विविधैः पृथक् ।
ब्रह्मसूत्रपदैश्चैव हेतुमद्भिर्विनिश्चितैः ॥ ४ ॥

२९ सितम्बर] सूर्योदय ५ । ४७ सूर्यास्त ५ । ४५
पं० १२ आश्विन] 29 September [भा० आश्विन ७

शारदीय नवरात्रारम्भ

महाभूतान्यहंकारो बुद्धिरव्यक्तमेव च।
इन्द्रियाणि दशैकं च पञ्च चेन्द्रियगोचराः॥ ५॥
इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं संघातश्चेतना धृतिः।
एतत्क्षेत्रं समासेन सविकारमुदाहृतम्॥ ६॥

अद्य पत्रत्रयं प्रेषितम्, एकं गुरु[illegible]
[illegible]य द्वितीयं-राधेश्यामाय - तृतीयं-स[illegible]
[illegible]रोपाध्यायाय /

अमानित्वमदम्भित्वमहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥ ७ ॥
इन्द्रियार्थेषु वैराग्यमनहंकार एव च।
जन्ममृत्युजराव्याधिदुःखदोषानुदर्शनम् ॥ ८ ॥

१ अक्टूबर १९८१] सूर्योदय ५।४८ सूर्यास्त ५।४२
पं० १४ आश्विन] 1 October 1981 [भा० आश्विन ९

असक्तिरनभिष्वङ्गः पुत्रदारगृहादिषु।
नित्यं च समचित्तत्वमिष्टानिष्टोपपत्तिषु ॥ ९ ॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणी।
विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि ॥१०॥

२ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ४९ सूर्यास्त ५ । ४१
पं० १५ आश्विन] 2 October [भा० आश्विन १०

गणेशचतुर्थीव्रत

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्।
एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा॥११॥
ज्ञेयं यत्तत्प्रवक्ष्यामि यज्ज्ञात्वामृतमश्नुते।
अनादिमत्परं ब्रह्म न सत्तन्नासदुच्यते॥१२॥

सर्वतःपाणिपादं तत्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।
सर्वतः श्रुतिमल्लोके सर्वमावृत्य तिष्ठति ॥१३॥
सर्वेन्द्रियगुणाभासं सर्वेन्द्रियविवर्जितम्।
असक्तं सर्वभृच्चैव निर्गुणं गुणभोक्तृ च ॥१४॥

---

४ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५० सूर्यास्त ५ । ३८
पं० १७ आश्विन] 4 October [भा० आश्विन १२

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थं चान्तिके च तत्॥१५॥
अविभक्तं च भूतेषु विभक्तमिव च स्थितम्।
भूतभर्तृ च तज्ज्ञेयं ग्रसिष्णु प्रभविष्णु च ॥१६॥

---

५ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५० सूर्यास्त ५ । ३७
पं० १८ आश्विन] 5 October [भा० आश्विन १३

ज्योतिषामपि तज्ज्योतिस्तमसः परमुच्यते।
ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्यं हृदि सर्वस्य विष्ठितम्॥१७॥
इति क्षेत्रं तथा ज्ञानं ज्ञेयं चोक्तं समासतः।
मद्भक्त एतद् विज्ञाय मद्भावायोपपद्यते॥१८॥

६ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५१ सूर्यास्त ५।३६
पं० १९ आश्विन] 6 October [भा० आश्विन १४

श्रीदुर्गाष्टमी

विजयादशमी

२८० दिन] आश्विन शुक्ल ९ बुध [गीता

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्ध्यनादी उभावपि।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान्॥१९॥
कार्यकरणकर्तृत्वे हेतुः प्रकृतिरुच्यते।
पुरुषः सुखदुःखानां भोक्तृत्वे हेतुरुच्यते॥२०॥

७ अक्टूबर] सूर्योदय ५।५१ सूर्यास्त ५।३५

पं० २० आश्विन] 7 October [भा० आश्विन १५

महानवमीव्रत

पुरुषः प्रकृतिस्थो हि भुङ्क्ते प्रकृतिजान्गुणान्॥
कारणं गुणसङ्गोऽस्य सदसद्योनिजन्मसु ॥२१॥
उपद्रष्टानुमन्ता च भर्ता भोक्ता महेश्वरः।
परमात्मेति चाप्युक्तो देहेऽस्मिन्पुरुषः परः॥२२॥

---

८ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५२ सूर्यास्त ५ । ३४
पं० २१ आश्विन] 8 October [भा० आश्विन १६

विजयादशमी

य एवं वेत्ति पुरुषं प्रकृतिं च गुणैः सह ।
सर्वथा वर्तमानोऽपि न स भूयोऽभिजायते ॥२३॥
ध्यानेनात्मनि पश्यन्ति केचिदात्मानमात्मना ।
अन्ये सांख्येन योगेन कर्मयोगेन चापरे ॥२४॥

एकादशीव्रत

४००) रु. भारतीय राजकोषे
सञ्चितम् कृतम् ।
अ[illegible] २५००) रु. सरकारी
दीयते ।

अन्ये त्वेवमजानन्तः श्रुत्वान्येभ्य उपासते।
तेऽपि चातितरन्त्येव मृत्युं श्रुतिपरायणाः॥२५॥
यावत्संजायते किञ्चित्सत्त्वं स्थावरजङ्गमम्।
क्षेत्रक्षेत्रज्ञसंयोगात्तद्विद्धि भरतर्षभ॥२६॥

२८४ दिन] आश्विन शुक्ल १३ रवि [गीता

समं सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन्तं परमेश्वरम्।
विनश्यत्स्वविनश्यन्तं यः पश्यति स पश्यति।२७।
समं पश्यन्हि सर्वत्र समवस्थितमीश्वरम्।
न हिनस्त्यात्मनात्मानं ततो याति परां गतिम्२८

---

११ अक्टूबर] सूर्योदय ५। ५४ सूर्यास्त ५। ३१
पं० २४ आश्विन] 11 October [भा० आश्विन १९

प्रदोष

प्रकृत्यैव च कर्माणि क्रियमाणानि सर्वशः।
यः पश्यति तथात्मानमकर्तारं स पश्यति ॥२९॥
यदा भूतपृथग्भावमेकस्थमनुपश्यति।
तत एव च विस्तारं ब्रह्म संपद्यते तदा ॥३०॥

---

१२ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५४ सूर्यास्त ५ । ३०
पं० २५ आश्विन] 12 October [भा० आश्विन २०

2000/- [illegible]
[illegible] (F.D.)
[illegible]

अनादित्वान्निर्गुणत्वात्परमात्मायमव्ययः ।
शरीरस्थोऽपि कौन्तेय न करोति न लिप्यते ॥३१॥
यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ।
सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥३२॥

१३ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५५ सूर्यास्त ५ । २९
पं० २६ आश्विन] 13 October [भा० आश्विन २१

शरत्पूर्णिमा, कार्तिकस्नानारम्भ

यथा प्रकाशयत्येकः कृत्स्नं लोकमिमं रविः।
क्षेत्रं क्षेत्री तथा कृत्स्नं प्रकाशयति भारत ॥३३॥
क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवमन्तरं ज्ञानचक्षुषा।
भूतप्रकृतिमोक्षं च ये विदुर्यान्ति ते परम् ॥३४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

१४ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५६ सूर्यास्त ५ । २८
पं० २७ आश्विन] 14 October [भा० आश्विन २२

ॐ

चतुर्दशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

परं भूयः प्रवक्ष्यामि ज्ञानानां ज्ञानमुत्तमम्।
यज्ज्ञात्वा मुनयः सर्वे परां सिद्धिमितो गताः॥१॥
इदं ज्ञानमुपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः।
सर्गेऽपि नोपजायन्ते प्रलये न व्यथन्ति च॥२॥

---

१५ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५६ सूर्यास्त ५ । २७
पं० २८ आश्विन] 15 October [भा० आश्विन २३

कार्तिक कृष्ण २ गुरु

मम योनिर्महद्ब्रह्म तस्मिन्गर्भं दधाम्यहम् ।
संभवः सर्वभूतानां ततो भवति भारत ॥ ३ ॥
सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तयः संभवन्ति याः ।
तासां ब्रह्म महद्योनिरहं बीजप्रदः पिता ॥ ४ ॥

१६ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५७ सूर्यास्त ५ । २७
पं० २९ आश्विन] 16 October [भा० आश्विन २४

गणेशचतुर्थी (करवा) व्रत

१०—

२९० दिन] कार्तिक कृष्ण ४ शनि [गीता

सत्त्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसंभवाः ।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम् ॥ ५ ॥
तत्र सत्त्वं निर्मलत्वात्प्रकाशकमनामयम् ।
सुखसङ्गेन बध्नाति ज्ञानसङ्गेन चानघ ॥ ६ ॥

---

१७ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५७ सूर्यास्त ५ । २५

पं० ३० आश्विन] 17 October [भा० आश्विन २५

*

रजो रागात्मकं विद्धि तृष्णासङ्गसमुद्भवम् ।
तन्निबध्नाति कौन्तेय कर्मसङ्गेन देहिनम् ॥ ७॥
तमस्त्वज्ञानजं विद्धि मोहनं सर्वदेहिनाम् ।
प्रमादालस्यनिद्राभिस्तन्निबध्नाति भारत ॥ ८॥

---

१८ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५८ सूर्यास्त ५ । २४
पं० १का० सं० २०३८] 18 October [भा० आश्विन २६

सत्त्वं सुखे संजयति रजः कर्मणि भारत ।
ज्ञानमावृत्य तु तमः प्रमादे संजयत्युत ॥ ९ ॥
रजस्तमश्चाभिभूय सत्त्वं भवति भारत ।
रजः सत्त्वं तमश्चैव तमः सत्त्वं रजस्तथा ॥१०॥

---

१९ अक्टूबर] सूर्योदय ५ । ५८ सूर्यास्त ५ । २३
पं० २ कार्तिक] 19 October [भा० आश्विन २७

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ॥११॥
लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ ॥१२॥

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च ।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन ॥१३॥
यदा सत्त्वे प्रवृद्धे तु प्रलयं याति देहभृत् ।
तदोत्तमविदां लोकानमलान्प्रतिपद्यते ॥१४॥

रजसि प्रलयं गत्वा कर्मसङ्गिषु जायते।
तथा प्रलीनस्तमसि मूढयोनिषु जायते ॥१५॥
कर्मणः सुकृतस्याहुः सात्त्विकं निर्मलं फलम्।
रजसस्तु फलं दुःखमज्ञानं तमसः फलम् ॥१६॥

---

२२ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ० सूर्यास्त ५ । २०
पं० ५ कार्तिक] 22 October [भा० आश्विन ३०

२९६ दिन] कार्तिक कृष्ण ११ शुक्र [गीता

सत्त्वात्संजायते ज्ञानं रजसो लोभ एव च।
प्रमादमोहौ तमसो भवतोऽज्ञानमेव च ॥१७॥
ऊर्ध्वं गच्छन्ति सत्त्वस्था मध्ये तिष्ठन्ति राजसाः।
जघन्यगुणवृत्तिस्था अधो गच्छन्ति तामसाः १८

२३ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ० सूर्यास्त ५ । २०
पं० ६ कार्तिक] 23 October [भा० का० १ शक १९०२

एकादशीव्रत

नान्यं गुणेभ्यः कर्तारं यदा द्रष्टानुपश्यति ।
गुणेभ्यश्च परं वेत्ति मद्भावं सोऽधिगच्छति ।१९।
गुणानेतानतीत्य त्रीन्देही देहसमुद्भवान् ।
जन्ममृत्युजरादुःखैर्विमुक्तोऽमृतमश्नुते ॥२०॥

अर्जुन उवाच

कैर्लिङ्गैस्त्रीन्गुणानेतानतीतो भवति प्रभो ।
किमाचारः कथं चैतांस्त्रीन्गुणानतिवर्तते ॥२१॥

श्रीभगवानुवाच

प्रकाशं च प्रवृत्तिं च मोहमेव च पाण्डव ।
न द्वेष्टि संप्रवृत्तानि न निवृत्तानि काङ्क्षति ॥२२॥

---

२५ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । १ सूर्यास्त ५ । १९
पं० ८ कार्तिक] 25 October [भा० कार्तिक ३

प्रदोष, धनतेरस

उदासीनवदासीनो गुणैर्यो न विचाल्यते।
गुणा वर्तन्त इत्येव योऽवतिष्ठति नेङ्गते ॥२३॥
समदुःखसुखः स्वस्थः समलोष्टाश्मकाञ्चनः।
तुल्यप्रियाप्रियो धीरस्तुल्यनिन्दात्मसंस्तुतिः२४

२६ अक्टूबर] सूर्योदय ६।२ सूर्यास्त ५।१८
पं० ९ कार्तिक] 26 October [भा० कार्तिक ४

हनुमज्जयन्ती

३०० दिन] कार्तिक कृष्ण ३० मंगल [गीता

मानापमानयोस्तुल्यस्तुल्यो मित्रारिपक्षयोः ।
सर्वारम्भपरित्यागी गुणातीतः स उच्यते ॥२५॥
मां च योऽव्यभिचारेण भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥२६॥

२७ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ३ सूर्यास्त ५ । १७
पं० १० कार्तिक] 27 October [भा० कार्तिक ५

दीपावली

ब्रह्मणो हि प्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्य च ।
शाश्वतस्य च धर्मस्य सुखस्यैकान्तिकस्य च २७

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे गुणत्रयविभागयोगो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥१४॥

२८ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ३ सूर्यास्त ५ । १६
पं० ११ कार्तिक] 28 October [भा० कार्तिक ६

अन्नकूट, गोवर्धनपूजा

ॐ

पञ्चदशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थं प्राहुरव्ययम् ।
छन्दांसि यस्य पर्णानि यस्तं वेद स वेदवित्॥ १ ॥

अधश्चोर्ध्वं प्रसृतास्तस्य शाखा
गुणप्रवृद्धा विषयप्रवालाः ।
अधश्च मूलान्यनुसंततानि
कर्मानुबन्धीनि मनुष्यलोके ॥ २ ॥

---

२९ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ४ सूर्यास्त ५ । १५
पं० १२ कार्तिक] 29 October [भा० कार्तिक ७

कार्तिक शुक्ल २ गुरु, भ्रातृद्वितीया

न रूपमस्येह तथोपलभ्यते
नान्तो न चादिर्न च संप्रतिष्ठा ।
अश्वत्थमेनं सुविरूढमूल-
मसङ्गशस्त्रेण दृढेन छित्त्वा ॥ ३॥

३०४ दिन] कार्तिक शुक्ल ४ शनि [गीता

ततः पदं तत्परिमार्गितव्यं

यस्मिन्गता न निवर्तन्ति भूयः ।

तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये

यतः प्रवृत्तिः प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥

३१ अक्टूबर] सूर्योदय ६ । ६ सूर्यास्त ५ । १३

पं० १४ कार्तिक] 31 October [भा० कार्तिक ९

गणेशचतुर्थीव्रत

निर्मानमोहा जितसङ्गदोषा
अध्यात्मनित्या विनिवृत्तकामाः।
द्वन्द्वैर्विमुक्ताः सुखदुःखसंज्ञै-
र्गच्छन्त्यमूढाः पदमव्ययं तत् ॥ ५ ॥

न तद्भासयते सूर्यो न शशाङ्को न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ ६ ॥
ममैवांशो जीवलोके जीवभूतः सनातनः।
मनःषष्ठानीन्द्रियाणि प्रकृतिस्थानि कर्षति ॥ ७ ॥

---

२ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ७ सूर्यास्त ५ । १२
पं० १६ कार्तिक] 2 November [भा० कार्तिक ११

शरीरं यदवाप्नोति यच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ।
गृहीत्वैतानि संयाति वायुर्गन्धानिवाशयात्॥८॥
श्रोत्रं चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च।
अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते ॥ ९ ॥

---

२ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ८ सूर्यास्त ५ । ११
पं० १७ कार्तिक] 3 November [भा० कार्तिक १२

उत्क्रामन्तं स्थितं वापि भुञ्जानं वा गुणान्वितम्।
विमूढा नानुपश्यन्ति पश्यन्ति ज्ञानचक्षुषः॥१०॥
यतन्तो योगिनश्चैनं पश्यन्त्यात्मन्यवस्थितम्।
यतन्तोऽप्यकृतात्मानो नैनं पश्यन्त्यचेतसः।११।

४ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ९ सूर्यास्त ५ । ११

पं० १८ कार्तिक]4 November[भा० कार्तिक १३

अ० १५] कार्तिक शुक्ल ८ गुरु [दिन ३०९

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम्।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम्॥१२॥
गामाविश्य च भूतानि धारयाम्यहमोजसा।
पुष्णामि चौषधीः सर्वाः सोमो भूत्वा रसात्मकः॥

५ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ९ सूर्यास्त ५ । १०

पं० १९ कार्तिक] 5 November [भा० कार्तिक १४

गोपाष्टमी

अहं वैश्वानरो भूत्वा प्राणिनां देहमाश्रितः।
प्राणापानसमायुक्तःपचाम्यन्नंचतुर्विधम्॥१४॥
सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं च।
वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यो
वेदान्तकृद्वेदविदेव चाहम्॥१५॥

अक्षयनवमी

द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षर उच्यते॥१६॥
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः।
यो लोकत्रयमाविश्य बिभर्त्यव्यय ईश्वरः॥१७॥

यस्मात्क्षरमतीतोऽहमक्षरादपि चोत्तमः।
अतोऽस्मि लोके वेदे च प्रथितः पुरुषोत्तमः॥१८॥
यो मामेवमसंमूढो जानाति पुरुषोत्तमम्।
स सर्वविद्भजति मां सर्वभावेन भारत ॥१९॥

---

८ नवम्बर] सूर्योदय ६ । ११ सूर्यास्त ५ । ९
पं० २२ कार्तिक] 8 November [भा० कार्तिक १७

प्रबोधिनी एकादशीव्रत

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ।
एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत २०

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नाम पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

९ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १२ सूर्यास्त ५ । ८
पं० २३ कार्तिक] 9 November [भा० कार्तिक १८

सोमप्रदोष

ॐ

षोडशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥ १ ॥
अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥ २ ॥

---

१० नवम्बर] सूर्योदय ६ । १२ सूर्यास्त ५ । ८
पं० २४ कार्तिक] 10 November [भा० कार्तिक १९

कार्तिक शुक्ल १३ मंगल, वैकुण्ठचतुर्दशी

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहो नातिमानिता।
भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत॥ ३॥
दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च।
अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम्॥ ४॥

---

११ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १३ सूर्यास्त ५ । ७
पं० २५ कार्तिक] 11 November [भा० कार्तिक २०

कार्तिकीपूर्णिमा

दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।
मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥ ५ ॥
द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च ।
दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥ ६ ॥

१२ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १३ सूर्यास्त ५ । ६
पं० २६ कार्तिक] 12 November [भा० कार्तिक २१

प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च जना न विदुरासुराः।
न शौचं नापि चाचारो न सत्यं तेषु विद्यते ॥ ७ ॥
असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम्।
अपरस्परसंभूतं किमन्यत्कामहैतुकम् ॥ ८ ॥

१३ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १४ सूर्यास्त ५ । ६
पं० २७ कार्तिक] 13 November [भा० कार्तिक २२

एतां दृष्टिमवष्टभ्य नष्टात्मानोऽल्पबुद्धयः।
प्रभवन्त्युग्रकर्माणः क्षयाय जगतोऽहिताः ॥ ९ ॥
काममाश्रित्य दुष्पूरं दम्भमानमदान्विताः।
मोहाद् गृहीत्वासद्ग्राहान्प्रवर्तन्तेऽशुचिव्रताः१०

१४ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १५ सूर्यास्त ५ । ६
पं० २८ कार्तिक] 14 November [भा० कार्तिक २३

चिन्तामपरिमेयां च प्रलयान्तामुपाश्रिताः।
कामोपभोगपरमा एतावदिति निश्चिताः ॥११॥
आशापाशशतैर्बद्धाः कामक्रोधपरायणाः।
ईहन्ते कामभोगार्थमन्यायेनार्थसंचयान् ॥१२॥

१५ नवम्बर] सूर्योदय ६।१६ सूर्यास्त ५।५
पं० २९ कार्तिक] 15 November [भा० कार्तिक २४

गणेशचतुर्थीव्रत

इदमद्य मया लब्धमिमं प्राप्स्ये मनोरथम्।
इदमस्तीदमपि मे भविष्यति पुनर्धनम्॥१३॥
असौ मया हतः शत्रुर्हनिष्ये चापरानपि।
ईश्वरोऽहमहं भोगी सिद्धोऽहं बलवान्सुखी॥१४॥

१६ नवम्बर] सूर्योदय ६।१६ सूर्यास्त ५।५
पं० ३० कार्तिक] 16 November [भा० कार्तिक २५

आढ्योऽभिजनवानस्मि कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया
यक्ष्ये दास्यामि मोदिष्य इत्यज्ञानविमोहिताः १५
अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजालसमावृताः ।
प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेऽशुचौ ॥१६॥

१७ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १७ सूर्यास्त ५ । ५
पं० १मार्गं०सं० २०३८] 17 November [भा०का०२६

आत्मसंभाविताः स्तब्धा धनमानमदान्विताः ।
यजन्ते नामयज्ञैस्ते दम्भेनाविधिपूर्वकम् ॥१७॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं च संश्रिताः ।
मामात्मपरदेहेषु प्रद्विषन्तोऽभ्यसूयकाः ॥१८॥

---

१८ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १८ सूर्यास्त ५ । ४
पं० २ मार्गशीर्ष] 18 November [भा०कार्तिक २७

*

तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान् ।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥१९॥
आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि ।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ॥२०॥

१९ नवम्बर] सूर्योदय ६ । १९ सूर्यास्त ५ । ४
पं० ३ मार्गशीर्ष] 19 November [भा० कार्तिक २८

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः ।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्रयं त्यजेत्॥२१॥
एतैर्विमुक्तः कौन्तेय तमोद्वारैस्त्रिभिर्नरः ।
आचरत्यात्मनः श्रेयस्ततो याति परां गतिम्॥२२॥

यः शास्त्रविधिमुत्सृज्य वर्तते कामकारतः ।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम् २३
तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ ।
ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥२४॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे दैवासुरसंपद्विभागयोगो नाम षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

ॐ

सप्तदशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

ये शास्त्रविधिमुत्सृज्य यजन्ते श्रद्धयान्विताः ।
तेषां निष्ठा तु का कृष्ण सत्त्वमाहो रजस्तमः ॥१॥

श्रीभगवानुवाच

त्रिविधा भवति श्रद्धा देहिनां सा स्वभावजा ।
सात्त्विकी राजसी चैव तामसी चेति तां शृणु ।२।

२२ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २१ सूर्यास्त ५ । ३
पं०६ मार्ग०]22 November[भा० मार्ग० १शक१९०२

मार्गशीर्ष कृष्ण ११ रवि, एकादशीव्रत

अ० १७] मार्गशीर्ष कृष्ण १२ सोम [दिन ३२७

सत्त्वानुरूपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः॥ ३ ॥
यजन्ते सात्त्विका देवान्यक्षरक्षांसि राजसाः।
प्रेतान्भूतगणांश्चान्ये यजन्ते तामसा जनाः॥ ४ ॥

२३ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २२ सूर्यास्त ५ । ३
पं० ७ मार्गशीर्ष] 23 November [भा० मार्ग० २

सोमप्रदोष

रात्रि की श्रम: समाप्त हुरे।

अशास्त्रविहितं घोरं तप्यन्ते ये तपो जनाः ।
दम्भाहंकारसंयुक्ताः कामरागबलान्विताः ॥ ५ ॥
कर्षयन्तः शरीरस्थं भूतग्राममचेतसः ।
मां चैवान्तःशरीरस्थं तान्विद्ध्यासुरनिश्चयान् ६

आहारस्त्वपि सर्वस्य त्रिविधो भवति प्रियः।
यज्ञस्तपस्तथा दानं तेषां भेदमिमं शृणु ॥ ७ ॥
आयुःसत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्याःस्निग्धाःस्थिरा हृद्या आहाराःसात्त्विकप्रियाः

कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः ॥ ९ ॥
यातयामं गतरसं पूति पर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपि चामेध्यं भोजनं तामसप्रियम् ॥१०॥

---

२६ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २४ सूर्यास्त ५ । २
पं० १० मार्ग०] 26 November [भा० मार्ग० ५

अमावास्या

अफलाकाङ्क्षिभिर्यज्ञो विधिदृष्टो य इज्यते ।
यष्टव्यमेवेति मनः समाधाय स सात्त्विकः ॥११॥
अभिसंधाय तु फलं दम्भार्थमपि चैव यत् ।
इज्यते भरतश्रेष्ठ तं यज्ञं विद्धि राजसम् ॥१२॥

---

२७ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २६ सूर्यास्त ५ । २
पं० ११ मार्ग०] 27 November [भा० मार्ग० ६

अखिल भारतीय राज्याचे कोश 200
रु० मागितले ।

३३२ दिन] मार्गशीर्ष शुक्ल २ शनि [गीता

विधिहीनमसृष्टान्नं मन्त्रहीनमदक्षिणम् ।
श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते ॥१३॥
देवद्विजगुरुप्राज्ञपूजनं शौचमार्जवम् ।
ब्रह्मचर्यमहिंसा च शारीरं तप उच्यते ॥१४॥

---

२८ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २६ सूर्यास्त ५ । २
पं० १२ मार्ग०] 28 November [भा० मार्ग० ७

अनुद्वेगकरं वाक्यं सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव वाङ्मयं तप उच्यते ॥१५॥
मनः प्रसादः सौम्यत्वं मौनमात्मविनिग्रहः ।
भावसंशुद्धिरित्येतत्तपो मानसमुच्यते ॥१६॥

२९ नवम्बर] सूर्योदय ६ । २७ सूर्यास्त ५ । ३
पं० १३ मार्गं०] 29 November [भा० मार्गं० ८

३३४ दिन] मार्गशीर्ष शुक्ल ४ सोम [गीता

श्रद्धया परया तप्तं तपस्तत्त्रिविधं नरैः ।
अफलाकाङ्क्षिभिर्युक्तैः सात्त्विकं परिचक्षते ॥१७॥
सत्कारमानपूजार्थं तपो दम्भेन चैव यत् ।
क्रियते तदिह प्रोक्तं राजसं चलमध्रुवम् ॥१८॥

---

३० नवम्बर] सूर्योदय ६ । २८ सूर्यास्त ५ । ३

पं० १४ मार्ग०]30 November [भा० मार्ग० ९

गणेशचतुर्थीव्रत

अं० १७] मार्गशीर्ष शुक्ल ५ मंगल [दिन ३३५

मूढग्राहेणात्मनो यत्पीडया क्रियते तपः ।
परस्योत्सादनार्थं वा तत्तामसमुदाहृतम् ॥१९॥
दातव्यमिति यद्दानं दीयतेऽनुपकारिणे ।
देशे काले च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् २०

---

१ दिसम्बर १९८१] सूर्योदय ६ । २८ सूर्यास्त ५ । ३
पं० १५ मार्ग०] 1 December 1981 [भा० मार्ग० १०

अ० भारतीय राजाधिकोंवे २००/ का०
सञ्चालन । कुलयोग चतुर्वेशास्त्रीये
जनरलमा/ 9281 . . . :

यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दिश्य वा पुनः ।
दीयते च परिक्लिष्टं तद्दानं राजसं स्मृतम् ।२१।
अदेशकाले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ।
असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥

---

२ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । २९ सूर्यास्त ५ । ३
पं० १६ मार्ग०] 2 December [भा० मार्ग० ११

अद्य मध्याह्ने काशी प्रस्थितोऽहम् ।
[illegible] - 2100
[illegible] - 2150
[illegible] - 0165
काशी - 3900
[illegible]
~~[illegible] - [illegible]~~

[illegible]

K K Sharma

अ० १७] मार्गशीर्ष शुक्ल ७ गुरु [दिन ३३७

ॐतत्सदिति निर्देशो ब्रह्मणस्त्रिविधः स्मृतः।
ब्राह्मणास्तेन वेदाश्च यज्ञाश्च विहिताः पुरा॥२३॥
तस्मादोमित्युदाहृत्य यज्ञदानतपःक्रियाः।
प्रवर्तन्ते विधानोक्ताः सततं ब्रह्मवादिनाम्॥२४॥

---

३ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । २९ सूर्यास्त ५ । ३

पं० १७ मार्ग०] 3 December [भा० मार्ग० १२

रिक्शा — 2|00
[illegible] 0|30
2 [illegible] — 0|20
[illegible] — 0|20
जीरा — 0|25

अद्य आचार्य श्री [illegible] पत्रं प्राप्तम्

रात्रि विश्रामो [illegible] कार्यं
[illegible]

तदित्यनभिसंधाय फलं यज्ञतपःक्रियाः।
दानक्रियाश्च विविधाः क्रियन्ते मोक्षकाङ्क्षिभिः२५
सद्भावे साधुभावे च सदित्येतत्प्रयुज्यते ।
प्रशस्ते कर्मणि तथा सच्छब्दः पार्थ युज्यते ॥२६॥

[illegible]

यज्ञे तपसि दाने च स्थितिः सदिति चोच्यते।
कर्म चैव तदर्थीयं सदित्येवाभिधीयते॥२७॥
अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्।
असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह॥२८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां
योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रद्धात्रयविभाग-
योगो नाम सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥

---

५ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ३१ सूर्यास्त ५ । ३
पं० १९ मार्ग०] 5 December [भा० मार्ग० १४

अद्य [illegible] चरित्र [illegible]
च [illegible]
संस्कृत महाविद्यालये [illegible]
तत्र च प्रवेशो नीतः।

[illegible]

ॐ

अष्टादशोऽध्यायः

अर्जुन उवाच

संन्यासस्य महाबाहो तत्त्वमिच्छामि वेदितुम्।
त्यागस्य च हृषीकेश पृथक्केशिनिषूदन ॥ १ ॥

श्रीभगवानुवाच

काम्यानां कर्मणां न्यासं संन्यासं कवयो विदुः।
सर्वकर्मफलत्यागं प्राहुस्त्यागं विचक्षणाः ॥ २ ॥
त्याज्यं दोषवदित्येके कर्म प्राहुर्मनीषिणः।
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यमिति चापरे ॥ ३ ॥

६ दिसम्बर] सूर्योदय ६। ३१ सूर्यास्त ५। ३
पं० २० मार्ग०] 6 December [भा० मार्ग० १५

मार्गशीर्ष शुक्ल १० रवि

त्रिवेणी शर्मा मुगलसराय

आदि पत्नी द्रुप शेष पितृश्री भ्रातुश्च नरेश प्रति

अ० १८] मार्गशीर्ष शुक्ल ११ सोम [दिन ३४१

निश्चयं श्रृणु मे तत्र त्यागे भरतसत्तम।
त्यागो हि पुरुषव्याघ्र त्रिविधः संप्रकीर्तितः॥ ४॥
यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्।
यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्॥ ५॥
एतान्यपि तु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा फलानि च।
कर्तव्यानीति मे पार्थ निश्चितं मतमुत्तमम्॥ ६॥

७ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ३२ सूर्यास्त ५ । ३
पं० २१ मार्ग०] 7 December [भा० मार्ग० १६

एकादशीव्रत, गीताजयन्ती

रात्रि विश्राम: काश्याम्

नियतस्य तु संन्यासः कर्मणो नोपपद्यते ।
मोहात्तस्य परित्यागस्तामसः परिकीर्तितः ॥ ७ ॥
दुःखमित्येव यत्कर्म कायक्लेशभयात्त्यजेत् ।
स कृत्वा राजसं त्यागं नैव त्यागफलं लभेत् ॥ ८ ॥
कार्यमित्येव यत्कर्म नियतं क्रियतेऽर्जुन ।
सङ्गं त्यक्त्वा फलं चैव स त्यागः सात्त्विको मतः ॥

...धूम्र-चूर्णम् – १।-६०'
...र्षपतैल — ३।१०
...ूर्यप्रकाश... -२।६५.

गुरुवे प्रजापतये नमः

अ० १८] मार्गशीर्ष शुक्ल १३ बुध [दिन ३४३

न द्वेष्ट्यकुशलं कर्म कुशले नानुषज्जते।
त्यागी सत्त्वसमाविष्टो मेधावी छिन्नसंशयः॥१०॥
न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।
यस्तु कर्मफलत्यागी स त्यागीत्यभिधीयते॥११॥
अनिष्टमिष्टं मिश्रं च त्रिविधं कर्मणः फलम्।
भवत्यत्यागिनां प्रेत्य न तु संन्यासिनां क्वचित्॥१२

---

९ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ३३ सूर्यास्त ५ । ३
पं० २३ मार्ग०] 9 December [भा० मार्ग० १८

गोधूम — १८।५० V
जिष्टजन — १।५० V
जीरकम — १।०० V
हरिद्रा — ०।६० V
स्नान — ०।२० V
— १।०० V
आलूकं — ०।२५ K
अलाबु — ०।२० V
...कमोडिकम — ०।२० V
...औरम — ०।०५ K
दन्तधावनं — ०।२०

प्रदोष औंड्रिमक जकामी ...
वि ग्नायप्रदनाम
अद्य कैंधा मनोव्य
जपं प्रारभते

पञ्चैतानि महाबाहो कारणानि निबोध मे।
सांख्ये कृतान्ते प्रोक्तानि सिद्धये सर्वकर्मणाम्॥
अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम्।
विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चैवात्र पञ्चमम्॥१४॥
शरीरवाङ्मनोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः।
न्याय्यं वा विपरीतं वा पञ्चैते तस्य हेतवः॥१५॥

व्रतकी पूर्णिमा

डुला: -२८।००S.
की ड्रिप्स -२२।५० V.
काग -००।५० S
डिब्बा -००। S.
यकआईक -००।४० V.

तत्रैवं सति कर्तारमात्मानं केवलं तु यः।
पश्यत्यकृतबुद्धित्वान्न स पश्यति दुर्मतिः॥१६॥
यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिर्यस्य न लिप्यते।
हत्वापि स इमाँल्लोकान्न हन्ति न निबध्यते॥१७॥
ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना।
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसंग्रहः॥१८॥

---

११ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ३४ सूर्यास्त ५ । ४
पं० २५ मार्ग०] 11 December [भा० मार्ग० २०

स्नान-दानादि-पूर्णिमा

पौष कृष्ण १शनि वि० सं० २०३८ श्रीकृष्ण-सं० ५२०७

ज्ञानं कर्म च कर्ता च त्रिधैव गुणभेदतः।
प्रोच्यते गुणसंख्याने यथावच्छृणु तान्यपि ॥१९॥
सर्वभूतेषु येनैकं भावमव्ययमीक्षते।
अविभक्तं विभक्तेषु तज्ज्ञानं विद्धि सात्त्विकम् २०
पृथक्त्वेन तु यज्ज्ञानं नानाभावान्पृथग्विधान्।
वेत्ति सर्वेषु भूतेषु तज्ज्ञानं विद्धि राजसम् ॥२१॥

१२ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ३५ सूर्यास्त ५ । ५
पं० २६ मार्ग०] 12 December [भा० मार्ग० २१

...ल्यांक - ००१४५ V
...तांक — ००१३० V
...न्यांक — ००१२० V
...लूक — ११०० R
...ताक - ०१२० R
...णी — ०१६० R
...फी: — ०१५०

यत्तु कृत्स्नवदेकस्मिन्कार्ये सक्तमहैतुकम्।
अतत्त्वार्थवदल्पं च तत्तामसमुदाहृतम् ॥२२॥
नियतं सङ्गरहितमरागद्वेषतः कृतम्।
अफलप्रेप्सुना कर्म यत्तत्सात्त्विकमुच्यते ॥२३॥
यत्तु कामेप्सुना कर्म साहंकारेण वा पुनः।
क्रियते बहुलायासं तद्राजसमुदाहृतम् ॥२४॥

स्कॉर्न - 001805.

३४८ दिन] पौष कृष्ण ३ सोम [गीता

अनुबन्धं क्षयं हिंसामनवेक्ष्य च पौरुषम्।
मोहादारभ्यते कर्म यत्तत्तामसमुच्यते॥२५॥
मुक्तसङ्गोऽनहंवादी धृत्युत्साहसमन्वितः।
सिद्ध्यसिद्ध्योर्निर्विकारः कर्ता सात्त्विक उच्यते
रागी कर्मफलप्रेप्सुर्लुब्धो हिंसात्मकोऽशुचिः।
हर्षशोकान्वितः कर्ता राजसः परिकीर्तितः॥२७॥

---

१४ दिसम्बर] सूर्योदय ६।३६ सूर्यास्त ५।५
पं० २८ मार्गं०] 14 December [भा० मार्गं० २३

गणेशचतुर्थीव्रत।

...गजनवराही
...यवैले चर्ल - ६।००
...राधनी - १।२५
...न्याई — ०।०५
...क्माधेनामह - ०।२५
...कान्ता आवाहन ?।००
...आसादन — १।००
...कालापिता — ०।६०
...नामचरित्र — १।२५
...ताकचरित्र — ०।१०

अलौकी — ०।८०V.
अंगारक — ६।००V.

अयुक्तः प्राकृतः स्तब्धः शठो नैष्कृतिकोऽलसः।
विषादी दीर्घसूत्री च कर्ता तामस उच्यते ॥२८॥
बुद्धेर्भेदं धृतेश्चैव गुणतस्त्रिविधं शृणु।
प्रोच्यमानमशेषेण पृथक्त्वेन धनंजय ॥२९॥
प्रवृत्तिं च निवृत्तिं च कार्याकार्ये भयाभये।
बन्धं मोक्षं च या वेत्ति बुद्धिः सा पार्थ सात्त्विकी॥

गोलियाँ - [illegible] K
[illegible] — [illegible] K.
बृहत्[illegible] - [illegible]
[illegible] — [illegible]
[illegible] — [illegible] K

यया धर्ममधर्मं च कार्यं चाकार्यमेव च।
अयथावत्प्रजानाति बुद्धिः सा पार्थ राजसी॥ ३१॥
अधर्मं धर्ममिति या मन्यते तमसावृता।
सर्वार्थान्विपरीतांश्च बुद्धिः सा पार्थ तामसी॥ ३२॥
धृत्या यया धारयते मनःप्राणेन्द्रियक्रियाः।
योगेनाव्यभिचारिण्या धृतिः सा पार्थ सात्त्विकी॥

[illegible] — ०५।४०
[illegible] — ०।१०
[illegible] — ०।२०

यया तु धर्मकामार्थान्धृत्या धारयतेऽर्जुन ।
प्रसङ्गेन फलाकाङ्क्षी धृतिः सा पार्थ राजसी॥ ३४॥
यया स्वप्नं भयं शोकं विषादं मदमेव च ।
न विमुञ्चति दुर्मेधा धृतिः सा पार्थ तामसी॥ ३५॥
सुखं त्विदानीं त्रिविधं शृणु मे भरतर्षभ ।
अभ्यासाद्रमते यत्र दुःखान्तं च निगच्छति ॥ ३६॥

यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् ।
तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम् ।३७।
विषयेन्द्रियसंयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम् ।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम् ॥३८॥
यदग्रे चानुबन्धे च सुखं मोहनमात्मनः ।
निद्रालस्यप्रमादोत्थं तत्तामसमुदाहृतम् ॥३९॥

अंजा वू - ००।२० S गीता दैनंदिनी १।७५
जीरे — ००।५० S १०/- रु. निजार्थ प्रदत्त
कश्मीरी — ००।३० S
धूम — २।०० K
पिठान — १।५० S
गीता दैनंदिनी - २।७५
तिल तैल — १०।००

न तदस्ति पृथिव्यां वा दिवि देवेषु वा पुनः।
सत्त्वं प्रकृतिजैर्मुक्तं यदेभिः स्यात्त्रिभिर्गुणैः ॥४०॥
ब्राह्मणक्षत्रियविशां शूद्राणां च परंतप ।
कर्माणि प्रविभक्तानि स्वभावप्रभवैर्गुणैः ॥४१॥
शमो दमस्तपः शौचं क्षान्तिरार्जवमेव च ।
ज्ञानं विज्ञानमास्तिक्यं ब्रह्मकर्म स्वभावजम् ॥४२॥

S·V
[illegible] - १२ — ०।५०S [illegible] -२= ९।५०
[illegible] — ०।५०S [illegible] -२।२०
[illegible] ।५० [illegible] -२।५०
[illegible] ।२०
[illegible] — ०।३०S

शौर्यं तेजो धृतिर्दाक्ष्यं युद्धे चाप्यपलायनम्।
दानमीश्वरभावश्च क्षात्रं कर्म स्वभावजम् ॥४३॥
कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यं वैश्यकर्म स्वभावजम्।
परिचर्यात्मकं कर्म शूद्रस्यापि स्वभावजम् ॥४४॥
स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।
स्वकर्मनिरतः सिद्धिं यथा विन्दति तच्छृणु॥४५॥

---

२० दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४० सूर्यास्त ५ । ७
पं० ५ पौष] 20 December [भा० मार्गशीर्ष २९

[illegible] — ००१३५K
[illegible] — ०१४०K
[illegible] — ०१२०K
[illegible] — ०११५K
[illegible] — ०४६५K

अ० १८] पौष कृष्ण ११ सोम [दिन ३५५

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः॥४६॥
श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।
स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम्॥४७॥
सहजं कर्म कौन्तेय सदोषमपि न त्यजेत्।
सर्वारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिवावृताः॥४८॥

---

२१ दिसम्बर] सूर्योदय ६।४१ सूर्यास्त ५।८
पं० ६ पौष] 21 December [भा० मार्गशीर्ष ३०

[illegible] - 0-125 V.
[illegible] — 0-110 V.
[illegible] — 0-125 K.
[illegible] - 0-125 K.

असक्तबुद्धिः सर्वत्र जितात्मा विगतस्पृहः।
नैष्कर्म्यसिद्धिं परमां संन्यासेनाधिगच्छति।४९।
सिद्धिं प्राप्तो यथा ब्रह्म तथाप्नोति निबोध मे।
समासेनैव कौन्तेय निष्ठा ज्ञानस्य या परा ॥५०॥
बुद्ध्या विशुद्धया युक्तो धृत्यात्मानं नियम्य च।
शब्दादीन्विषयांस्त्यक्त्वा रागद्वेषौ व्युदस्य च॥

२२ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४१ सूर्यास्त ५ । ८
पं० ७पौष] 22 December[भा० पौष१शक १९०३

[illegible] — [illegible] एकादशीव्रत
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

विविक्तसेवी लघ्वाशी यतवाक्कायमानसः।
ध्यानयोगपरो नित्यं वैराग्यं समुपाश्रितः ॥५२॥
अहंकारं बलं दर्पं कामं क्रोधं परिग्रहम्।
विमुच्य निर्ममः शान्तो ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥५३॥
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न काङ्क्षति।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥५४॥

---

२३ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । ९
पं० ८ पौष] 23 December [भा० पौष २

प्रदोष

प्रारं - ९।००K
दुंग्दं - २।००K
,, — २।००
छ्याचे - २।२०S
आई स्वामी - ०।२०S.
अंगारक — २०।१०S
,, — ७।२०K
,, — ०।६० V.

भक्त्या मामभिजानाति यावान्यश्चास्मि तत्त्वतः।
ततो मां तत्त्वतो ज्ञात्वा विशते तदनन्तरम्॥५५॥
सर्वकर्माण्यपि सदा कुर्वाणो मद्व्यपाश्रयः।
मत्प्रसादादवाप्नोति शाश्वतं पदमव्ययम्॥५६॥
चेतसा सर्वकर्माणि मयि संन्यस्य मत्परः।
बुद्धियोगमुपाश्रित्य मच्चित्तः सततं भव॥५७॥

[illegible], -१५० मासशिवरात्रि
[illegible]रवं, -२।००
[illegible]रबातिक -०।६५
[illegible] -०।१५
[illegible] -०।१५

मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि ।
अथ चेत्त्वमहंकारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि ॥५८॥
यदहंकारमाश्रित्य न योत्स्य इति मन्यसे ।
मिथ्यैष व्यवसायस्ते प्रकृतिस्त्वां नियोक्ष्यति५९
स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा ।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात्करिष्यस्यवशोऽपि तत् ॥

---

२५ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । १०
पं० १० पौष] 25 December [भा० पौष ४

नार्जपतैलम् - ३।००K
रत्नांगं — ०।४०
जोगीह्वा — ०।५०K
शूलकम् — ०।२०K
दन्तधावन — ०।३०K
मरिचं — ०।२५K
धान्यकं — ०।२०K
पादुकाशोधन - ०।१५

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ॥६१॥
तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारत ।
तत्प्रसादात्परां शान्तिं स्थानं प्राप्स्यसि शाश्वतम्
इति ते ज्ञानमाख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं मया ।
विमृश्यैतदशेषेण यथेच्छसि तथा कुरु ॥६३॥

---

२६ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४२ सूर्यास्त ५ । १०
पं० ११ पौष] 26 December [भा० पौष ५

[illegible] – ५६।६०
[illegible] – २६।५०
[illegible] – ००।६५
[illegible] – ००।६५
[illegible] – ००।५०
[illegible] – ०।२०
[illegible] – ०।२०

सर्वगुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः।
इष्टोऽसि मे दृढमिति ततो वक्ष्यामि ते हितम् ६४
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु।
मामेवैष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ६५
सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।६६।

ओलैलो—००१८०

इदं ते नातपस्काय नाभक्ताय कदाचन ।
न चाशुश्रूषवे वाच्यं न च मां योऽभ्यसूयति ।६७।
य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः ॥६८॥
न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ॥६९॥

---

२८ दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४३ सूर्यास्त ५ । ११
पं० १३ पौष] 28 December [भा० पौष ७

[illegible]न्तधा[illegible] — ०।३० K
[illegible] — ०।३० K
[illegible]जिर — ०।४० K
[illegible]मीर — ०।२७ K
[illegible] — ०।४० S
[illegible]कडा — ०।३० S
[illegible]रकार — ०।६० K

अध्येष्यते च य इमं धर्म्यं संवादमावयोः ।
ज्ञानयज्ञेन तेनाहमिष्टः स्यामिति मे मतिः ॥७०॥
श्रद्धावाननसूयश्च शृणुयादपि यो नरः ।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात्पुण्यकर्मणाम्
कच्चिदेतच्छ्रुतं पार्थ त्वयैकाग्रेण चेतसा ।
कच्चिदज्ञानसंमोहः प्रनष्टस्ते धनंजय ॥७२॥

गाजरं — ००।२५ऽ
अलाबू — ००।५०ऽ
[illegible] — ००।३०ऽ
[illegible] — ००।१०ऽ
[illegible] — ४८=०
[illegible] — १।२०
तिलकुट — १०=०

रात्रि विश्राम : [illegible]
[illegible]

अर्जुन उवाच

नष्टो मोहः स्मृतिर्लब्धा त्वत्प्रसादान्मयाच्युत ।
स्थितोऽस्मि गतसन्देहः करिष्ये वचनं तव ॥७३॥

संजय उवाच

इत्यहं वासुदेवस्य पार्थस्य च महात्मनः ।
संवादमिममश्रौषमद्भुतं रोमहर्षणम् ॥७४॥
व्यासप्रसादाच्छ्रुतवानेतद्गुह्यमहं परम् ।
योगं योगेश्वरात्कृष्णात्साक्षात्कथयनः स्वयम ॥

३० दिसम्बर] सूर्योदय ६ । ४५ सूर्यास्त ५ । १२
पं० १५ पौष] 30 December [भा० पौष ९

गणेशचतुर्थीव्रत

राजन्संस्मृत्य संस्मृत्य संवादमिममद्भुतम् ।
केशवार्जुनयोः पुण्यं हृष्यामि च मुहुर्मुहुः ॥७६॥
तच्च संस्मृत्य संस्मृत्य रूपमत्यद्भुतं हरेः ।
विस्मयो मे महान्राजन्हृष्यामि च पुनः पुनः ७७
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥७८॥

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे मोक्षसंन्यासयोगो नामाष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

Laxmi Narayan Shastri, Radhakrishna temple
Khoti Suvari P.-Sar Mathura, Bharatpur
C/o Ram Swaroop Shukla ka Hotle by
Sar Mathura, Bharatpura (Rajasthan)

स्मरण-पत्र

Shri Ramautar Sharma
77A Sarojani Park (Neer-Nala) Shastri Nagar (Neer Khureje) Delhi 51

Shri Garib-Ram Sharma
R39A Maudal Town
Delhi

Shri Devendra Kumar Tivari
425 Jelivara, Shahadara
Delhi 32

S. A.B. Sharma (Income Tax Inspector)
45 Rishi Nivas
India Katara, Agara

R.C. Sharma, O.N.G.C.
Residency Road
Jodhapur (Rajsthan)

Shri G.K. Sharma (Supply In.)
C/o K. S. Pandey
Near Jain temple

Sadhu Bela Udasen Ashram
18 A, Bhula Bhai Desai Road,
Bomby-26

Mani lal Sonmauipadhya
2318 mangala Gauri Kas

स्मरण-पत्र

स्मरण-पत्र

2/26